बासमती

(एक समाजकर्मी की आत्मकथा)

कृष्ण कुमार कश्यप

(फोटो : १९९७)

बासमती

(एक समाजकर्मी की आत्मकथा)

लेखक :

कृष्ण कुमार कश्यप

प्रकाशक :

भारती विकास मंच, बरहेता

लहेरिया सराय, दरभंगा–846001

प्रकाशक :

भारती विकास मंच, बरहेता, लहेरिया सराय, दरभंगा – 846001 बिहार

कॉपी राइट : कृष्ण कुमार कश्यप और शशिबाला

चित्र–सज्जा : श्रीमती शशिबाला

प्रकाशन वर्ष : जून,2018

लेखक से संपर्क :
(मोबा) 99 31 66 59 39
e-mail : kashyapkk15@gmail.com
www.kashyapartschool.wordpress.com

मूल्य : ~~भाट~~ सौ रुपए मात्र 400/

प्राप्ति–स्थान :

(1) स्टेशनरी सेन्टर, भगतसिंह चौक, लालबाग, दरभंगा –846004;
(मो) 933 42 488 70
(2) प्रज्ञा ट्रस्ट, वाराणसी, उत्तर प्रदेश;
(मो) 9956547065
(3) भारती विकास मंच, बरहेता : मो 9931066939

मुद्रक:

सुरभि प्रिन्टर्स
सी. 27 / 273–पी, इंडियन प्रेस कालोनी
मलदहिया, वाराणसी–221002 (भारत)

BASMATI : Ek Samajkarmi ki Aatmakatha (Hindi)

By : Krishna Kumar Kashyap & Shashibala

बासमती को
समर्पित :

तू दलितों की वाणी,
तू बेटी धरती की;
उन्नत तेरा भाल,
कुसुम–कलिका परती की !

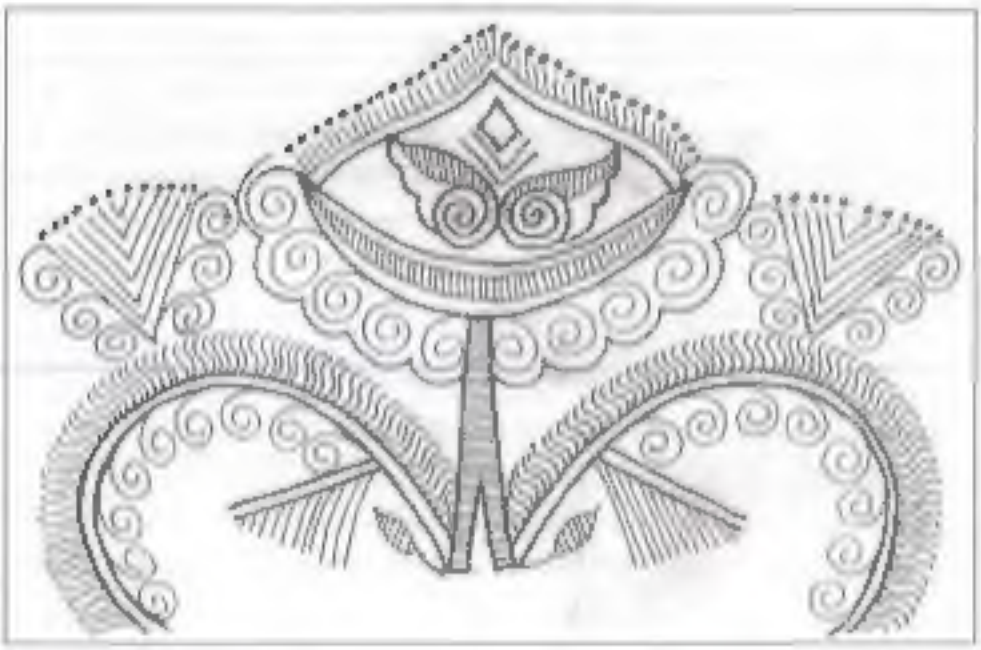

भूमिका

विगत दो दशकों से हिंदी साहित्य में दलित-विमर्श अपने नवीन आयाम के साथ उपस्थित हुआ है। प्रारंभ से अबतक इस साहित्य में आत्मकथात्मक शैली की प्रमुखता रही है। अर्थात दलित-लेखक उत्पीड़न, संत्रास एवं सामाजिक विडम्बनाओं को आत्मकथा के रूप में प्रस्तुत करते रहे हैं। व्यथा-कथा को व्यक्त करने के लिए संस्मरणात्मक साहित्य भी इसी की एक कड़ी है। दलित साहित्यकार समाज से, व्यक्ति से सीधा संवाद करता है। यह संवाद उस समय और अधिक जीवंत हो जाता है जब लेखक समाज में व्याप्त अभाव को दूर करने हेतु कुछ नूतन और स्थायी प्रयोग करता है और उन प्रयोगों के मूल में पीड़ित समुदाय के अनुभवों को रखता है। ऐसे ही एक समाजकर्मी-लेखक हैं कृष्ण कुमार कश्यपजी, जिन्होंने "शिक्षा के साथ आजीविका" के अपने महनीय प्रयोग का दस्तावेज प्रस्तुत करते हुए **बासमती** में दलित समाज के अनूठे ज्ञान-वैभव को उजागर किया है।

पुस्तक का रंग-ढंग प्रारंभ में औपन्यासिक होने का आभास कराता है। लेखक के जीवन की भोगी इस कथा का प्रारंभ जेपी आंदोलन से होता है। असल में लेखक का अपना भी एक आंदोलन रहा है, वंचित समुदायों के लिए शिक्षा के साथ ही रोजगार की तलाश का आंदोलन। इस खोज में आंदोलनकारी कश्यपजी को जगह-जगह भटकना पड़ा। इसी क्रम में इनकी भेंट बासमती से हुई, नेपाल के जनकपुर में। आखिर दलित समाज की गहरी संवेदना और उसके निदान के आंकड़े रखनेवाली उस युवती के साथ कश्यपजी की मित्रता हो गयी जो आज तक के उनके प्रयोगों का मूल स्रोत बनी। बासमती की अंतर्पीड़ा, आकांक्षा, आस्था, समुदाय के कल्याण के प्रति उसकी छटपटाहट और उसकी आत्मनिष्ठा से परिचिती उनकी कार्य-पद्धति के निर्माण में किस प्रकार सहायक बनी, इसका जीवंत लेखाजोखा इस पुस्तक के मूल तत्व हैं।

बासमती एक स्त्री है, उसकी खुद की एक समझदारी है, छोटे से मन को असीमित उड़ाने है। उसकी देह-भाषा पर अपना एक अनुशासन है, आकर्षण का उसका अपना दृष्टिकोण है और उसके पास अपनी एक निधि है, परंपरागत गोदना का अक्षय भंडार, जिसे वह लोक-कल्याण के लिए कश्यपजी को समर्पित करना चाहती है। गये-गुजरे लोगों के लिए बदलाव का एक मुहिम शुरू करने में उन गोदना चिह्नों का उपयोग करने का निदान भी कश्यपजी को उसी ने दिया। यह घटना लगभग तैंतालिस वर्ष पूर्व की है जब कश्यपजी स्वयं एक सामाजिक कार्यकर्ता होते हुए भी दलित-संवेदनाओं से संपृक्त नहीं हुए थे। दोनों दो तरह की सामाजिक परिस्थिति से आते थे और दोनों की देह-विषयक समझदारी में भी काफी अंतर था। इस अंतर को बासमती ने ही अपने तर्क से पाटा और उन्हें आत्मचिंतन के द्वारा अपनी अवधारणाओं को बदलकर सृजनात्मक साधन के रूप में उन देहचिह्नों का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया।

बासमती की उत्प्रेरणा से कश्यपजी ने कला–प्रतीकों की भाषा को समझने का प्रयास किया और उन्हें लगा कि कला के उस शब्दकोष का उपयोग वह वंचित लोगों की पढ़ाई के साथ ही उनकी आजीविका के लिए, उनके स्किल डेवलपमेंट के लिए कर सकते थे, जिसकी खोज में वह वन–वन भटक रहे थे। इस संस्मरण में बासमती और उसकी बहन सरस्वती ने साधारण महिला के जीवन में अनेक प्रकार के अभाव से उपजी कसमसाहट को जिस प्रकार व्यक्त किया उसी रूप में कश्यपजी ने उसे परोस दिया। दलित महिला की उस कुलबुलाहट के साथ ही उसके उच्च आदर्शों की मूल्यवत्ता तब और घनीभूत हो जाती है जब वह गोदना से भरी देह का अनावरण तो उनके आगे करती है, किंतु एक कठोर अनुशासन में, शायद बाणभट्ट की तरह कोई यह कहनेवाला मिल जाय कि नारी शरीर को मैं देव–मंदिर की तरह पवित्र मानता हूँ। लेकिन दलित नारी–जीवन की वास्तविकताएँ कुछ और होती हैं; इससे भी कहीं आगे।

लेखक ने पुस्तक में जिस भाषा का प्रयोग किया है वह मिथिला ग्रामीण समाज के अत्यंत रागीप है। उनकी भाषा अपने वैशिष्ट्यक चरित्र को लेकर उपस्थित होती है। यही कारण है कि लेखक ने संवाद को हू–ब–हू रखने का प्रयास किया है। फणीश्वर नाथ रेणु और नागार्जुन की तरह यत्र–तत्र लेखक अपनी ठेठ भाषा और बोली के साथ उपस्थित होते हैं। मैथिल ग्रामीण समाज एवं संस्कृति की इस शब्दावली का संग्रह कई रूप में उपयोगी हो सकता है। लेखक ने कहीं कुछ छिपाया भी तो नहीं है !

इस संस्मरण के माध्यम से लेखक ने साधारण लोगों के जीवन में उच्च आदर्शों, आकांक्षाओं आदि को ढूँढने का सफल प्रयास किया है। "बासमती" से प्रभावित जीवन की खोज ने ही लेखक को मन को संतोष प्रदान किया है। यहाँ वंचित समाज के लिए शिक्षा और रोजगार के उत्स की तलाश लेखक ने की है। श्री कश्यप ने एक संस्था के माध्यम से ऐसी वैचारिक खोज को सफल प्रायोगिक आधार भी प्रदान किया जो आज लोगों की आजीविका का माध्यम बनी हुई है।

– डॉ. उमेश कुमार 'उत्पल'
विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग,
वि म आदर्श महाविद्यालय, बहेड़ी,
दरभंगा – 847105

बासमती

बात बहुत पुरानी नहीं है, मगर नई पीढ़ी के लिए चालिस-पैंतालिस वर्षों का अरसा फिर भी लंबा होता है। वह ऐसा समय था जब खुद सरकार ने ही भारतीय प्रजातंत्र के माथे पर कलंक का टीका लगा दिया। भारत में इमरजेंसी, आपातकाल लग गया। 'आपातकाल', माने सरकार द्वारा लोगों की आजादी छीन लेना। 25 जून, 1975; आधी रात के समय जब सब सो गए, प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने आकाशवाणी पर घोषणा की कि राष्ट्रपति के आदेश से इमरजेंसी लगाया जा रहा है। सुबह में लोग जगे तो देश बदल चुका था। शहर-बाजारों में बिन-बिने कारते पुलिस-बल वातावरण को भयावह बना रहे थे। शाम में लोगों को पता चला, वह भी बीबीसी के मार्फत, कि राष्ट्रीय स्तर के बहुतेरे नेताओं को पकड़ कर जेल भेज दिया गया। पुलिसिया धर-पकड़ तेज होता गया। गाँवों में भी जो कोई जेपी आंदोलन से जुड़े लोग थे, उन्हें बिना किसी वारंट के जेलों में ठूंस दिया गया। 'ऑल इंडिया रेडियो' देखते-देखते 'ऑल इंदिरा रेडियो' हो गया। वैसे अखबार बंद कर दिए गए जो आंदोलन के समाचार छापते थे; जो निकलते रहे, उन पर सेंसरशिप का चीप बैठा दिया गया।

जेपी आंदोलन से मैं 1974 में जुड़ा। मैं जुलूस निकालना, नारा देना या 'जेल भरो अभियान' में अधिक नहीं रहता था, बल्कि दूर-दूर के देहातों तक लोक-चेतना के काम में ज्यादा संलग्न था। जेपी ने 'संपूर्णक्रांति' का जो मंत्र दिया था, उसके मर्म को समझने के लिए और लोगों को क्रांति की जरूरत समझाने के लिए, मैं सीतामढ़ी जिले के कठिन देहातों तक सक्रिय था। उधर हमारा केंद्र मेजरगंज में था। वहीं हम एक विद्यालय चलाते थे, 'जुनियर्स एकेडमी'। उस इलाके के बहुतेरे प्रभावशाली लोग, सरकारी अधिकारी और किसानों की मदद से वह विद्यालय चलता था। थोड़ा हमारे शिक्षक और एक मैं, हम सभी आंदोलनकारी थे। दिन में स्कूल और रात से दूर-देहातों तक लोक-जागरण, जुलूस की तैयारी, घेराव की मोर्चाबंदी। नेपाल की सीमा से सटा यह क्षेत्र आंदोलन की आँच से एकदम खदबदा गया था। पिघलती आग का ताप दिल्ली तक के गुप्तचर विभाग को झुलसाने लगा। सीतामढ़ी का पुलिस-प्रशासन और मेजरगंज का दारोगा खौफ खाता। कौन है मास्टर-साहब? गुप्तचर विभाग कहता था, यहीं कहीं है। आखिर बात खुल गई। दिसंबर की एक घनघोर रात, शीतलहरी की धुंध और रह-रहकर बरखा की बौछाड़ के बीच पुलिसिया कारवाई मेरे दरवाजे तक पहुँचनेवाली थी। एकाएक दारोगा की बेटी मधुरी दौड़ती-हाँफती मेरे कमरे तक आई और बताया कि पुलिस आ रही है। मधुरी और उसका एक रिश्तेदार, रमेसर, मेरा भेदिया था। इनसे मुझे पुलिस की गतिविधि का पता चलता रहता था। उत्तेजना से हाँफती मधुरी ने झट-झट मुझे बताया कि दो बजे दिन में लम्बोदर झा सीमा स्टेशन पर पकड़े गए, गन्ने के खेत में पैखाना करते चार लोग भी पकड़े गए, दारोगा जी हेडक्वार्टर गए हुए हैं, सीतामढ़ी से पुलिसबल लाने, वह सीधे यहीं आयेंगे। मधुरी ने मुझे चार ही रुपए, एक कंबल और एक छोटा फिलिप्स रेडियो दिया और झकझोरकर औरतों से रमेसर के साथ लगा कर कोठरी से बाहर ठेल दिया, किसी अनजाने रास्ते पर अपना भविष्य तलाशने के लिए। रमेसर ने कहा, चलिए सिद्धा मोड़, वहीं से नेपाल चले जाएंगे। छिपते-छिपाते हम आगे बढ़ते रहे। नेपाल भी मेरा अपना ही था।

नेपाल मेरे लिए मात्र भूमिगत गतिविधि का ठौर नहीं था। बहुत दिनों से वह मेरी आँख में किसी भगजोगनी की तरह भुकभुका रहा था, जैसे पिपनी पर पसीने की कोई बूँद लटक जाती है। नेपाल की प्राकृतिक सुषमा और उसके जंगल-पहाड़ एक तरफ मुझे किसी स्वप्न-लोक के पार्थिव संस्करण की तरह सम्मोहित करते थे, दूसरी ओर उसकी सरल चित्त प्रजा की छाती पर इस आधुनिक युग में भी राजा-रानी की सवारी दौड़ना मेरे लिए असह्य था। यह अनुभव कुछ वैसा ही था जैसे सुंदर फूल को देखते देखते आँख में पराग का कोई कण पड़ गया हो। नेपाल के बारे में अधिक सोचने से भी उपाय तो कुछ हाथ नहीं लगता था, उलटे मन में एक कसैला स्वाद घुलने लगता था। फिर भी मैं उधर की बातों से बेखबर नहीं था। जिस किसी भी स्रोत से वहाँ का हालचाल, लोगों की दशा और देश-कोस की दिशा का पता चल सकता था, मैं अपनी जानकारी बढ़ाता रहता था।

नेपाल के संबंध में एक सबसे बड़ा प्रश्न जो मेरे मन में खुजली की तरह उठता रहता था, वह यह कि लोग राजतंत्र के विरुद्ध संघर्ष क्यों नहीं करते हैं? दूर से बिना देखे कोई कितना समझ सकता है? मेरी हालत भी ऐसी ही थी। कभी मुझे लगता था कि नेपाल का राजा अपनी प्रजा को भेड़-भेड़ी बना कर रखे हुए है, जैसे लोककथाओं में कामरूप कामाख्या की डायन सुंदर पुरुषों को दिन में भेंड़ और रात में आदमी बना देती है। कभी लगता था कि राजा सोची-समझी नीति के तहत ही अधिराज्य में बेहिसाब दारू का उत्पादन करवाता है ताकि लोग हमेशा पी कर बेसुध बने रहें, 'रक्सी र मासु' (दारू और गोस) के स्वप्नलोक से भटकते रहें, कभी जगे नहीं। मुझे किसी ने बताया था कि सिंधुली, रामेछाप, दोलखा, पाल्पा जैसे पहाड़ी इलाकों में जब किसी गरीब स्त्री को बच्चा होता था, ऐसी स्त्री जो मजदूरी करने के लिए घर से बाहर जाती थी अथवा जो जंगल से लकड़ी काट और बेच कर गुजारा करती थी, वैसी स्त्रियाँ प्रसूति से निपटने के बहुत दिन बाद तक बच्चे को दूध पिलाने के लिए घर नहीं बैठ सकती थीं। तब वह बच्चे का क्या करती है? बच्चे के रोने पर कौन उसे चुप कराता है? जवाब यह कि बच्चा दिन भर पड़ा रहता है, न जगता है और न रोता है। बच्चे की माँ सुबह में उसे भर पेट दूध पिलाकर, घर से निकलते समय, उसके मुँह में दो-चार बूँद दारू गिरा देती है। दारू के प्रताप से भला बच्चा दिन भर पड़ा रहता है, बिना रोए खिलाए। बाप रे बाप! यह तो जनमते ही बच्चे को दारू के भीत में झोंकना हुआ। अब तो दारू उसे कभी नहीं छोड़ेगा, जीवन भर। ये लोग कैसे विद्रोह कर सकते हैं, सैकड़ों वर्ष से जमे-जमाए राजतंत्र के विरुद्ध? ऐसे लोग बैठे-ठाले मजे में रहते हैं। नेपाली में एक कहावत है, 'रे हेकड़ा, तुम्हारे पीछे में पेड़ जामल गया है'; ....'रहने दीजिए, भले छाँह में हूँ।' ऐसे में किसी तरह का राजनीतिक विमर्श कैसे शुरू हो सकता है? मन में इस तरह के अनेकों विचार उठते रहते थे जिसकी सही समझदारी बहुत बाद में ही हो सकती थी। इमरजेंसी के दबाव ने मुझे भाग कर नेपाल में छिपने का कारण दे दिया।

जनकपुर (नेपाल) में मेरे साले, श्री विश्वंभर लाल, नेपाल की सबसे बड़ी दारू ठेका की कंपनी में काम करते थे और मालिक के विश्वस्त अधिकारी थे। कंपनी का एक कार्यालय जनकपुर में था और उसी भवन में अधिकारियों का आवास भी। उस भवन को लोग 'लारी ऑफिस' के नाम से जानते थे। कंपनी के मालिक मकबूल अहमद लारी तो काठमांडू में रहते थे, लेकिन मैनेजर इरशाद अहमद और विश्वंभरजी कुछ और कर्मचारियों के साथ उसी भवन में रहते थे। मैं भी विश्वंभरजी के आमंत्रण पर वहीं रहने लगा। मैनेजर इरशाद अहमद साहित्यिक अभिरुचि वाले थे और सामाजिक-सैद्धांतिक विमर्श में उनका मन लगता था। एक दिन उन्होंने मुझसे कहा, नेपाल में जब तक राजा है, कंपनी के काम में क्यों नहीं लग जाते हैं? मैंने सोचा,

अच्छा ही होगा, मैंने इश्वरजी का प्रस्ताव मान लिया। मुझे फौरन (हारू–पानी का लेखा–जोखा) जाँचने का काम सिखा दिया गया। कंपनी और जनकपुर में मेरा नाम 'भारटर शाहब' पड़ गया।

मेजरगंज (बिहार) से जब मैं नेपाल के लिए विदा हुआ, उस समय मेरे पास गल्बुरी का दिया कंबल, एक छोटा रेडियो और दो–चार कपड़ों के अलावा होम्योपैथी दवा का एक छोटा बक्सा था। मुझे होम्योपैथी चिकित्सा का औपचारिक ज्ञान तो आज तक नहीं हुआ, लेकिन सेवा–भाव से मैं कुछ घरेलू दवाओं जानता एक बचत और चिकित्सा गाइड नामक एक पुस्तक अपने पास हमेशा रखता था। छोटी–मोटी तकलीफ वाला कोई आदमी जब मुझे अपना हाल बताता था तो मैं उस किताब से पढ़ कर दवा दे देता था। बहुतों को ठीक भी हो जाता था।

जनकपुर के हमारे उस महल्ले में, नदी की ओर उन दिनों बहुत घर नहीं थे। लारी–भवन के बाद दो–तीन घर, एक घर श्याम गिरि का। इनके यहाँ मैं खाली समय में जाया करता था। उनकी दो बेटियों को मैं कभी–कभी अंगरेजी पढ़ा दिया करता था और जरूरत पड़ने पर होम्योपैथी वाली दवा भी दे देता था। गिरिजी के घर के बाद कुछ दूर तक परती थी और उसके बाद नदी से सटा एक पाराशर परिवार रहता था। उन लोगों को भी पता था कि मैं दवा देता था। दो–चार बार उसे भी दवा दी थी। उस घर की स्त्री को लोग 'रतिया' कह कर बुलाते थे। एक दिन मैंने उससे पूछा, 'आपका क्या नाम है?' उसने कहा, 'रासवती'।

एक शाम मैं गिरिजी के यहाँ बैठा था तो रासवती आई और बताया कि उसकी बहन आई हुई है, उसको बुखार लगा हुआ है। दवा वाला मेरा बक्सा वहीं था। बक्सा हाथ में लिया और उसके साथ ही विदा हो गया, नए रोगी को देखने। उस रात ठंड में जनकपुरी कुछ बढ़ गई थी। नदी किनारे का घर, पुरवा हवा के कारण मुझे लगा कि बुखार लग गया होगा। मैं पहली बार उसके यहाँ गया था। एकचारी टटघर। छोटी–छोटी खोलिआ जैसी फूस की दो कोठरी। एक कोठरी में मटिया तेल की डिबरी भुकभुका रही थी, खजूर की अधटरा चटाई पर साड़ी ओढ़े एक युवती पड़ी हुई थी और कुछ हँटकर एक खूँटे से बँधी दो–तीन बकरी–पाठी चगुरा रही थी। मैंने रासवती से पूछा, 'क्या होता है?' उसने कहा, 'डोखार लगल है, माट्साएब, जरा ठीक से देख दीजिए ___ ।' उसने मुझे चटाई पर बैठने को कहा। जब वह डबी उठ कर बैठ गई और मेरे लिए थोड़ा घुसक कर दूसरी ओर घूम गई। मुझे लगा, वह लजा रही थी। मैं उसके पास ही चटाई पर बैठ गया और पूछा, 'आपका नाम क्या है?' वह कुछ देर चुप रही फिर बोली, 'जस...मती'। लगा जैसे काँसे की थाली में कोई सिक्का झन्न से गिरा और झिनझिना कर ठमक गया।

"वाह रे वाह ___ आप दोनों बहन के नाम बहुत सुंदर है, रासवती और जसमती।" डिबरी के मद्धिम इजोत में मैंने देखा, मेरे तरफ वाला उसका गाल ललौन हो गया था। मुझे लगा, उसका बुखार बढ़ रहा होगा। ताप जानने के लिए मैंने उसका पहुँचा पकड़ना चाहा, उसकी नाड़ी देखने के लिए। मैंने छुआ ही था कि वह सिहरिया उठी। मैं चौंका, उसने ऐसा क्यों किया? मैं कुछ पूछने के लिए रासवती की ओर ताका ही था कि उसने कहा, "नहीं समझे माट्साएब, इसको आठ दिन से 'सरगढ़ोआ' करया रखे थे। कल ही छूटा हुआ है। हो सकता है कि उसीके जरब से बुखार लग गया हो ___।" मैं सही में कुछ नहीं समझा। मैंने कहा, "मैं आपका मतलब नहीं समझा। जरा समझा कर कहिए, नहीं तो इलाज कैसे होगा! यह सरगढ़ोआ क्या होता

है वहाँ एक्का पक्का हैंड का आकर्षणों व बड़े बड़े की योजना निकाला और रास पर पांच की ओर चेन पड़ें कपड़ दें पहले पा रहीं गुड़ा लाला तेरा सर बात रहित से पहले इलीचित कर रहीं थी कि लड़ी से व न, लाभ रसाला पाने या भाव और मनकर ; आदर कारखाना में काम करने पा व ; आता पहाड़ा सका सा दी सदु पल्ला शबखाना खाल पसीना रूक दी। हम लाभ में मालखाना जाती जाते के जिन पाना गोदामना गड़ा वस्त्रे रहना है रसोया क साब पोलिस होने है अ है अवालिया कुरु क कर्ता पोलाई की केरा पहाने भा लाभ भाव लाभ लाभ। लोक का बुड़ा बूढ़ी भी करव नहीं भी न अन्त हजाला और व पताला खाल के संत भारोह हेलाभ ना वखत के सका अक दहल खाली भी रसक बाल भी लाभ का हुन हरलाल दो न पालबाया लिं दुसो भा जा से आगे लाभ हुआला सोना भी तहें हो ।।

पहल की बात म लोड़ व लोड़ा । लिं लालालाभ हुक्म है कि । बड़ी लाला लाली लाभ की दल भा बाल हुँ खलता है । दालू रस है पीछे । भाव लाला हो पड़ भव लोब हुलक भी । लाला लिं लाभ लाभ लिखना वलाल है । लोब भाव भी लोड़ा हो लाला हो लाभ लाभ हुआला भी। खाली हो रखाल है आड़ लोला हा भी आलाल ना पहले हुआला व लालाल भी लिखा लाला । पड़ हाल का हलाल । लाभ भी लाल लाभ भी लाल लालाभ ना । लाभ लाभ लाभ

लोगों को जाड़ा नहीं लगता है।"

अपने तौर पर सांसद आ गए सुबह की दिनचर्या कुछ ऐसी ही थी।

आधिपत्र रहने लगी है

जाएगा यही जिम्मेदारी है।

[illegible] लेना-देना यह अनुचित है। मुझे अपने आप पर क्रोध हो आया।

[illegible]

[illegible] शिव शर्मा में अपने ही भाग्य सहसा अपनी गोद में लौट आया।

में लिख आए सभाओं देख रहा था। तभी अचानक मेरे मुझे एक अनोखा दर्शन हुआ मैंने एक हरिजन स्त्री को कौंख और छाती पर गोदना के चित्र बने देखा। उस समय मुझे यह आभिज्ञान हुआ कि 'गोदना' अंकित लोगों का प्रागैतिहासिक चित्र वैभव है। जब उन लोगों का आगमन बंद हो गया तो मैं उस दलित महिला के आँगन गया और दूसरी महिलाओं को भी बुलाया। वैसे–सभाओं के बाद मैंने उन लोगों को बताया कि उनकी देह पर बने गोदना के चित्र असल में उन्हीं लोगों की चित्र–परंपरा है। मैंने उन लोगों को समझाया कि यदि उन चित्र–प्रतीकों को कागज पर उतार दिया जाए तो बहुत सुंदर चित्र कलात्मकता और इसे गोदना पेंटिंग कह सकते हैं। मैंने उन लोगों को कलम

कि गोदना के इन सेहतियों से और क्या किया जा सकता था।

लेकिन गोदना वाला घाव अभी नहीं सूखा था।

गोदना के छाप बासमती की बहन सरसती की बाँह पर भी है. लेकिन सिर्फ की हरियाली फानी देखा उसके शरीर के रंग से मिल कर और भी सदिल खलती है बासमती की तरह एकदम साफ है सहसा मेरी नजर उसके हाथ पर बने नाजुक फूलपत्तियों वाले छाप पर

की भाषी हो जाती है। छाती में मिल जाती है। फिर दुःख काहे का

गर्भवती होती है वहाँ अष्टदल नहीं, कमल खिलता है।

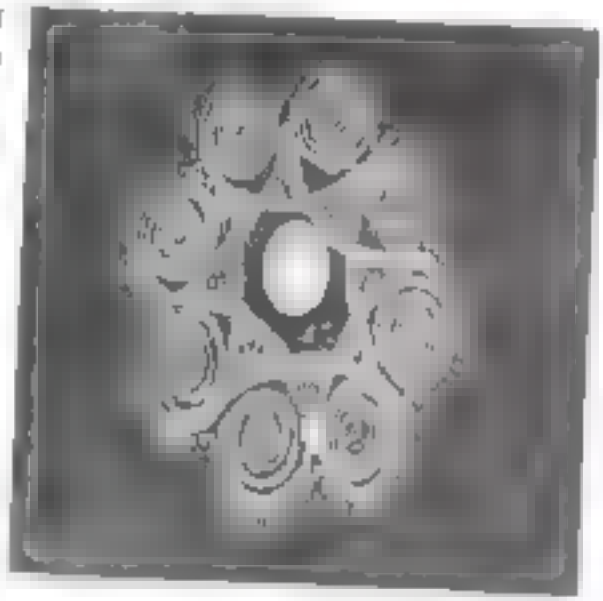

मेरी माँ अरिपन की लिखिया कर रही थी और मैं आँगन पर बैठ कर चिताए (चावल को बना) बेसन घोल) से बनते अनेकों प्रकार के ज्यामितिक चित्र — फूल, अष्टदल, त्रिभुज, चौकोण, षट्कोण, वन आगल, पपरल रेखा, चक्र रेखा, त्रिभंगी रेखा और शंख आदि से मिल कर आकार लेने बड़े से बड़ा बन रहे अरिपन को उत्सुकता से देख रहा था। वह दृश्य मेरे लिए अद्भुत सुखदायक था। स्कूल से निश्चिन्त हो खाना खाने के बाद यही एक समय था जब मुझे नए ज्यामितिक का पाठ पढ़ने को मिला। मेरे पीसर का या उनके नए पाठ को याद से अपना पढ़ा था। उस ज्यामिति को सीखने के लिए अब किसी को फीस नहीं देनी थी। माँ के स्कूल में कोई परीक्षा लेनेवाली भी नहीं थी। एक ही बार के दर्शन से अरिपन ने मुझे निहाल कर दिया।

बात का विश्वास है कि देवीस्थान की संध्या लक्ष्मीजी अपने पाँचे औंगठे सिन्दूर के साथ जैहर मोहिला धारती हैं। उनकी लिए सभी लड़के के धनिष्ठाने, गुरुजी के सभी सहयोगियों से परिपूर्ण श्वेत कमल से

काम करेगा, बैपढे लोगों को पढ़ाने का काम; दूसरा कुछ नहीं करेगा

शिक्षित लोगों के पास शब्दकोशों के सुरक्षित और जीवित रहने है

पोछना था। पुरो लगा जैसे आँख के
नौक रहे है भाप से या यह तो भारी
साथ आसान नहीं था उन हालों को
आगे खड़ा रह कर उपाय खोजना रहा
को मुस्कान मिल ही गया

प्रस्ताव भाग सही

"य से योग्य नहीं भागेंगे, म से मन में याद रखेंगे
ज को जिंदगी बहुत बुरी है, हम को भला जरूर बनेंगे।"

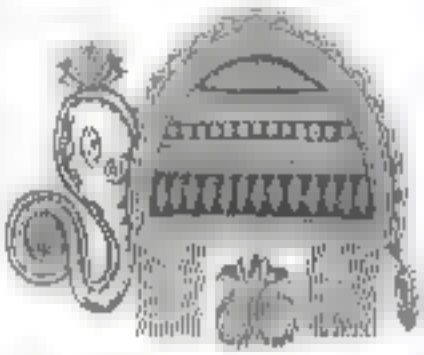

ईंट पर बैठ कर उसे देखने लगा. वह अपने गोदना वाले पाँव पर पानी की धार गिरा रही थी. उसको बाद आँचल के खूँट से उस पानी को छन्नो पोंछने के बाद वह अभी और दूसरी ईंट पर पाँव रख कर बैठ गई. बोल कोई नहीं रहा था. लगा दोनों एक-दूसरे को नजर भर देख रहे थे. उसकी आँखों में और होंठ पर स्मिति की एक छाप थी और मैं भी मुतमैन था. मैंने कहा, 'जरा देखूँ, आप पाँव कैसा सजाती हैं?' उसने अपनी दोनों बाँहों को पसारते हुए मेरे और बढ़ाया. मैंने दोनों हाथ थाम लिया. एक हाथ में मोर मयूर और दूसरे हाथ में गद्दा से ऊपर हाथी गुदा हुआ था। दोनों हाथ के

हाथी पर ही उसने पूछा, 'हाथी देख रहे हैं? यह 'मकुनी हाथी' है।

"यह क्या होता है?

अक्षरश, छोल-मकोरा मुँही-बकोरा ..."

बुझक्कड़ माने क्या हुआ?"

था था मुझे उसके ज्ञान का सम्मान + ा और मैंने पीछे रहा था जैसे वह इसका संकेत हो कि हाथी समृद्धि का प्रतीक है: संपन्नता का द्योतक है।"

उसने एक [illegible] कहा कि [illegible] यहां ना मैं नहीं समझती हूं [illegible] एक ना हाथी और है [illegible] उसके पीछे वह चौथाई खाने का बुड़ीनाला [illegible] को वह पहचानता कर रहा था। मैंने कहा "वह हाथी भी दिखलाइए ना!"

मेरी बात से वह थोड़ा नाराज़ सा हो गया। शायद मेरी [illegible] मेरा अंदाज़ा लगाना कि वह हाथी हो सकता है कि भीतरी किसी भाग [illegible] पूर्णिमा वह रखा गया है और वह [illegible] मैं देखनाला हो सकता है [illegible] हाथी के बारे में बताना का कहा है [illegible] हाथी को क्या कहा जाता है?"

[illegible] अपने मन में [illegible] बताना करता है [illegible] उसके हाथों [illegible] पर सजाने वाला सामान है इस विशेष आदमी को [illegible] देता है तो वह [illegible] उसके बदले में [illegible] पूरे गांव को [illegible] का [illegible] पड़ जाता है। [illegible] का [illegible] हाथी के समान हो और सफ़ेद हाथी की तरह कृष्ण वर्णमें दिखाई देते हैं।" ... हाथी अक्ल यौवन और ज्ञान का प्रतीक है. यह बात बताने के लिए उसके पास न तो सुलभ शब्द थे और न उसकी मनःस्थिति ही संकोचमुक्त थी। [illegible] उसकी प्रकृति अनुपयोगी कही गई है फिर भी इस श्रेणीकरण में कितनी वैज्ञानिकता है, किंतु साहित्य और कला का क्रमशास्त्र में बदलाव हो है ही।

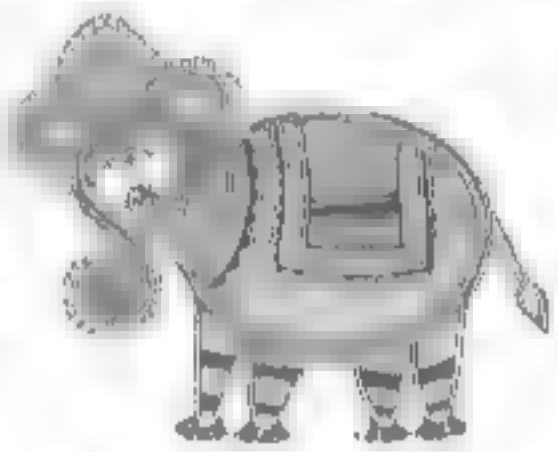

[illegible] [illegible] [illegible] [

करने की जरूरत नहीं है। जो कहना हो, निर्भीक कहिए।"

अभी दवा देने जाऊँगा ही।'

नदी की ओर चला गया

[illegible]

पूरी बात बता पाऊँगा।'

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] दिया जाय तो समाज के बहुत वंचित लोगों को फायदा हो जाएगा।'

[illegible] ऐसी सपक्ष है उन लोगों को पेंशन का लाभ नहीं मिलता है।'

[illegible] बाल मोह कर पैदा हो गया।

[illegible] आपने में संयम रखें तो कहीं जाने में हर्ज नहीं है

[illegible] पोटली को उसकी दादी ने [illegible] जैसी कोई दवा है इसीलिए पूछा, 'यह क्या लगा रही हैं?'

"यह कपूर मिला नारियल का तेल है। इससे मलने पर खुजलाहट नहीं उठती है और घाव भी ठीक से उपचता है।" इतना कहकर वह चुप हो गई उसके हाथ पैर से उठते कपूर की गंध अच्छी लग रही थी उसने बाँह में तेल मलते हुए कुछ खुशहाल को साथ कहा 'जहाँ तक हाथ पहुँच पाता है, वहाँ तक तो ठीक है .... एक जगह साबुन से छोड़ा लगोर लग गया है ..।

मेरे चिंताकुल दृष्टि से आंकित हो कर कहा 'साबुन से लगोर लगना अच्छी बात नहीं है कहाँ लग गया है?'

उसने संकोच में ही कहा, "... पीठ पर ... वहाँ सीधा हाथ नहीं पहुँचता है न वहाँ तेल भी नहीं लग पाता है इसलिए खुजलाता है मेरी जब खुजलाने का मन होता है तब किसी न किसी चीज से खुजलाना ही पड़ता है नहीं खुजलाएँ तो चैन ही नहीं पड़ता है इसी से कहीं लगोर लग गया

आपकी चीजों को क्यों नहीं रखती है

[illegible]

मेहमान घर में रहते हैं ...।'

खोजी, तब तिवारी जलपाया

समय भी सुविधा–प्रद था. लोगोंने उसकी मुखाकृति पर

भी कर डाली है. आपको ससुराल वाले गाँव के आस–पास। उसीने बताया कि

हुई जानकारी है कि सरपास

[illegible] के सिलसिलेवार क्रॉस से मैंने कुछ [illegible] गायत्री पोरवाल के आत्महत्या की वह खबर मेरी आँखों में नहीं [illegible] पर [illegible] मुझे यह जानकर [illegible] कि बाबासाहेब का पालन से जुड़ी [illegible] जानकारी थी [illegible] गायत्री पोरवाल के बारे में [illegible] और क्या-क्या मालूम है?"

पहले [illegible] वसंत [illegible] , [illegible] तपाक से कहा, "यह बात तो आग की चुगली की तरह पूरी बस्ती में फैल गयी [illegible] सारे लोग नहीं जानते हैं, कई [illegible] होंगे [illegible] कई पालक लोग [illegible] और कई [illegible] को [illegible] पोरवाल कहता है [illegible] दरअसल मोरवाल [illegible] है [illegible] यह बड़ा [illegible] बड़ी [illegible] मैल [illegible] है लेकिन [illegible] सभी का [illegible] नहीं है [illegible]

मुझे उसकी बात से थोड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने पूछा, "सो कैसे?"

वह [illegible] [illegible] [illegible]

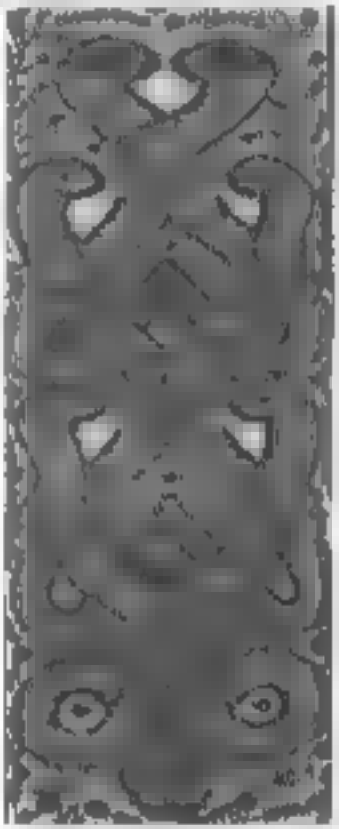

35

मैंने कहा "मैं तो रोज पढ़ता हूँ, हमेशा पढ़ते रहने से ज्ञान बढ़ता रहता है, यह लेख पढ़ने लिखने छोड़ दिया है तो अभ्यास कैसे हो, तब से मेरे लिए अखबार पढ़ना भी उतना ही जरूरी है जितना कि भोजन करना .... ।"

उसने पूछा "आप क्या सब पढ़ते हैं?"

मैं गर्व से उत्तर दे रहा था कुछ पुस्तकें तत्पर रखता हूँ, मैं पहली सीढ़ियों से उतरती और चढ़ती हुई पढ़ता हूँ, इस तरह सन्तोष सुखी हुई के आप ज्यादा बोलते कम लिखते हैं, मैं उसकी बातों के बीच में ही बोल उठा "मैं आपको एक पुस्तक दे रहा हूँ, यह पुस्तक पढ़ लीजिए और दो दिन बाद आकर जो पुस्तक दे रहा हूँ वह आपको कैसी लगी, बताना, मैंने उस डायरी को निकालकर शीर्षक लिखा।

मेरा कार्यक्रम सुनने की इस पुस्तक के लेखक से मेरा मिलने का भी कार्यक्रम था, मिलने पहुँचा तो वह मुझसे ही मिलने के लिए बेचैन था, मुझे देखते ही उसने [illegible] मेरे पैर छुए, मैं आश्चर्य में पड़ गया, मैंने उसे उठाया, उसने कहा "आपने मुझे पहचाना नहीं, मैं आपका [illegible] हूँ, आपने मुझे बहुत प्रेरणा दी थी, मैं आपको धन्यवाद देने आया था, आपने मुझे पुस्तक पढ़ने के लिए दी थी, मैं उसे पढ़ता गया, पढ़ता गया, मैं पढ़ता ही गया, मैं पढ़ने में इतना डूब गया कि मैं अपने आपको भूल गया, मैं अपने आपको पहचान गया, मैं अपने आपको जान गया, मैं अपने आपको पा गया, मैं अपने आपको पा गया, मैं अपने आपको पा

भी लगती है मेरे गाँव में आरत्तालाल चबाह हुआ था तो दूर दूर के गवैया और रामलिल्ला वाले आए हुए थे, पात भर रामलिल्ला वाले गाते रहते थे - हाला हो हाला "

अपनी बात खत्मकर वह फिर से किताब पढ़ने लगी। मेरी नजर खाने पीने पर ही अभी थी। फिर मेरे सामने ही रोटी तोड़कर दाल की कटोरी में डुबोकर खाने लगी। उसे खाते देखकर मुझे और भूख लग रही थी। मैंने पूछा "किताब कैसे छपती है?"

वह पहले मुस्कराई फिर खिलखिला पड़ी और उसकी खिलखिलाहट से हॉल में दो चार और लोग किताबों के साथ मनोरंजन करने के लिहाज से मेरी ओर देखने लगे। मैंने अपने चारों तरफ देखा। सामने की दीवार पर लगे एक बोर्ड पर लिखा था 'मोबाइल फोन का प्रयोग मना है'। मैंने पूछा "आप इसका क्या मतलब समझती हैं कि मोबाइल फोन का प्रयोग मना है?"

वह फिर खिलखिलाई और बोली "इसका मतलब है कि यहाँ मोबाइल फोन का प्रयोग मना है। इसमें समझने की क्या बात है?"

मैं भी हँसने लगा। मैंने कहा "मैं तो समझा था कि यहाँ मोबाइल फोन पर बात करना मना है। इसलिए मैं फोन को साइलेंट मोड पर रखकर उसे अपने बैग में रख लिया था। और फोन का इस्तेमाल भी नहीं कर रहा था। फिर भी आपने मुझे टोका क्यों?"

वह फिर खिलखिलाई और बोली "मैं तो समझी थी कि आप मोबाइल फोन पर बात कर रहे हैं। इसलिए मैंने आपको टोका था। वैसे आपने कौनसा फोन रखा है?"

मैंने अपने बैग में से फोन निकालकर उसे दिखाया। वह फिर खिलखिलाई और बोली "ओह! यह तो बहुत पुराना मॉडल है। आजकल तो लोग स्मार्टफोन रखते हैं। आपने स्मार्टफोन क्यों नहीं रखा?"

मैंने कहा "मैं स्मार्टफोन रखता तो हूँ, लेकिन उसका इस्तेमाल बहुत कम करता हूँ। उसमें इंटरनेट की सुविधा नहीं है। इसलिए उसका इस्तेमाल सिर्फ फोन करने और सुनने के लिए ही करता हूँ।"

वह फिर खिलखिलाई और बोली "ओह! यह तो बहुत पुराना मॉडल है। आजकल तो लोग स्मार्टफोन रखते हैं। आपने स्मार्टफोन क्यों नहीं रखा?"

मैंने कहा "मैं स्मार्टफोन रखता तो हूँ, लेकिन उसका इस्तेमाल बहुत कम करता हूँ। उसमें इंटरनेट की सुविधा नहीं है। इसलिए उसका इस्तेमाल सिर्फ फोन करने और सुनने के लिए ही करता हूँ।"

वह फिर खिलखिलाई और बोली "ओह! यह तो बहुत पुराना मॉडल है। आजकल तो लोग स्मार्टफोन रखते हैं। आपने स्मार्टफोन क्यों नहीं रखा?"

मैंने कहा "मैं स्मार्टफोन रखता तो हूँ, लेकिन उसका इस्तेमाल बहुत कम करता हूँ। उसमें इंटरनेट की सुविधा नहीं है। इसलिए उसका इस्तेमाल सिर्फ फोन करने और सुनने के लिए ही करता हूँ।"

बढ़िया सी कागज पर उतार दें तो वह छपेगा कि नहीं?"

बोला "आप तो सरकार उधरे से आए हैं सिंघ आपको जाणा था ... ।"

है .... सरकार मी उधरे उधरे चले आ सकते थे, अतीक होसा।"

[illegible]

[illegible]

फिर पूछा, "आप भी शिक्षक हैं क्या? यहीं किसी विद्यालय में हैं?"

[illegible]

[illegible]

बाप की स्थापित हुआ अतः खानदेश पर कोई आक्रमण नहीं होता है।"

कहा कि कोई हरिणी से जन्मे और कोई हथिनी से, सो कैसे हुआ?"

पढ़ाने की कला में वह अद्भुत निपुण है।

हुआ जो?

सत्यवती महाभारत की महारानी बन गयी।

शूद्र व वैश्यवर्ण। इस श्लोक का अर्थ भी वैसा ही है मनु भगवान कहते हैं कि प्रजापति ने प्रजा के हित के लिए मुख बाहु उरु और चरण से क्रमशः ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र को उत्पन्न किया। बात है कि आपको धर्मशास्त्र के कोई ज्ञान तो है नहीं इसलिए आवेश और धर्म विरुद्ध बातें कह कर अशिक्षित लोगों को भड़काकर उछलना चाहते हैं अब आप थोड़ा और ध्यान से सुनिये मैं आपको फिर समझा देता हूँ कि ये मंत्र सबों को सुनाने के लिए नहीं बने हैं लेकिन आप ऐसे मामलों को समझ पर लाना भी जरूरी है इसलिए आपको फिर समझा देता हूँ मनु भगवान का आदेश है कि ब्राह्मणा व्यवसायार्थं धारयेत् सर्वेषां हितार्थं स्वायम्भुवो मनुः। सर्वेषां ब्राह्मणादीनां सोऽविशेषेण सर्वतः। धर्मतो ब्राह्मणः सृष्ट्वा हितार्थं सर्वदेहिनाम्। ब्रह्मणोऽस्य मुखमासीत् इस मंत्र के आधे भाग में आपने इतना अर्थ पढ़ा है कि ब्राह्मण जन्म से ही पृथ्वी के समस्त जीवधारियों का श्रेष्ठ होता है वह सबके कल्याण का हेतुक और सब के सद्भावना का रक्षक होता है बुरा संसार में किस प्रकार की भी आपत्ति है वह ब्राह्मणों को लेकर सम्भव है अब यह बात कि शूद्रों की आवश्यकता आवश्यक हुआ कि नहीं?

पंडितजी भाषण करते करते थक गये थे और स्वयं अपने तर्कों से सन्तुष्ट भी थे अब उत्तर देने की किसी पार्टी की हिम्मत नहीं थी सभासदों की ओर से कुछ उत्तर देने के लिए खड़े हुए और सभा समाप्त की घोषणा कर दी।

सभासदों के जाने के बाद मैंने कहा आदरणीय ब्राह्मण जी आपने समझाने में तो कोई कसर नहीं छोड़ी लेकिन मेरी समझ में कुछ नहीं आया। आपने तर्क भी बहुत दिये लेकिन कोई तर्क मेरे गले नहीं उतरा। मैं तो आपसे यही पूछ रहा था कि शूद्र क्या है? उसकी आवश्यकता क्यों है? उसके कर्तव्य क्या हैं? आपने तो शूद्रों की निन्दा करने में ही सारा समय बिता दिया। मैं तो आपसे शूद्रों के बारे में जानना चाहता था। आपने तो मुझे और भी उलझन में डाल दिया।

मेरे इतना कहने पर पंडितजी ने कहा बेटा तुम्हारी समझ में नहीं आया तो कोई बात नहीं मैं फिर से समझा देता हूँ। मैं तो समझा चुका हूँ। मैं फिर से समझा

मुझे पंडितजी को जवाब देने दीजिए ...।"

[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible] हुआ कि शूद्र शांति करने में बड़ी आति के किसी आदमी [illegible] बात करने के लिए हाथ या कोई छोटा मोटा [illegible] सेवक करने वाला चाहिए। आदर से आदर वाले पेश आना हो तो सलाह पेश करना होना चाहिए। क्या ओ पंडितजी, यही अर्थ हुआ न?

[illegible] इस कानून के [illegible] से एकदम खोल गए थे। उन्होंने दूसरे [illegible] आप मुझे [illegible] हैं आप तो [illegible] रहे हैं लेकिन आप यह नहीं देख रहे हैं कि इन लोगों को संविधान भी तो यही आश्वासन-आश्वासन देता था।

मैंने [illegible] बात [illegible] हुए [illegible] किस तरह से [illegible] बात कर रहे हैं यह मैं नहीं समझ [illegible] रहा है, लेकिन मैंने तो [illegible] यह पढ़ा है कि [illegible] इसके [illegible] हुआ कि शूद्र [illegible] के साथ [illegible] पर [illegible] दूसरे [illegible] के [illegible] हुए [illegible] और [illegible] संविधान से [illegible] [illegible] कि [illegible] क्षत्रिय [illegible] संरक्षण शूद्र को [illegible] हुआ था।

[illegible]

[illegible]

[illegible] नौट आया।

5

[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

बात नहीं है अलग्जांडर सर्गेयेविच ने मेरा हाथ पकड़ लिया, उसके गाल पर अलग्जांडर सेर्गेयेविच जितनी ही लंबी रेखा दुखा थी। बहुत धीमे स्वर में उसने कहा, उसके एक दाढ़ी वह अब बोल नहीं पाती थी। मैंने बस सांत्वना के लिए सहलाया था। अलग्जांडर सेर्गेयेविच क्या हाल है

मास्कमलो और पेत्रोव ने बैठक में बहुत सहायता की थी। मकिन तब जाने कब समय तक रुका रहा। वह दूर ही से मास्कमलो से अपने चुनावों के बारे में कहा। आखिरी बार वहीं है। उसका विश्वास पूरी अवाक था। वे मुझे देर तक बेसब्री आँखों से देखता रहा। दूसरी कुर्सी मेरी ओर है। क्या मैंने उसके चेहरे पर खुशी देखकर कहा। उसका पूरा चेहरा था। आखिरी बार मैंने उसे देखा था। मैं भी आपका प्रतिनिधि नहीं। मास्को लग रहे हैं। क्या वे आपको के दो उपहार ने मास्को से मैं कहा। पेत्रोव आता रहा। मैंने पहले दिन। उसका। मैंने बस ही उस समय मैंने से लग रहा। मैं उसे। उसे था। मैं और मेरा। उसने। मैंने। मैं। मैं। मैं

कि नहीं पूरा करने का आरोप लगा। उसके मुताबिक यही वजह थी कि [illegible] यह आगे अनाथ वाली बात क्या है?

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] आर्या काहेकर अत्याचार नहीं कर सकता है ... !'

[illegible] देवा [illegible] एकता सब से बड़ा धर्म है [illegible] !'

[illegible] चाहिए!'

[illegible] का भी कोई नियम होता है? यह क्या होता है?'

जाड़ा के महीना में पहरी घुरही आदमिन में धंस जाला। सिर्फ हो गाल है जवन भी आधपेट खोरनका पर जाड़ा बेसी कँपावता है।'

सबके आगे पसरल सत्य जब साफ भकरार बहरान चारो ना खाइनो के साथ कहे दिया। गला अवरुद्ध हो गया और आँखे नम हो गईं। उसने पूँछो से पोंछने के बहाने दोनो हाथ उसके माथ पर पहुँच औरतो की शक्ति को फूँक मारकर उड़ा दिया और उसके माथे को सहला देया। फलतः वह तो स्वयं सबके सहारे का बहाना लगा वह फिर से बोलने लगी। जानमारू बिल्कुल से बचना का एक ही उपाय है साफ साफ रहता है। और से हे उसने कहा। सोचनलाय बोले और कहीं पर खेड़ा भी नहीं बनना चाहिए है वह लोग कम से कम पंद्रह बीस दिन की के बाद नयी दुनिया लगे कहीं जाकिर एक हो फलना गई के बाद से [illegible] छत्तीसको दिन में बिछवा भी दिया और रात में ओढ़ा दिया ....।'

[illegible]

[illegible]

_ इसमें जाता क्या सिखाया?

पाठक? याद रखो मेरे बारे में कहा था __ !

[illegible] हर में गन्दगी दानों हाथ में चाय [illegible] पकड़े चली आती [illegible] सबसे [illegible] कप [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

के फेंक आवेंगे आखिर के आगे न निकलके करेगा कभी न कभी [illegible]

[illegible]

हमनीं के हाल दिन दुखड़ा भोगत बानीं
हमनीं के साहब से बिनती सुनाइबि
हमनीं के दुख भगवनऊं ना देखताबा जो
हमनीं के कबले कलेसवा उठाइब
बदरी समेत जो कबहरी से जाइब जा
बेमरम होके संसरब बसि जाइबि ये
हाय राम धरम ना छोड़त बनत बा जी
बेधरम होके कइसे मुंहवा देखाइबि
रोवता के कानि पहलाद के बचवले जे
ग्राह के मुंह से गजराज के बचवले
द्रौपदी खुरजोधन के बहुआ छोरत रहे
पट राउ सांचे सही अपजा बढ़वले
अपना बचनका के पलले भखिसवा जे
कानी अंगुरी पै धइके पबरा उठवले
कहंवा सुतले बाटे सुनत ना बाटे अब
ओम जानि हमनीं के छुएके डेरइले।
हमनीं के बात दिन केहसन फरीहेला
दुख से छाताबद छमास मे गाहब
हाकुरे के सुरुज से ई घर मे सुतल बानीं
हमनीं के जागल जाति रहलि हमारुबि
नाकिस के सबकारि हमरल बानीं जे
ई ऊंचवी कोरिरया मे फंकवल जाइ ये
मुंह बान्हि ऐसन नोकरिया करल बानीं

हे कुल खबरिये सरकार के सुनाइबि।
बमने के लेखे हम भिखिया न मँगब जा
ठकुर के लेखे नाही लउरी चलाइबि
सहुआ के लेखे नाही डाँड़ी हम मारब जा
अहिरा के लेखे नाही गइया चराइब।
भँटऊ के लेखे न कवित हम जोरब जा
पगड़ी न बान्हि के कचहरी में जाइबि
अपना धसिनवा के पहुना कमाइबि जा
घर भर मिलि जुलि बीटि-चोटि खाइबि
हड़वा मसुइया के देहिया ह हमनी के
ओकरे के देहिया बभनऊ के बानी
ओकरा के धरे-धरे पुजवा होखत बा जे
सगरे इलकवा बड़लें जानजमानी
हमनी के इनरा के निगिचे न जाइलें जा
पांके मे से भरि-भरि पिअलानी पानी
पनही के पिटि-पिटि हाथ-गोड़ तुड़ि देलें
हमनीं के एतनी काहे के हलकानीं।"

होता अब जाने दीजिए" हमका कहकर मैं चेदा हो गया।

[illegible] यहाँ चला आया।

[illegible] व्यवसाय को बैठा और मुआविज़ा गैरे बंगल में ही बैठ गयी।

आपने कैसे सीखा?

माँ की स्मृति में ही खुलती थी

और चौदहवाला एक बनकर कोठरी में यहाँ-वहाँ टकराने लगी थी —

मेघोंने घरे मेघ लगेछे
आँधार करे आसे
आमार जीव कोरेये धरछे एका तुमिओ पाशे
का केन किछु भावछ कथनो
प्राणेर भाषा ओकेर भाषो
आज आमि ये कथा आमार आमारो
आमाय किछु बोलिये दिछे एका तुमिओ पाशे
तुमि यदि ना देखा दाओ
कारे आमाय देखा

[illegible]
এমন বাদল-বেলা
দূরের পানে মেলে আঁখি
কেমন আমি যেন থাকি
পরান আমার কাঁদে বেঠায়
বুঝব [illegible] আপনারে।
আমায় কেন বসিয়ে রাখ এমন দুয়ার পাশে — এমন দুয়ার পাশে।"

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मुझे तो लगता है कि अनजाने में आपस में हुई इतनी देर की अपरिचित रहकर ही हमें कैसलनेस की बातों में भटकाने रहे और किसी दिन अनजाने में ही दोनों कहीं अलग हो जाएंगे ... मैं तो आपके गुणों के आकर्षण में एसा बँध गया कि सामान्य बोलने की कभी फुरसत ही नहीं मिली सच है मैं आपका हूँ ही कौन जो ..... "

यह अंतिम बात अधूरी ही रह गयी उसने मेरे होठों पर अपनी उँगलियाँ रखते हुए कहा, ऐसी बात नहीं बोलिए ... आप मेरे लिए क्या है यही तो मैं बोल नहीं सकती हूँ

इसे क्यों नहीं बोल सकती हैं? कोई कसम खायी हुई है क्या?

कसम अपने से नहीं ले लिए हैं .... किसी ने कसम दे रखी है।"

कौन है वह आदमी? आपके बहनोई के अलावा? वह कसम दिलाया है ... मुझसे नहीं मिलने की? मैं थोड़ा एक्साइटेड हो गया था मुझे लगा कि कहीं वह बहनोई मेरे साथ इसके बारे में बात करने से मना कर रहे थे जैसे कभी कोई दोस्त अतिरिक्त गंभीर होते हैं तो यह दोस्ताना अधिकार है उनपर यह बात मुझसे छिपाना नहीं चाहिए। मैंने कहा आपके घर के लोग अगर मेरे साथ बैठने बोलने से मना करते हैं तो आपको उनकी बात मान लेनी चाहिए और मुझे भी बता देना चाहिए। थोड़े मेरे साथ इतना बेरुखा आपको खुद रहकर नहीं करना चाहिए ... मेरे लिए यह अवस्था तो परिस्थितियाँ अलग थी। मैं वहाँ से चले जाने के लिए उठ खड़ा हुआ।

मुझे उनसे अपनेपन के लिए शिकायत हो गयी थी वह भी खुशी से पागल और मेरा हाथ पकड़कर बोली अरे ... तो इसमें इतने नाराज होने की क्या बात है ... न मेरे बहनोई ने किसी बात के लिए मना किया है और न मुझे किसी से परहेज है बात तो यह है कि मैं ने अपने दिल में ही अपने आप से कुछ ऐसे वादे कर रखे हैं जिसके कारण मैं चाहकर भी अपने मन की बात नहीं कह पाती हूँ ... मैं जानती हूँ कि आप मुझे अपने बारे में कुछ गलत सोच रहे होंगे। मैं आपको बिल्कुल सच सच बता देती हूँ ... आप मेरी बातों को ध्यान से सुनिएगा और मेरी मजबूरी को समझने की कोशिश कीजिएगा। मैं आपको कुछ ऐसी बात बताने जा रही हूँ जिसे यह दुनिया में कोई नहीं जानता है ... आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि मैं एक विधवा हूँ ... मेरे पति की मृत्यु हुए लगभग दो साल हो चुके हैं ... मेरे पति की मृत्यु एक दुर्घटना में हुई थी और उस समय मैं गर्भवती थी ... मेरे पति की मृत्यु के बाद मेरे ससुराल वालों ने मुझे बहुत प्रताड़ित किया

होता है उसको बड़ा आदमी कहा जाता है चाहे वह किसी जात का हो और जैसा कि पहलेही बता चुके थे हरिजन के पास अन्न भी धन जितना नहीं होता है आज के जमाने में भी वह वक्त पड़ने पर उधार लेता है और उसे चुकाकर खत्म करने के बाद भी अधिकतर भाग्य का सहारा होता है इस एक भी अन्न ग्रास को हासिल होने पर किसी बड़े घर में पैदा-संस्कार पाए जाइए तो संसार भर अन्न के बदले लोग एक सोने का सिक्का है ऐसे अन्न पर वाली लड़की प्रेम क्या जानने वाली वह भी पढ़ लिखे लोगों को ही होता है

इतना सोचकर वह कुछ देर चुप रही मुझे लगा उसके जीवन में ऐसी कोई घटना जरूर घटी होगी ऐसी बताना उसके लिए भारी होगी कुछ देर तक सिसकी रोकने के बाद मुँह नीचे किए हुए बोलना शुरू किया उसका समय-सारी पिछड़ा थी दूसरा घुसकर के परिवार में हरिजनों सिख से अन्न-पानी के छुआछूत के लिए को आने है इतनी ही सिद्धान्त बलवान के इस तरह से भी करनी पड़ती है मेरी मामी ने सोचकर खरीदकर मनाती थी लेकिन दूसरी औरतें दोपहर के समय बड़ा लम्बा लेकर अन्न और साड़ी में सूखी लकड़ी लेकर खाती आती थी एसा करते अगर किसी ने गाँव देख ले बहुत बोलेगा अन्न साड़ी वाले ने देख लेगा तो लगता छीन लेगा या फिर जो पत्र में होगा वह करेगा मेरी भी लकड़ी तोड़ने नहीं आती थी लेकिन साड़ी अनाती लड़कियों के साथ मैं कभी-कभी आती थी यह साड़ी मालकिन की थी इसके घर से हम लोगों को बहुत सहानुभूति था। मालकिन की एक ही बेटा हमसे दो-तीन साल बड़ा था लेकिन यह साड़ी अनाती नैहर का दस बीस बीघा आता था तो मैं उसके साथ साड़ी आती थी और यह भी लम्बा लेकर लिखती थी लाड़ देता था यह लोगों बाद में अन्न बनाती थी उसके एक देवर-सम्बन्ध मेरा चुम्बन ले लिया मुझे लगभग ही बहुत बड़ा लगा लेकिन लोगों के आगे कभी को बता देने का डर से मैं इसे को मालिक दुनिया भर मालिकों को चुप रह जाती इसे देने के बाद वह मेरे बहनों को मेरा बराबर आती लड़की लेकिन मैं भूल से उस बात पर मेरे लिए बिदा हुई तो उसने मेरा पैर पकड़ लिया और कहने हुए मेरा साड़ी लिया उसे मेरा मन पसीज गया लेकिन एक मेरे को भी ऐसी कुछ अच्छा लगा मुझे मेरे मन में भी हुआ कि देखें यह कौन कौशल जाना है कि लोग फिर उसकी साड़ी पास साड़ी मुझे बड़ी अच्छा देखकर उसने जाना कैसा लिए और दोनों को पिछवाड़े पीपल चली आने थोड़ी दूर चली गई तो उसने मेरे साथ शैतानी करने लगा मैं उसे रोकने की कोशिश जारी थी दोनों आदमी हाँफने लगे तो सोचे कि थोड़ा देर सुस्ताने के बाद फिर शुरू करेंगे इसी बीच में अचानक पीछे से आवाज आई ... मेरे मुँह से अचानक चीख निकल गया ... जैसे कुछ नहीं कहा लेकिन मेरा मन कैसा होने लगा वह छोड़ा मुझे पकड़े हुए उठकर खड़ा हो लेकिन उसका मन भी अचानकाशंकित हुआ था उसी समय सीन से अचानक लम्बा मोटा शरीर हट्टा-कट्टा आदमी... हाथ में लाठी लिए कानों में अचानक पैर गया वे लोगों से हुए मार्ग में मेरी और लोग मारे गए में अचानक लम्बा मोटा शरीर हट्टा-कट्टा आदमी लाठी लिए हुए बैठ गाड़ी हो गाली मेरे कान में अन्दर बैठ गाड़ी। मुझे कैसा हो गया कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि मुझे क्या हो गया है मैं कैसे हो गई हूँ मेरे साथ क्या हो रहा है मेरे मन में बार-बार यही सवाल उठ

कुछ नहीं बोली नानी को बता देने के बाद मेरा मन हल्का हो गया। बिछावन पर लेटते ही मैं नींद पड़ गयी।"

इतना बोल लेने के बाद बासमती अब निश्चिंत हो गयी थी उसने बोलना जारी रखा कलकत्ता से आकर नानी गाँव में रहने लगी लेकिन उसका रहन सहन महज कलकत्तिए रह गया। नानी एक छो तुलसीचौरा बना थीं उस चौरा पर साँझ में दीप जलाती थीं और सङ्गीत गाती थी कभी कभी मैं भी हाथ पैर धोकर सोझबाती करती थी उस दिन नानी सोझबाती करने के बाद गीत नहीं गायी और मुझे लेकर बैठ गयी मेरे बेवहार से नानी बहुत दुःखी थी, उसने मुझसे कहा हरिजन लड़की से दूसरी जात के लोग परेम के कारण नहीं सटते हैं अपने शरीर के लिए सटते हैं देह नोचने के बाद लोग फिर से गुँहकिलवा खड़ाकर अलग हँट जाते हैं तुम जो काम करने जा रही थी सो कुचाल है दुबारा किसी के साथ ऐसा काम नहीं करना। उसमें भी तुम ब्याहता लड़की हो तुम्हारा बाह बचपने में हो गया था अब समय पर गौना होगा क्या मुँह लेकर गौना करवाएगी? ब्याहता स्त्री अपर पुरुष के साथ ऐसा काम करती है तो उसके पति की जिन्दगी खतरे में पड़ जाती है इसका मतलब तो यही हुआ न कि अपने शरीर के लिए किसी बेकसूर आदमी का परान कोई ले ले इतना बोल के नानी रोने लगी उसको रोते देखकर मैं भी रोने लगी और मुझे रोते देखकर नानी और भी बेसहारा होने लगी उसने मेरा माथा पकड़कर गोद में रख लिया और वैसे ही थपकी देने लगी जैसा बचपन में गीत सुनाते समय करती थी। पता नहीं हमारे घर में कुल्हा नहीं चला मैं तो कुछ ही देर में भूख से नींद पड़ गयी लेकिन नानी चला नहीं कब तक नानी रही, सकाअ काफी सबार आसम, दीनेर हते दीन ... ।"

उस बासमती सुप हो गयी थी तभी जैसा बाहर का शीत एकबारगी रेला बनकर कमरे में घुस आया। इतनी देर से बोलते-बोलते वह एकदम पस्त हो गयी थी अनेक प्रकार की दृश्य संवेदना और ओला भरी रात्रि के अंतिमतम पहर में उसके मन मस्तिष्क को एकदम बाहुल किया था जैसे तेज हवा का झोंका कोयले के चूल्हे को धिपधिपा-धिपधिपा देता है। मैं एक कटोरे में पानी भरकर लाया और उसको ओर से लगा दिया पानी पीने के बाद फिर से उसने लेटकर वह सङ्गीतमयी लोरी गाई जो उसने अभी गाई थी उसका स्वर पहले से और दीप्त हो गया था मैं भी उसके साथ-साथ गुनगुनाने लगा तो उसने कहा, "जाने दो ... नानी का गीत नहीं सुनिएगा ... ?"

मैंने कहा आपका गीत सुनने के लिए तो मैं जीवन भर प्रतीक्षा कर सकता हूँ फिर किसी दरवाजे से हट जाने लगी उसके स्वर वैशिष्ट्य में नानी की आत्मा विश्वासपूर्ण गहरी दाढ़ी बनकर पसरती जा रही थी —

"सोधाअ आके सबार अधम दीनेर हते दीन
सेहरखाने पै जरम लोधार पाड़े
सबार पिछे. सबार नीचे.
सब—छारादेर नाची
परथम तोमाय प्रनाम करि आमि
प्रणाम आमार होलखाने याय आमि

तोमार चरण येथाय थामे अपमानेर तले
सेथाय आमार प्रणाम नामे ना ये,
सबार पिछे, सबार नीचे, सब-हारादेर माझे।
अहंकारे सो बाध ना लागाल येथाय तुमि फेर
चिरभूषण हीनदरिद्र साजे —
सबार पिछे सबार नीचे सब-हारादेर माझे।
संगी हओ आज येथाय तुमि संगीहीनेर घरे
सेथाय आमार हृदय नामे ना ये
सबार पिछे, सबार नीचे, सब-हारादेर माझे।"

[illegible] होने होने [illegible] भी [illegible] करने वाली [illegible] की तरह [illegible] पैरे [illegible] की [illegible] थे [illegible] उसके दोनों [illegible] को अपने हाथों में लेकर कहा तुम [illegible] रहा [illegible] हो उठी मैं जाने के लिए [illegible] आज कल सवेरे मुझे अपने [illegible] जाना है मैंने कहा कल मैं दक्षिण [illegible] जाऊंगा एक [illegible] लड़ेगा इस बीच आप लिखने पढ़ने का काम करते रहिए यह सुनी विदा [illegible] [illegible] पुत्र सात आदमी आ गए कोटरी में आग [illegible] भी [illegible] [illegible] था [illegible] [illegible] [illegible]

अलकपुर सिनेमाल का कलाकार एक सप्ताह के [illegible] पहले दिवंगत हो गया था। शहर का समाचार सेक्शन देखता था। बहुत कुछ ऐसा नहीं था। यही औरंगाबाद जाकर भी वे चित्रकारों के आने पर बेचैनी से आने वाले प्रयोग में लगी रहती थीं। वे [illegible] थे तो स्वभावतः वह अपने पहाड़ के सौंदर्य से अभिभूत थे और उसको सहयोग करते रहते थे। हमारे मन्त्री या सरकार के किसी भी विभाग को यह आवश्यक नहीं लगता था। भारत सरकार द्वारा बनाए गए इस स्थान को सहयोगी के लिए पैसा तक उपलब्ध कर दिया गया था और इसी कारण से इस कलाकार को यह सहयोग नहीं मिल पाया था।

मैं स्वयं किसी न किसी व्यावसायिक विकास और मुनाफे के लिए किसी की इस काम में सहायता से बहुत प्रसन्न था किंतु सामान्य सिनेमाघरों की खराब हालत पर सरकारी नीतियों को बदलने में मुझे ऐतराज था। मैं मानता था कि सपूर्ण सिनेमाघर में उस कला माध्यम का प्रभाव उत्पन्न हो और वह सिनेमाघर सिनेमाघर ही लगे। यह कला व्यापार के [illegible] प्रभावशाली [illegible] और विशेष रूप से सिनेमाघरों के [illegible] नहीं। [illegible] सिनेमा के प्रयास पर लिखने भर से [illegible] था। [illegible] किसी बात पर [illegible] बाबू विदेश व्यापार मंत्री थे और उन्हें मेरी बात [illegible] मैं [illegible] भारतीय [illegible] से सम्बन्धित किए गए [illegible] बारे में [illegible] कुछ लिखने [illegible] कला [illegible] को [illegible] कर दिया। लोग कहने लगे कि [illegible] [illegible] [illegible]

अधार में रफ़ले थे सामान रखने और पैकिंग करने का जिम्मा मैथिलीशरण कुमार को दिया गया। कुछ समय तक तो यह योजना चली लगा कि अब लाख भीड़ की अभाव में भूखे सो नहीं जाएंगे मगर यह काम ज्यादा दिन नहीं चल पाया अक्सर में लोगों की हालत अच्छी नहीं थी जो परिवार अधार लाता था वह अगले समय तक अनाज वापस नहीं कर पाता था।

एक बार स्वतंत्रता पूजा के मामले थे जो थोड़ा बहुत पैसा घर में जमा हुआ उससे पूजा का सामान खरीदने के लिए मुझे बाजार लहरेगा भेजा जाना था रास्ते में था तभी मैंने देखा दूसरी ओर से आता एक आदमी सड़क पर पड़े कुछ रुपए इकट्ठा कर रहा था मैंने सहसा कान लेना ये रुपए मेरे गिर गए थे

उस आदमी को विश्वास नहीं हुआ। जाँचने के लिए उसने मुझसे पूछा अच्छा बताओ कितने रुपए हैं और कौन नोट है मैंने अंदाजे से ही कह दिया बीस रुपए हैं दो या दस के नोट होंगे पक्की दो-चार बात नहीं तहरी थे इसलिए इस के दो नोट ही थे उस आदमी ने मुझे रुपए दे दिए मगर मैंने बिलकुल झूठ कहा था ये रुपए कितने मेरे नहीं थे मगर मैं इस बात से बहुत खुश था कि उन रुपयों से अब अनाथ स्वतंत्रता के लिए हमारे पास पर्याप्त रुपए हो गए थे बाजार से वापस आकर मैंने ने कागज अलेखों को देर तक मैं सुरक्षित जानकारी पर थोड़ी बहस जरूर हुई चौकिन लोग भूख से बचाने के लिए झूठ बोलने को बुरा नहीं मानते थे कि लिए हुए मैंने और अन्य स्वयं थे उस समय थाकर एक कपड़े में कुछ रोटी किसी ने दिये दो सब्जी और अचार की डिब्बा पेड़ रख दिया किसी भिखारी थे इस जिम्मेदारी से सभी सामान खरीदने के लिए बीस रुपए काफी थे लेकिन के भोजन के पुनर्वासक सभी व्यवस्था खरीद लिए गए और मेरे से सम्बन्ध परिवारों को हजारों रुपया दे दी गयी इस तरह बनावटी योजना को लम्बा चौड़ा कार्यक्रम परिवारों तक पहुँचाने था मैं सोचता था कि देश में लाखों-लाख दूसरी जाति के लोगों को भी भोजन लेकिन बाँटने वाला ऐसा कोई खाने थे मैं भूख के लड़ने से बचपन में अनाथालय में भूख सबों के लिए एक जैसी ही लगती है, मैंने सोचा। सभी सामान्य सभी के लिए एक-सा होना चाहिए।

आधी रात्रि के बाद मेरी नींद खुली। मेरी माँ की हालत बहुत खराब थी। उसे तेज बुखार और तीव्र दर्द की शिकायत थी। मैं उसे पास के अस्पताल ले गया। वहाँ डॉक्टर ने उसे भर्ती कर लिया। उसे मलेरिया हो गया था। मैं उसके पास बैठा रहा। सुबह होते-होते उसकी हालत में सुधार आने लगा। डॉक्टर ने कहा कि अब वह खतरे से बाहर है। मैं घर लौट आया। घर पर मेरी बहन और भाई मेरा इंतजार कर रहे थे। उन्होंने रात भर कुछ नहीं खाया था। मैंने उन्हें खाना खिलाया और खुद भी खाया। उसके बाद मैं सो गया।

आसान होता। मगर यह होता कैसे? सामूहिक स्तर पर सभी जातियों की स्त्रियों को साथ लेकर काम कर पाने की संभावना अभी में साफ नहीं हो पा रही थी। उस समय तक कहीं ऐसा देखा भी नहीं था। औरतों को सार्वजनिक तौर पर अपने घर से बाहर जाकर कुछ करने की अनुमति नहीं थी। बासमती बार-बार कहती थी सोचने में क्या लगता है? सोचने में कोई पैसा थोड़े लगता है। इस अर्थ में वह मुझसे बहुत आगे थी। उसने तो इतना तक सोच लिया था कि हम दोनों मिलकर गोदना चित्रों की पुस्तक बना लें ताकि मधुबनी की हरेकृष्ण स्त्रियों को चित्र बनाने में मदद हो सके। वैसे भी मेरे माथे पर पहले से ही सभी स्त्रियों को लिए उन्हें मजबूत करने के उपाय खोजने का जिम्मा सौंपकर लक्ष्मीपुत्र मर गयी थी। मगर यह किस्सा कुछ बाद में।

मेरी श्रीवर्णजी बोझा बहुत चित्रांकन के काम में शुरू से ही लगी हुई थी जब वह हमारे घर आयी थी। कभी कभी वह देशभर में लगने वाली प्रदर्शनी में भी मेरे चित्रों के रखरखाव से आना ले चुकी थी। मुझे जब कभी अवसर मिलता मैं अपनी पत्नी के चित्रों की देखभाल करने के लिए चित्रकला के बारीकियों पर बातचीत करता था किंतु तब किसी व्यापक परिवर्तन के काम में लाने के लिए सांगठनिक रूप से तैयार नहीं थी। मेरी दृष्टि में उनकी इस मानवीकरता का कारण उनके चेहरे का व्यवसाय ही था। वह अपने चेहरे से जो रोशनाकर आयी थी उसमें किसी व्यक्तिगत हेतु की बात थी। जितवारपुर सीमे या मधुबनी के किसी गांव में पले बढ़ते आज भी वहाँ कोई कलाकार व्यक्तिगत हेतु से ऊपर उठकर सोचने को तैयार नहीं है। शिक्षकारी के लिए शिक्षण इन गांवों में आज भी हालांकि ऐसी है कि कोई किसी को आसानी से कुछ सिखाने को तैयार नहीं होता है। साथ ही सच्चाई है कि वह सामने बैठे कलाकार से और आगे दूसरा कलाकार उसका चेहरा चित्र की शक्ति संरचना का विश्लेषण जाने लगता तो वैसा ही बनाने लगता और उसकी मौलिकता खत्म हो जाती। ऐसी मनोवैज्ञानिक बाधा कोई कलाकार सामने वाले को देखकर ही सिखा कर सकता है। बहुत बड़े समय तक मेरी दृष्टि भी ऐसी ही सीमित थी। लक्ष्मीपुत्र ने इसको दूर कर दिया।

लक्ष्मीपुत्र जन्मतः तो दलित थे मगर उनके माता-पिता ने उन्हें किसी भी तरह की हीनता ग्रंथि नहीं पनपने दी थी। उनके व्यक्तित्व में एक ऐसा सहज आत्मविश्वास था जो बहुत कम लोगों में होता है। वह जहां भी जाते थे अपने आसपास के लोगों को अपने जैसा बना लेते थे। मैं जब घर पर होता था तो वहीं आकर जमा हो जाते थे। उनके आने से मेरी श्रीवर्णजी बहुत दुःखी थीं। मुझसे घर उनको बर्दाश्त के एकांत में दखलंदाजी को वह सहकर जाने दिया करती थी। बाद में मुझे तो दिल्ली आने के बाद ही तब मालूम हुआ कि लक्ष्मीपुत्र के यहां पत्रिका को बनाने के लिए हमारे घर के बराबर से ही सहयोगात्मक समझौता हो गया था। मुझे याद नहीं श्रीवर्णजी ने मेरी पत्नी को कैसे कब विश्वास में लिया था जैसे उसे समझाया कि इस संसार को सुन्दर बनाने के लिए सबको है कि स्त्रियों का सामाजिक मूल्य बढ़े। बराबर सहभागिता किस तरह से पहले के साथ-साथ हो। मेरी पत्नी को किसी कार्यक्रम से जोड़ना आसान नहीं था। मेरे कई कार्यक्रमों में भी आने पर उन्हें मेरे साथ बैठना अच्छा नहीं लगता था। अब यह मेरे व्यवहार से खत्म हो गयी। हम लोगों ने साथ मिलकर स्त्रियों के लिए, कई कार्यक्रम चलाए थे।

मैं कई महीने बाद कलकत्ता से लौटकर आया था। लेकिन कुछ बात मैंने नहीं पहचान ली। कुछ किसी के व्यवहार में आया नहीं। मेरा घर छोटे बड़े कई कमरों का था। मेरे कमरे से लेकर लक्ष्मीपुत्र तक के छोटे बड़े कमरों में लक्ष्मीपुत्र, मेरे और मेरे बच्चों की बड़ी

थे। मुझे अब साफ दिखने लगा था कि आंदोलन कैसा मोड़ ले रहा था और छात्रनेता और नेपी भक्त से चाहते थे अब आंदोलन का संचालन राजनीतिज्ञों के हाथ में चला गया था। मुझे अनायास ही मेरे मन में एक झटका सा लगा। मुझे सरस्वती की बात का अर्थ अब समझ में आने लगा था। आखिर ये बड़े नेता हैं ये सब नया जमाना के आका हैं। पहले वाले आकाओं से ज्यादा झूठे और खतरनाक। इन में भी जो करीब हैं वो कटे नेता का झंडा लेकर हलचल करते फिरते हैं। मुझे लगा सरस्वती ठीक ही कहती है। ये लोग आंदोलन से फायदा उठा लेंगे लेकिन जनता की संपूर्ण क्रांति का सपना पूरा नहीं होने देंगे। इस बोध ने मुझे सक्रिय आंदोलन से हटाकर आत्मशुद्धि के करीब ला दिया। उसके विचार आदर्श रहो लगने लगे। अपनी बहन की तरक्कीशुदा सोच भी कमजोर थी। ये सब मरीचिका का भ्रम टूटने नहीं देंगे। इस बीच मैंने आंदोलनकारी आपने परिवार और जिला के साथ छुट्टी लेते थे और तसवे हिन्दू अलकपुर के लिए विदा हो गया।

अलकपुर से थोड़े समय में सरस्वती की दुकान पर जाकर मिला था और पूछा था कि अगर यहां से कुछ मैटीरियल चाहती हो तो ला दूँगा। शहर में खादी के बने पॉलिएस्टर और दूसरे सामान तो बहुत दाम्पते थे। मुझे मालूम था कि गांवों में खादी के कपड़ों की बहुत मांग है। उसने मुझे थोड़ा कपड़ा दिया था और उसकी कीमत के बारे में पूछा था। फिर शहीद का हौसले वाला गांव जैसा कि बहनजी स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान था। मैंने दुकान से कपड़ा ही लिया। तकरीबन दो महीनों में आंदोलन के लिए हुई गिरफ्तारियों के बाद दुकान को यहां दोबारा खोलने की कुछ भी कोशिश नहीं की गई थी। उसका बहुत नुकसान हुआ था। स्वतंत्रता के बाद भी कुछ लोगों ने दुकान की मरम्मत नहीं की थी। मैंने कपड़ा लिया और पैसे दिए। उसने मुझे थोड़ा रुकने को कहा। वह घर के अंदर गई। मैंने सोचा कि शायद कुछ खाने को लाएगी। मैंने मना कर दिया। वह घर से बाहर आई और मुझे एक पैकेट दिया। मैंने पूछा कि क्या है। उसने कहा कि कुछ नहीं, बस थोड़ा सा घी है। मैंने कहा कि मैं घी नहीं खाता। उसने कहा कि यह घी नहीं है। मैंने पैकेट खोला तो उसमें घी था

[illegible] का भी ऐसा [illegible] है मैं भी तो नौकरी कर ही रहा हूँ नौकरी [illegible] करते हुए [illegible] लोगों के लिए ही न [illegible] यह सुनकर बहुत अच्छा लगा [illegible] भी मेरी अपनी है दूसरा अस्पताल में [illegible] [illegible] और अच्छे रिश्ते की उम्मीद से फ़ौरन ही [illegible] बात पक्की [illegible] लड़का और उसके माता पिता [illegible] हो गये थे [illegible] सिर्फ़ [illegible] वह सिगरेट का डब्बा [illegible] यह भी गलत बात है [illegible] इतना सोचकर उसने एक [illegible] सिगरेट मुँह में [illegible] भी एक बड़ा टुकड़ा तश्तरी में रख दिया [illegible] इस बात पर हम सभी [illegible] हँसने लगे [illegible] समय सेवा की फ़ाइल पोस्ट करने [illegible] और तब याद आने लगा है [illegible] लगे ऐसा पहली बार देखे थे वह समझ गयी

[illegible] [illegible] इसीलिए न [illegible] दिए ... !!

[illegible] [illegible] के लिये [illegible] है [illegible] [illegible] [illegible]

बार बार कुछ कह रहा है। मैंने पीछे पलटकर देखा उसका हाथ में भारतमाता रंग का एक रुमाल था। रुमाल के खूँट में गिरह देकर वह मेरी पीठ पर हल्के से मार रही थी। मैंने उसकी ओर ताका तो उसने कहा तुम हिंदुस्तानी हो मुझे बहुत अच्छा लगा, लेकिन पता नहीं उसकी बातों में मैं कैसे आ गया। अपनी कॉपी उतारकर मैं उसे दिखलाने लगा। जब घंटी बजी तो मास्टर के सब सवालों की कॉपी ले लिए। सभी विद्यार्थी बाहर निकलने लगे। मेरे पीछे वह भी निकला रही थी। जब पलास के पेड़ पर आए तो उसने मेरा हाथ पकड़ लिया और झटककर बाहर निकलने लगी। मैं इतना लजा गया कि वहीं ठिठककर रह गया।

फिर फिर दूसरे दिन कुछ हुआ कि नहीं? बासमती उत्सुकता से पूछी

दूसरे दिन सवेरे जब घंटी नहीं लगी थी। सभी कोई बाहर में खड़े थे वह मेरे बगल में आकर खड़ी हो गयी। जब घंटी लगी तो सब कोई बड़बड़ाते हुए क्लास में घुसे। मैं उससे लजाता था। इसलिए खड़ा ही रह गया। जब सब कोई चले गए तो उसने मुझसे कहा, आज भी दिखलाना। मैंने उसे कुछ नहीं कहा और अपने स्थान पर आकर बैठ गया। पहले कॉपी पर नाम, तिथि और विषय लिखे तब ध्यान से प्रश्नपत्र पढ़े। सभी प्रश्न बहुत आसान थे। मैं झटपट लिखने में लग गया। जब थोड़ा लिख्ता हो गया तब उसने रुमाल से मेरी पीठ पर इशारा किया। मैंने उसकी ओर ताका तो नहीं लेकिन कॉपी खसका दिया। कुछ देर बाद मैंने उसकी ओर देखा तो उसने मुँह चिढ़ियाकर इशारा कर दिया। मैं समझ गया और फिर से लिखने लगा। बाद में मैं अपने अंदाजे से ही उसे दिखलाता रहा। वह हर हर उत्तर लेती थी और लिख जाने के बाद पीठ पर रुमाल मारकर बता देती थी। जब घंटी बजी तो सब कोई एक साथ झुंड में निकलने लगे उस भीड़ में उसने मेरा हाथ पकड़ लिया। यह तो बहुत मुश्किल बात थी। मैं थोड़ा दूसरी ओर घुसक गया वह भीड़ से ठेलाकर बाहर चली गयी।"

बासमती बात में बहुत रस ले रही थी उसे रुका नहीं गया, आगे फिर क्या हुआ?'

"फिर क्या होगा ... जो ऐसे में होना है अगले दिन वह मुझसे पहले आकर क्लास के गेट पर खड़ी थी। मैं उसके पास नहीं गया और बाहर में रखे एक बेंच पर बैठ गया। वह मेरे सामने आकर खड़ी हो गयी और बोली जरा फल चलो दो न। मैंने कहा कुछ नहीं उठकर चला गया तो वह भी मेरे फल की तरफ बढ़ी। मैं फल खाने लगा उसने झोले से फल का गैस बंद करके उसमें अपना मुँह लगा लिया। मगर वह पानी पी नहीं रही थी उँगली के छेद से पानी बाहर फेंक रही थी। मुझे गुस्सा आ गया। मैंने फल खाना छोड़ दिया और अपनी सीट पर आकर बैठ गया।

"वह कितनी बड़ी थी .... मानें सयानी थी क्या?"

"मैंने अपने ढंग से बासमती का भाव समझाकर कहा, मैं सोलह बरस का था और वह भी उतने की ही रही होगी, लेकिन वह स्कूल के फारम में मुझसे छः महीने बड़ी लिखी थी उसका सब कुछ मुझसे छोटा था।" मेरे कहने का ढंग कुछ ऐसा था कि उसे हँसी आ गयी, मैं भी बहुत हँसा। हँसी थमने पर बासमती ने फिर टोका, "फिर कैसे क्या हुआ?"

"फिर हुआ परीक्षा खत्म होने के बाद जिस दिन रिजल्ट निकला, मैं भी पास हो गया, वह भी पास हो गयी। रिजल्ट सुनने के बाद वह मेरे पास आयी और बोली 'तुमही ने मुझे पास करा दिया तुम

कॉपी नहीं दिखलाने तो मैं कुछ नहीं लिख पाती। उसके मुँह पर अनुराग का भाव देखकर मेरे मन के हुर्ष का ठिकाना न रहा। मैंने लड़की ओर नजर भर ताका। अपनी ओर ताकते हुए देखकर उसने कहा "कल दिन भर तुमने आज ही मेरी ओर देखा है। अब बोलोगे कि नहीं?" किंतु कंठस्वर ही कहा। उसने इधर उधर देखकर मेरा हाथ पकड़ लिया। मुझे बुरा नहीं लगा।"

बासमती की उत्सुकता बढ़ती। वही थी वह आखिरी किसी परिणति पर पहुँचना चाहती थी। उसने कहा "इसके बाद तो ठीक से बातचीत होती होगी?"

वह लड़की तो हर ही रोज आती थी लेकिन वह कहीं बैठकर बतियाना चाहती थी सो नहीं हो पाता था। वह जो स्कूल आती थी तो कभी कभी वह थैले में कुछ कपड़े लाती थी और रिसेस के समय में या छुट्टी होने पर कहीं से आती थी। फिर किसी दिन वह कपड़े वापस ले जाती थी। उन कपड़ों पर मुझे धागे से कशीदा किया रहता था। एक दिन उसने वह रूमाल दिखलाया। कशीदा के काम बहुत नफीस और महीन थे। लगता था जैसे किसी मकड़ी ने अपने लार से नक्श तरह की टेढ़ी बात का काम कर दिया हो। बहुत जिद करने पर उसने बतलाया कि आपने स्कूल और घरवाले स्कूल के बीच में जो एकलौता मंदिर है उसके पीछे वाली है। वहीं के घर पर रहती है। कशीदा का यह काम उसी घर में रहने वाली तीन बहनें मिलकर करती हैं। तीनों बहनों के नाम जयंती, जुबैदा और नक्षत्रमुनि है। नक्षत्रमुनि सबसे छोटी थी। उसका बाप रिक्शा चलाता था और वो दो तीन घंटों में चौका बरतन करती थी। उसके यहाँ किसी पुरुष या लड़कों का जाना मना था।"

बासमती को यह बात [illegible]

पूछो उस [illegible] जिंदगी के जिंदगी कायनात एक [illegible] हमेशा ही [illegible] हमेशा बाप की [illegible] और वो कि [illegible] मेरा [illegible] बाद [illegible] दिन [illegible] अपने [illegible] करती [illegible] वह [illegible] मकान [illegible] दूसरी बात [illegible] कि [illegible] के [illegible] [illegible] को [illegible] [illegible] [illegible]

मेरे मुँह पर ताकती रही, बोली नहीं कुछ।

पिछली रात लक्ष्मण की पत्नी ने उसे बिलकुल ठीक नहीं खाया था। बहुत देर तक चिंतित पड़े रहे थे। वे ही बैठे थे। उन्होंने उसके लिए दूध गरम करके रखा था। उसे उठाकर उसने दूध पिलाया। उसके बाद उसने उसे सुला दिया। सुबह उठकर उसने देखा कि लक्ष्मण की तबीयत और खराब हो गई है। उसे बुखार आ गया है। उसने तुरंत ही अपने पड़ोसी रहीम पठान से इस बारे में बात की। रहीम ने उसे सलाह दी कि वह लक्ष्मण को अस्पताल ले जाए। उसने लक्ष्मण को उठाया और उसे अस्पताल ले गया। वहाँ डॉक्टर ने उसे दवा दी और कहा कि उसे आराम करना चाहिए। उसने लक्ष्मण को घर ले आया और उसे दवा दी। लक्ष्मण को आराम मिला और वह सो गया। उसने सोचा कि अब उसे कुछ नहीं होगा। वह निश्चिंत होकर अपने काम में लग गया।

दिन में एक बजे के करीब लक्ष्मण की तबीयत फिर से खराब हो गई। उसे फिर से बुखार आ गया। उसने फिर से रहीम को बुलाया। रहीम ने कहा कि उसे फिर से अस्पताल ले जाना चाहिए। उसने लक्ष्मण को उठाया और उसे अस्पताल ले गया। वहाँ डॉक्टर ने उसे दवा दी और कहा कि उसे आराम करना चाहिए। उसने लक्ष्मण को घर ले आया और उसे दवा दी। लक्ष्मण को आराम मिला और वह सो गया। उसने सोचा कि अब उसे कुछ नहीं होगा। वह निश्चिंत होकर अपने काम में लग गया।

शाम को लक्ष्मण की तबीयत फिर से खराब हो गई। उसे फिर से बुखार आ गया। उसने फिर से रहीम को बुलाया। रहीम ने कहा कि उसे फिर से अस्पताल ले जाना चाहिए। उसने लक्ष्मण को उठाया और उसे अस्पताल ले गया। वहाँ डॉक्टर ने उसे दवा दी और कहा कि उसे आराम करना चाहिए। उसने लक्ष्मण को घर ले आया और उसे दवा दी। लक्ष्मण को आराम मिला और वह सो गया। उसने सोचा कि अब उसे कुछ नहीं होगा। वह निश्चिंत होकर अपने काम में लग गया।

वह लड़की चुपचाप सब सुनती रही थी। फिर वह वहाँ से धीरे-धीरे चलती हुई [illegible] कपड़ा पहनेगा तब न वो ...।"

[illegible]

[illegible]

[illegible]

दुखद घटना की खबर ही नहीं कि आप दुखी मन से ही चले गए मैं समझती हूँ कि ऐसे मन में आप खाए भी नहीं होंगे।"

आपने ठीक ही सोचा जब मेरा मन दुखी रहता है मैं खाना नहीं खाता हूँ

"ऐसे क्यों? तब तो मन के दुख के साथ पेट का दुख भी हो गया

मैं समझाता हूँ कि जब मन दुखी रहता है तब शरीर की मशीन भी ठीक से काम नहीं करती हालाँकि दुखी मन से खाना खाने से नुकसान ही हो सकता है। अपनी आदत सोच है मैं ऐसा करने से ही स्वस्थ रहता हूँ मेरे पिताजी कहते हैं कि कुछ लोग जीने के लिए खाते हैं जबकि ज्यादातर लोग खाने के लिए जीते हैं।"

बापू जी तो ज्ञान की बात बता रहे हैं लेकिन मैं जितने लोगों को जानती हूँ वे मन खाने के लिए ही मर जाते हैं कहना है कि जिसको नसीब में जो रहता है सो भोगना ही पड़ता है

दरअसल आपने नसीब वाली जो बात कही है वही बात ज्यादातर लोग समझाते हैं लेकिन यही उनको पिछड़ा बनाए रखने की साजिश है। सच तो यही है जैसी परिस्थिति होती है इंसान उसी के अनुसार ही सोच सकता है। आदमी यह बात भला कैसे सोच सकता है कि कोई भी व्यक्ति नसीब के कारण ही गरीब या अमीर नहीं होता है और कोई भी नसीब के कारण ही छोटी जाति में जन्म लेता है। सच तो यह है कि आजादी के इतने वर्षों बाद भी हमारे देश में ऐसी व्यवस्था कायम है जिसमें बड़े पैमाने पर लोग गरीब और छोटी जाति के घर में पैदा होते हैं। उनके पूर्वजन्म में तो बड़े-बड़े लोग खड़े नहीं हो पाते हैं। फिर नसीब कैसा अच्छा हो सकता? जगजीवन बाबू का नाम सुने हैं?

आजादी की लड़ाई लड़ने वाले एक बड़े नेता थे। मैं तो उनके बारे में ज्यादा कुछ नहीं जानती हूँ लेकिन इतना जरूर जानती हूँ कि वह दलित समाज के थे और सरकार चलाते थे।

यही समझिए। उनको लेकर लोग बापू जी कहते हैं वे पुरानी बात लेकर बिलावजह आगे बढ़े तो मौका हाथ लग गया और बढ़ते बढ़ते इतने बड़े हो गए। यह बात आप ठीक से समझ लीजिए कि ऐसा कोई भगवान नहीं होता है जो स्वर्ग से डिक्टेट करके लोगों का भाग्य नसीब लिखवाता हो। यही की हालत पर समय से खराब हो गयी जब बाहर से आने वाले लोगों ने युद्ध में जीतकर यहाँ के लोगों को गुलाम बना लिया और जाति प्रथा के नियम बनाकर अपने लोगों को श्रेष्ठ और बाकी लोगों को हेय घृणित करने लगे। यह बात सभी पिछड़े लोगों को जान लेना चाहिए कि जाति के आधार पर कोई किसी से ऊँच या नीचा नहीं होता है अगर किसी ने कभी यह नियम बनाया था उसे मानना आज जरूरी नहीं है। जाति के आधार पर ऊँच नीच का भेद किसी के नसीब की वजह नहीं बल्कि राजनीतिक परिस्थिति का परिणाम है। मैं तो बार बार कह रहा हूँ कि करीब चार हजार वर्ष पहले बाहर से आए कुछ ताकतवर लोग यहाँ के लोगों को हराकर उनको नीच कहकर उनकी धन सम्पदा का हरण कर लिया उनकी स्वतंत्रता छीन ली पढ़ाई लिखाई पर रोक लगा दी और चाबुक मार मारकर उनसे काम कराता रहा जैसे बैल को चाबुक मारकर बलवान गाड़ी खिंचवाता है। अब समय आने पर आपको भी बच्चा होगा उसका भाग्य नसीब आप लिखिएगा अगर उसका बचपन खेल में खोजिएगा अच्छी पढ़ाई करवाइएगा तो उसका भाग्य भी अच्छा होगा लेकिन अपने समाज से

जाति-पाँति के आधार पर लगी छुआ-छूत की बीमारी आसानी से जाने वाली नहीं है। अब तक अन्याय पर आधारित गलत धार्मिक किस्से और उन किस्सों के पेट से जन्मे झूठे कर्म-काण्ड वाले पोथी-पतरा को रद्दी-कबाड़ी में फेंक नहीं दिया जाएगा ऐसी हालत अभी भी नहीं है।

ज्ञान में लग जाने के कारण हाथ धोना भूल गए थे। अंग्रेजी का रस अभी भी उँगलियों को लसपसा रहा था। उसे भी धोना था। पानी गीला। कुल्ला किए और पेशाब करने के लिए बाहर निकल आए। शहर से आकर जब बैठे तो बासमती ने ऐसा प्रसंग छेड़ दिया जिस पर पहले कभी बैठे विचार नहीं किया था। उसने कहा, 'लक्ष्मण के बारे में जानकर बहुत दुख हुआ। अब यह लौटकर तो नहीं आएगी लेकिन जैसे आखिरी समय में आपने जो कहा उसे पर अवश्य विचार करना चाहिए।'

कुछ भी बात बोलकर बासमती मेरे मुँह पर ताकने लगी। यह सच है कि मैंने लक्ष्मण से ज्यादा तो कर दिया था लेकिन इस विषय पर पहले कभी सोचा तक नहीं था। वैसे जोगिया से इस बात की चर्चा तो कई बार हुई लेकिन ऐसा क्या किया जाए कि लड़कियों का सशक्तिकरण हो। यह हमारी समझ में नहीं आ रहा था। लगभग दस वर्षों के बाद अब नेत्र बासमती ने इस विषय पर टोका तो मेरा सिर झनझना बोध से भर गया। मैंने कहा, 'आज से पहले मैं इस पर विचार करने के लिए तैयार नहीं हुआ। लेकिन अच्छी बात यह है कि इस विषय को मैं इतना भारी मान रहा था कि इस पर सोचने का साहस ही नहीं हुआ। अब अगर दो आदमी मिलकर विचारेंगे तो हो सकता है कि कुछ समझ भी बने और धीरे-धीरे कोई उपाय भी नजर आ जाए। समाज के किसी चलन को बदलने की शुरुआत कहाँ से होती है, इसकी जड़ में विचार उछालने होते हैं। विचार करने वाले के सोचना किसी समस्या को जिस रूप में पकड़ता है निदान के उपाय भी उसी तरह के होते हैं।

मेरे इस बात पर बासमती और ज्यादा कुछ नहीं समझी। [illegible] कहा, 'कुछ तो मैं समझा यही कि आखिर किसी चलन को कोई उपाय निकालने में [illegible] आपकी बात भी बासमती, मैं तो ठीक से नहीं समझी [illegible]।'

[illegible] के बारे में ही बात करते [illegible] मैंने कहा, 'ऋतु-चक्र में ही [illegible] औरतें हैं, समझने वाला [illegible] है। इसको वैज्ञानिकता भी कह [illegible] है। [illegible] कोई [illegible] है। उसी समय यह गंदा [illegible] है। इसी वजह से [illegible] रहने पर छूत भी [illegible] है। इसे खत्म करने [illegible] है और यार दिनों के बाद घाने वाले समय को [illegible] कहा जाता है।

बासमती बीच में ही टोक दिया, 'ऋतुचक्र माने क्या होता है?'

ऋतु का दो ही माने होता है। ऋतु माने मौसम भी होता है जैसे गर्मी, बरसात और चार दिन के मासिकचक्र के बाद अगले बारह दिन के समय को भी ऋतुचक्र या ऋतुकाल कहा जाता है। जानने वाले लोग कहते हैं कि ऋतुकाल में अगर स्त्री-पुरुष संभोग करते हैं तो गर्भ ठहरने की संभावना अधिक रहती है।'

मैंने बातचीत के क्रम में अंग्रेजी का एक शब्द 'सेक्स' जो बोल दिया सो तब नहीं समझी। उसने सुरत टोका, 'आपने फिर क्या कह दिया। सिक्स करना है, सो नहीं समझे।

मुझे हंसी आ गयी मैंने कहा आपने तो गिलहरी भी ला दी और फाइव स्टेयर होटल की सर समझ गयी सिक्स स्टार का है लेकिन मैंने सोचा कहने में गलत की अंग्रेजी का शब्द है इस शब्द को भी ये अपने ढंग से प्रयोग करते हैं एक तो पान होता है सिंगल जैसे कि कोई आदमी सिंगल है ॥ इसका मान लीजिए कि आप किसी तरह का सरकारी फार्म भरिए या बैंक में खाता खोलना चाहें तो उसमें पूछा जाता है कि आपका लिंग क्या है याने आप पुरुष हैं या स्त्री चूंकि बातचीत में सब संक्षेप बोलते हैं या इसे भांपते हुए स्त्री पुरुष का संक्षेप करना जैसा आपको लगता है वैसा आपकी लेखन में प्रयोग हो और सामिन नाजनी शब्द किस्म में बसाया था खैर मैं मुझे आपसे ऐसी बात कहने में संकोच हो रहा था इसलिए आपसे ही कह दिए एक बार आपने बताया था कि आपकी हाथी लोक का भला करना है वहां हुआ सेवक का भला उगाना आपके लिए चाहे बकवास पैदा करने के लिए स्त्री पुरुष का खेल

इतना फरमाकर कहने से बाबाजी सभी बात ठीक से समझाने में रहे थी इसमें पहले वाली बात साफ करते हुए कहा यह बात भी समझ थी कि तीर बात बताइए जिस पर आप झुके हुए थे

तबस्सुम फानी बाबा ... ।"

बाबा के चेहरे पर मुस्कान आई और उन्होंने अपने दोनों हाथ ऊपर उठाते हुए कहा "तबस्सुम फानी एक ऐसी शख्सियत है जिसने अपने जीवन में कभी भी किसी का बुरा नहीं चाहा और हमेशा दूसरों के काम आने की कोशिश की है। इसलिए मैं यह कह सकता हूँ कि वह किसी संकट में नहीं फँसेगी और उसे जान नहीं गँवाना पड़ेगा।"

"आप उस समय क्या बात कर रहे थे?"

मैं ने फिर भी आगे [illegible] बाबा ने मेरी ओर देखा और फिर उन्होंने कहा कि [illegible] जाने की बात हुई थी [illegible] मैंने कहा था कि [illegible] इस पर बाबा ने कहा कि [illegible]

[illegible]

[illegible]

रमाकांत पहलवान स्वीकृति बार बेटा उसने आपने घर में मेरे बाँ म बात रखा था मैंने इस भी परीक्षा में सफल की थी वह बात भी इसने अपनी दादी को बताया था जिसिया अपने हस्तर के घर म भी मुझे अच्छी रहेगी औ उसके माता-पिता व्यवहार करने थे रमाकांत दादी बहने पेशेवाकार की रिटायर होने के बाद वाली अन पैसा वाले लड़का से संबंधों के कारण करने लगी रमाकांत बहुत सारे परिवारों को मिलकर एक सामूहिक भोज योजित की। मोहल्ले भवन निर्माण के लिए स्वास्थ्य और शिक्षा का सम्मिलित बहुत लड़के के काम करता था। वह जंगल से पुराने लकड़े बटोरकर लाया करते थे और उन्हें बेचकर अपने बच्चों को दूध रोटी खिलाते थे। उनके पास न कपड़ा पहनने लायक नहीं हो। था कपड़ा खरीदने का अभाव खलता था रमाकांत पास न रिश्वतखोरी पर्याप्त भी होती। ना कपड़ा पहनने लायक नहीं हो। था रमाकांत खाना खाकर औरतों के ना करती थी। मोहल्ले भोजन होने पैसा के हर परिवार को होती होती। उसके पिता कपड़े के व्यापार होता था और बैठते थे। कुछ दो कपड़े लेकर वह जाकर मोहल्ले के लोग खास बात बताना चाहते थे। जिसिया भी उन्हें अपनी की बातचीत की और दादी के काम में सहयोग करती थी। उसका घर झोपड़पट्टी मोहल्ले में था। रमाकांत के घर मुझे पिछे मैं इस बात दरवाजेपर टीका पर रहेंगे आपका और पास से मेरा पिता मुझे अपने घर ले जाएगा

उस दिनों मैं स्कूली और पढ़ाकरने पढ़ता था। पढ़ाई तो मेरे पास नहीं थी लेकिन उस से मैं अच्छे नंबर से पास होता है मैं अपने कक्षाओं का पहले विद्यार्थी था। मैं उस समय दूसरी कक्षा में पढ़ता था। मेरे पिता मेरे दरवाजेपर टीका पर रहेंगे आपका और पास से मेरा पिता मुझे अपने घर ले जाएगा

हो था।"

बाहर चली गयी। बरसों में भीगने के बाद फिर से स्नान करने पर शरीर इतना हल्का हो गया था कि बिछावन पर पड़ते ही नींद आ गयी। काफ़ी देर आँख लगी होगी कि जोगेश्वरी और उसकी नौकरानी ढेर सारा भोजन लेकर आ गयीं। दोनों खा भी रही थीं और बतिया भी रही थीं। भोजन के बाद जोगेश्वरी मुझे लेकर नदी के पास आ गयी।

नदी के बरामदे पर करीब बीस लड़कियाँ और लड़कियाँ बैठी हुई थीं। दाढ़ी बाबर से आयी एक महिला उन सबसे बातें कर रही थी। उस महिला के आगे में एक डी अटका रखा हुआ था जिसपर मुझे लगा कि वह डायरी थी। जोगेश्वरी ने झुक के थोड़ा झलक एक कुरसी मेरे लिए रख दी और दादी के पास चली गयी। कुछ देर के बाद तसिया एवं दरिंदर पर आयी हुई औरतों से दरख़्वास्त करना रही थी। मैंने गौर किया कि बहुत सी औरतों को अपने साथ लिखने में कठिनाई हो रही थी। कुछ तो बिलकुल निरक्षर थीं। इसके बाद दादी ने एक दिन की निश्चित अवधि में शौच का परिचय कराया। वह महिला दरअसल कोलकाता में पढ़ाती थी। डायरी के बारे और बच्चों के स्वास्थ्य से संबंधित बहुत काम काफ़ी गंभीर। उनकी आवाज़ और व्यक्तित्व में था और स्त्रियों के आत्मविश्वास पर थे। उनकी बहुत बातें अब याद नहीं हैं लेकिन जो कुछ आज भी याद है वह पहली बार कैसे सुना था।"

डायरी में बताया कि स्त्रियों के साथ मासिकधर्म या माहवारी क्यों होता तो यह असंभव नहीं होता। माहवारी होने के कारण हमारे मास या स्त्रियों के शरीर से रक्त स्राव होता है। यह स्राव हमारा शरीर हर महीने में करीब एक सप्ताह के लिए करता है। यह रक्त हमारे गर्भाशय में एकत्र होता है और हमारे शरीर को बच्चे के जन्म के लिए तैयार करता है। [illegible] यदि [illegible] के कारण [illegible] नहीं होता है तो [illegible] हमारे शरीर में [illegible] के कारण [illegible] हमारे [illegible] के [illegible] के [illegible] के

पड़ियाँ बाँटने का इशारा किया। जब सभी औरतें चली गयीं तो दादी मुझे अपने पास बुलाकर बहुत बतियायीं। रास्ते चौकन्नी रहने की हिदायत देने लगीं। सिखाई देने के बाद मुझे विदा करने जोगिया बहुत दूर तक साथ आयी। हमारे गाँव के सिवाने तक।"

आरुषजी मेरी बात एकाग्र से सुन रही थीं। मैंने जब बोलना बंद कर दिया तब भी वह चुप ही थीं। मुझे लगा कि वह किसी बात पर विचार कर रही हैं। पहले से तय करके मैं बोल नहीं रहा था। मैं पश्चात्ताप करने बाहर चला गया। लौटकर से भुरा तब भी वह वहीं उसी मुद्रा में बैठी थीं। मैंने पूछा, "मेरी बातों पर सोच रही हैं? मैंने कुछ अंडबंड कह दिया क्या?"

उसके जवाब में कोई शब्द नहीं था। लेकिन मैं उसकी मनोस्थिति समझ सकता था। उसने कहा, "आप जो भी बोलते हैं वह मेरे लिए बिल्कुल नयी बात नहीं होती है। बस, किसी लोगों के बारे में आप बताएँ। आपने जहाँ की औरत समझ लिया, वहाँ की औरत भी वैसी ही होती है। और किसी औरत को वह बात सोचना भी बुरा लगता है। इसे तो हम मरद लोग ने ही नियम बना दिया, वह हमारे लिए है, यह औरत का नियम है। मरद होने के नाते उसके बारे में जो सोचेंगे वही सच्चाई है। अब किसी जंगल को समझने के लिए तो पेड़ों की [illegible] पड़ी। उसने पैर पानी पर फैलाकर उसे चलाना शुरू कर दिया था। फिर उसका हाथ पकड़कर आगे बढ़ाते दिखलाते हुए पूछा, "कोई ऐसी खास बात हो गयी है क्या?

उसने बुझे स्वर में कहा, "ऐसा तो कोई बात नहीं [illegible] हमारे गाँव में पुरुषों के जब औरतों वाला रूप में घुसकर झुंड में गीत गाते, अलमुनिया का हँसिया, चमड़ा लेकर और चौक में घूमकर घोंघा-कवला जमा करती हैं। ... छाती भर पानी में डूबकर मरकाहा, बजरबट्टू नया कवला है और चार-पाँच घंटा पानी-कादो में बीताने के बाद गीत गाते घर लौटती है। तीन मुआ कपड़ा भरही बेड़ में ही सूख जाता है। एक तो कहती है, जो नंगे [illegible] पछाड़ेगा क्या? उसको है ही कितनी साड़ी कि एक तो को खाय करके सुखाएगी और दूसरी [illegible] जब चौथ में [illegible] है तो भुखाए कपड़े को सूख पिलाने बैठ जाती है... बच्चा सरदियायी हुई [illegible] दूध देता है और भी [illegible] है... और अगर गर्भिणवाली हो गया तो भी उसी साड़ी में [illegible] पड़ता है। [illegible] घर में फटा पुराना [illegible] तो वह [illegible] [illegible] दिखलाते खाली दूसरा मुसहर को नहीं है... गरीब-बेहाल में ऐसी [illegible] लड़की-औरत है जिसकी हालत ऐसी ही है। लगता है कि सरकार गरीब और हरिजन सब को बहुत मदद करती है तो सरकार को ऐसी बात नहीं सूझती है। उसको लगा इतना कपड़ा नहीं है तो गरीब औरतों को यह पक्षी बेकार इज्जत बचाने।

इतनी बात बोलकर आरुषजी चुप हो गयीं। उसका मन बहुत बोझिल हो गया था। मैं अब चलें नहीं सकता था, बहुत देर हो गयी थी। मैं विदा होने के लिए खड़ा हुआ तो वह भी मेरे साथ ही खड़ी हुई। मैंने उसकी ओर ताका तो लगा कि वह कुछ कहना चाहती थी। मैंने पूछा तो उसने बताया कि कल उसे खुद सिलाई का काम पड़ेगा। लगा नहीं, चाहे तो न्यू मुझे रहने हुई कि पहली बार वह मुझे कुछ कहने को कह रही थी। दूसरी ओर मुझे आश्चर्य भी हो रहा था कि वह ऐसा कौन-सा काम जानती है कि पूछने के लिए उसे मित्र चाहिए। मगर मैंने कुछ और नहीं पूछा। मुझे अचानक लगा कि मुस्कुराते हुए विदा हो गया।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

...ही है... मुझे भी मालूम है कि यह सब कैसे हुआ... आप बैठिए... मैं चाय बनाकर लाती हूँ... वह धड़फड़ाती हुई रसोईघर में चली गयी।

...पूरा इलाका रह रहकर रामबली की दुखी मन की ओर चला जाता था। लाज और शर्म से झुकी उसकी गर्दन और रुँधे-रुँधे अटककर निकलते दबे बुझे शब्दों की लपेट से वह समूची आहत हो गयी थी। मैं दोनों बहनों की वेदना का अंदाज़ नहीं पा रहा था... गाँव देहात में महाजनी कर्ज़े का ऐसा विकराल रूप... पाँच ही रुपए का ऋण... उसका सुरसा के नेह जैसा बढ़ता सूद... अदायगी होने तक देह भोग... भुलसौंपा... घरौंपा... बमसोरी... कितनी बात रामबली बोल गयीं। रतनी ही दर में गाँव देहात में नित्य घटित होने वाले महाजनों के शोषण दृश्य रहने दिखना दिया... वह भरी आँखों में अंत नहीं रोके थे... एक बार मेरा ध्यान उसकी अनछुई गली भौजाई की छाँह आँकने की ओर गया... कैसा चित्र उसका अपने शब्दों से बनाया था? पौंच हाथ रहरी... चाक जैसी चिकनी पुष्ट देह... उमड़ी नदी जैसी रवानी... सलेमपुर के गीत में जैसे मालिनी की बेटी मरुत लहरों की तरह धरती को दलकाती हुई चलती है... चलती है... धरती दलकती है... वह जैसे भद्र लोग कहते हैं कि इन लोगों को बोलने नहीं आता है... उनके पास शब्द नहीं हैं... ऐसा बोलने वाले खुद नहीं जानते हैं कि इनके पास कहानी कितनी है... कितनी ही इनके शब्दकोश हैं... अनंत में भरा हुआ विषाद और अनुभवों से संपृक्त इनके जितना ही इनका विश्वकोश है... उनके जैसे अनगढ़ी शब्द मेरे शब्दकोश में नहीं हैं, क्योंकि उन्हें शब्द गढ़ने नहीं दिया गया... शब्द के बदले उनकी कोख में अंगार पलते हैं... ये अंगार जब फूटेंगे तब क्या होगा?... मैं आगे नहीं सोच पा रहा था... बाबूजी दोनों हाथों में चाय का प्याला पकड़े आ गये थे। उनके साथ में तेजतर्रार लाल दीदी थी... कुछ से उनकी माँ के साथ लोकगीतों की सुमधुर स्वर लहरी छेड़कर वातावरण को खुशनुमा कर रही थी... धीरे-धीरे सब के होठों से बोझ गहरी निश्चलता बन... बाबूजी मुझसे पहले चाय पीकर खड़े हो गये... आप विश्राम करें... मैं अभी विश्वविद्यालय जाऊँगा हूँ... आप भी चाय पीकर थोड़ा आराम कर लें... बहुत थक गये हैं।"

...धीरे-धीरे सब कुछ सो गया... सन्नाटा पसर गया... बाबूजी विश्राम कर रहे थे... मैं भी अपने कमरे में आकर लेट गया... पर नींद आँखों से कोसों दूर थी... खिड़की से दीखते चाँद को देखते हुए... मैं सोचने लगा... कितनी बातें... कितनी घटनाएँ... कितने दृश्य... कितने चित्र... कितने शब्द... कितने अर्थ... कितने संदर्भ... कितने प्रसंग... कितने आयाम... कितने विस्तार... कितने विवरण... कितने विश्लेषण... कितने निष्कर्ष... कितने सिद्धांत... कितने व्याख्यान... कितने भाषण... कितने लेख... कितने शोध... कितने ग्रंथ... कितने पुस्तकालय... कितने विश्वविद्यालय... कितने महाविद्यालय... कितने विद्यालय... कितने शिक्षक... कितने छात्र... कितने अध्यापक... कितने प्रोफेसर... कितने डॉक्टर... कितने विद्वान... कितने पंडित... कितने ज्ञानी... कितने मूर्ख... कितने अज्ञानी... कितने अंधविश्वासी... कितने रूढ़िवादी... कितने प्रगतिशील... कितने क्रांतिकारी... कितने समाजवादी... कितने साम्यवादी... कितने पूँजीवादी... कितने उपभोक्तावादी... कितने बाजारवादी... कितने भूमंडलीकरण के पैरोकार... कितने विरोधी... कितने समर्थक... कितने आलोचक... कितने प्रशंसक... कितने निंदक... कितने स्तुतिगायक... कितने चाटुकार... कितने दरबारी... कितने राजकवि... कितने भाट... कितने चारण... कितने गायक... कितने वादक... कितने नर्तक... कितने नर्तकियाँ... कितने गणिकाएँ... कितने वेश्याएँ... कितने देवदासियाँ... कितने किन्नर... कितने हिजड़े... कितने समलैंगिक... कितने उभयलिंगी... कितने ट्रांसजेंडर... कितने विकलांग... कितने अपाहिज... कितने लाचार... कितने बेबस... कितने मजबूर... कितने गरीब... कितने भिखारी... कितने फकीर... कितने साधु... कितने संन्यासी... कितने योगी... कितने तपस्वी... कितने ऋषि... कितने मुनि... कितने महर्षि... कितने ब्रह्मर्षि... कितने देवर्षि... कितने राजर्षि... कितने महात्मा... कितने संत... कितने महंत... कितने मठाधीश... कितने पुजारी... कितने पुरोहित... कितने पंडित... कितने ज्योतिषी... कितने वास्तुशास्त्री... कितने तांत्रिक... कितने मांत्रिक... कितने यंत्रविद... कितने रत्नविद... कितने हस्तरेखाविद... कितने अंकविद... कितने वास्तुविद... कितने खगोलविद... कितने भूगोलविद... कितने इतिहासविद... कितने पुरातत्वविद... कितने भाषाविद... कितने साहित्यविद... कितने कलाविद... कितने संगीतविद... कितने नृत्यविद... कितने चित्रकार... कितने मूर्तिकार... कितने शिल्पकार... कितने वास्तुकार... कितने अभियंता... कितने वैज्ञानिक... कितने तकनीशियन... कितने मैकेनिक... कितने इलेक्ट्रीशियन... कितने प्लंबर... कितने बढ़ई... कितने लोहार... कितने कुम्हार... कितने जुलाहे... कितने दर्जी... कितने रंगरेज... कितने धोबी... कितने नाई... कितने मोची... कितने चमार... कितने भंगी... कितने मेहतर... कितने सफाईकर्मी... कितने झाड़ूदार... कितने चौकीदार... कितने पहरेदार... कितने सिपाही... कितने सैनिक... कितने फौजी... कितने अफसर... कितने जनरल... कितने कर्नल... कितने मेजर... कितने कैप्टन... कितने लेफ्टिनेंट... कितने सूबेदार... कितने हवलदार... कितने नायक... कितने सिपाही... कितने रंगरूट... कितने जवान... कितने किसान... कितने मजदूर... कितने श्रमिक... कितने कर्मचारी... कितने अधिकारी... कितने नेता... कितने मंत्री... कितने संत्री... कितने प्रधानमंत्री... कितने राष्ट्रपति... कितने राज्यपाल... कितने मुख्यमंत्री... कितने विधायक... कितने सांसद... कितने जनप्रतिनिधि... कितने सरपंच... कितने प्रधान... कितने मुखिया... कितने पंच... कितने सदस्य... कितने वार्डपार्षद... कितने नगरसेवक... कितने महापौर... कितने उपमहापौर... कितने आयुक्त... कितने कलेक्टर... कितने जिलाधिकारी... कितने एसडीएम... कितने तहसीलदार... कितने पटवारी... कितने लेखपाल... कितने कानूनगो... कितने राजस्व अधिकारी... कितने न्यायाधीश... कितने वकील... कितने बैरिस्टर... कितने जज... कितने मजिस्ट्रेट... कितने दंडाधिकारी... कितने पुलिस अधिकारी... कितने थानेदार... कितने दारोगा... कितने सिपाही... कितने जेलर... कितने वार्डन... कितने कैदी... कितने अपराधी... कितने मुजरिम... कितने गुनहगार... कितने पापी... कितने पुण्यात्मा... कितने धर्मात्मा

मैंने कहा "यह कैसे हो सकता है कि कोई आदमी बात बतलावे और अंधानक कह दे कि यह नहीं बतलावेंगे? क्यों नहीं बताइएगा? सो तो बता दीजिए .... ।"

ऐसी बात बतलाने लायक थोड़े होती है जो आदमी ऐसी बात बोले कोलियाएगा, वह हमसेभे फंसेगा मैं न बुरा तरह के काम में फँसता चाहती हूँ न आपको फंसाना चाहती हूँ, इस तरह की बात करना खतरनाक हो सकता है

मेरी समझ में ऐसी कोई बात नहीं आ रही थी जो खतरनाक हो सकती थी इसलिए उसको सोच पर मुझे कुछ झुँझलाहट हुई कभी कभी आप बात को ऐसा बुद्धीअल बना देती है कि सेरा मन विद्रोहसा जाता है। मेरे किस बेवहार से आपको लगता है कि मैं खतरनाक भी हो सकता हूँ?"

मैं अब जानता हूँ कि क्या समझ मेरे मन में तो बीज भर नहीं थी, वह अनावश्यक थी मेरी ऐसी मनस्थिति उसे सहन नहीं होती थी उसने मुझे परबोधते हुए कहा आप नाराज नहीं जरा विचार के देखिए हम लोग बहुत ऐसी बात कर लेते हैं जो दूसरे लोगों से नहीं कहनी चाहिए लेकिन मैं आपको हर बात को पहचान की तरह लेती हूँ तब अगर ऐसी कोई बात बोलेआने लगे जिससे आपका कि मेरा मन शंका से भटक जाए, तो ऐसी बात बोलने से बचना चाहिए कि नहीं?"

मैं अपनी नादानी उसकी भोलाई और निर्दोषता को बीच के संबंध और उसका दावेदार करने से पहले बारबारी समझाती बहन रही थी मुझे उसका प्रेमपूर्ण आग्रहपूर्ण परामर्शपूर्ण लगा मैंने कहा, "मैं भी आपसे सुनकार समाज का कल्याण ही कर रहा हूँ इस हिसाब से आपका शिक्षक मैं और मेरा शिक्षक आप हुई आप इस बात को लिख लीजिए पहिए कि कभी किसी बात से मन भन्नाएगा आपा नहीं खोना चाहिए ही बात्तों बायक बात तो नहीं बतलाइए ।

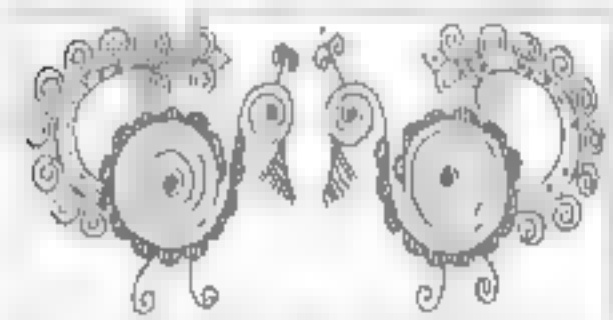

एक बेर तब एक मुँहबी पोपा किसर रहेमानी रहा उसके पैर पर सफीदपन की पट्टी बाधी हुई थी एक पैर पर खड़ा होकर बोलना भूखे तोता तो लगता तोरी शरारतों और शरारतों सारी हरकतों की पैदाइश एक बगल बाजारी के कलाकार पर सवार हो गयी मेरी सीआई खुशामद बाँध हाल की प्रीतम रही है मैंने तब के बाल मनोविज्ञान के संबंध कैसबनी में इसको तेरह दिनों तो और में बहुत कुछ एक खाली दोनों थी और इसका भी कहनी थी कि कहानी तो रचना के बारे में बनाबनी सहीत के ने गया बात यही समाप्त पर एक किसने देने की सकता रहा था एक दिन दिसंबर के पहिनावा तो अलग अलग चुनाव दार लेखा बाद में बहुत बहुत पहुने बहुत बुद्धिमान तो से दुख से तैर हो डालता रहती थी, एवं दिन भूख के पारे गया खा के लिए गयी एक तेरह एक बोलेता चालाक देकर आलोचना ने भी ही को एक्टा दिखाया मैं गाव मोनी को जीवनी थी से एक बुजुर्ग ही बोलती थी बीच्छ एक की भरत से सहीं पेट की प्राण के सकते उसके आगे पीछे लोलता रहा यही बोल से सह ही आपने ससुराल से तैर आयी। एक बनाया के पढ़ने से हरिवंश अधिक सब सहेदता पेंगा बना को पैस कमा रहते ने तब भी

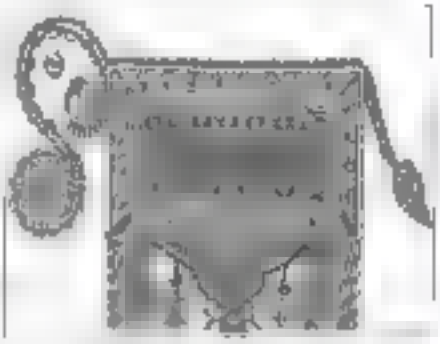

आपने यह काम देखा नहीं, इतनी ही देर हुई है कि आपको सोचनालती है ... वह कुर्सी से उठी और अपनी मेज से लगकर लकड़ी की चौकोर के ऊपरी पत्ते पर उसने आज ही सुबह पर पुराने चित्रों की अलमारी की थी ... एक एक चित्र को अलग अलग निकाले कुछ साधारण थोड़े सुंदर कुछ बहुत सुंदर वह किसी चमत्कार से कम नहीं था ... उन चित्रों में कुछ झाड़ियों पर थे और मेला की सामग्री से भरपूर थोड़े और अन्य प्रतीक थे ... मुझे उसका कौशल देखकर अत्यंत हैरानी हो रही थी ... आप तो कमाल कर दिया ... !"

"कमाल मैं क्या करूंगी और कमाल असल में भीतों के दुख और आपके सहारा का है ... यह सब कैसे पहुंचा यार कोरा है ... दर्द पर से खिंचे गये आप ही कलम लेकर थे ... मैंने बार बार एक रेखाओं के सहारे से काम शुरू करके उसी को लिया ... आपको अवश्य ही पर पहले थोड़ी मुश्किल से लेकिन बाद में यह काम करना बहुत आसान हो गया तो यह कहा ... आपने नहीं बढ़ सकता ..."

"मैं बताऊंगा ... मेरा ख्याल इस बात पर भी था कि किसी तरह एकाग्रता से ही [illegible] पर ध्यान हो ... [illegible] ... [illegible] ... [illegible]

उस समय मुझे लगा था कि यह कोई दिलेरी नहीं है बल्कि आपके जीवन के सर्वश्रेष्ठ से आपने सबसे से लगा ले कर किसी को भी कुछ किए नहीं उसी तरह मैंने भी अपने भी के न बात ले कर लिए लेकिन अभी तक कुछ कर ही सकी तब आप मुझे सबसे बड़ी बात बताएं तो मैं दोनों के बाद मिलाकर कर सकूं मैंने आपके साथ को अपना लिया जैसे मीरा ने अपने को कृष्ण को कहा अपना लिया अब मैं इसे कहां तक निभा सकूंगी यह तो जीवन भर याद रखूंगी यदि आप साथ दें तो यह काम असंभव पूरा हो सकता लेकिन अगर आप किसी अन्य के साथ ही जाना चाहें तो कोई बात नहीं मैं सदैव दम तक कोशिश करती रहूंगी, चाहे जो हो।"

इसके बाद से मैं उसकी सहायता में था हर तरह उसके साथ खड़ा होता था और हर सप्ताह की बात करता था लेकिन मैं यह भी जानता था कि उसके मन में क्या उथल-पुथल मची हुई है उसका परिवार वाली उसकी मुख्य होने की संभावना में दुर्घटना का लिया कोई सहारे भी चल रहा है यह तो उसके पैर बन चुके आने वाले से लिया हो एवं मुझे और आपसान को तो वह भी अपने परिवार वालों के लिए उस के बीच लिया था हैरानी के मैं यह नहीं जानता था कि वे सहायता का यह तुच्छ किस की प्राप्ति की न सकती थी लेकिन कुछ का ही कि वह सहायता पर छुपा गोदान के साथ थे उस किसी को देखकर मैं कागज पर बनाकर देखकर वह सदर प्रकाशित तैयार करेगी फिर उन चीजों के बीच कुछ कुछ में मानो सहायता देखें कुछ करने के बाद ही दोनों तैयार होगी उससे लौटकर कहीं उसने कुछ बड़ी मात्रा दिखाने का वह थे थे मैंने उसकी मानो दिखाने की कोई दूर कोई कुछ उसने देखा बहुत लिया उसके मालिक के साथ कहां के उसकी से और भी धारावाहिक की उसे आनाथाश्रम आपके के कुछ में मेरे हो गये थे कहीं कहीं भी कुछ मिल गया था कि कोई देखकर मन से पिछे सहायता की कोई कुछ कहीं कहीं कहीं

लगता है कि मुझमें कोई खूबी है तो वह भी आपकी संगति का ही जरूरी होगी। आज मैं आपसे एक और खास बात करना चाहती हूँ। मैं चाहती हूँ कि इस बात पर खुल कर चर्चा हो और तब जो फैसला हो वही किया जाए। ऐसा करिएगा तभी काम भी आगे बढ़ेगा।"

आप अपनी बात बेहिचक बोलिए। मैं भी अपना विचार रखूँगा। इसके बाद जो फैसला होगा, मैं भी उसका पालन करूँगा।' मैंने औपचारिक रूप से अपनी स्वीकृति दे दी।

पहली बात तो गोदना का चित्र देह पर से उतारने की है। कल शाहर तो आपने पीठ पर से उतार लिया। लेकिन असली चित्र अब तो आगे बाँकी ही है। आपके लिए दिक्कत है कि देह के भीतरिया भाग में जो चित्र अब बना हुआ है, उसे अब आप उतार पाइएगा कि नहीं ?

यह दिक्कत सिर्फ मेरे लिए है और आपके लिए कोई समस्या नहीं है?"

नहीं मेरे लिए इसमें कोई दिक्कत नहीं है। इससे अगर कोई दिक्कत की बात होती तो मैं पहले ही आपको अपनी देह छूने नहीं देती। मैंने बहुत सोच-समझकर ही फैसला किया था। मैंने सोचा कि अपने शरीर से लोगों की भलाई भी करना है और अपना धरम भी बचाना है। अब इन दोनों बात के अलावा तीसरी कोई बात बीच में घुस तो नहीं सकती है। अब जब मैं समझ गयी हूँ कि लोगों की भलाई के लिए आपने शरीर का गोदना उतारना पड़ा है तो इस बात से भी नहीं हिलना है और हर हालत में आपका धरम भी बचाना है।'

दिक्कत तो ऐसा भी लोगों की भलाई ही है लेकिन आप जिस तरह की बात कर रही हैं मैं उसे नहीं समझ पा रहा हूँ।

मुझे लगी थी बात यह कि जैसे जैसम का [illegible] हमको आदमी को करना चाहिए और जिस जैसम की पूजा से आदमी कहीं का नहीं रह जाता है उसको धरम कहते हैं। मैं आपसे एक तो बात साफ कहती हूँ। जो लोगों ने बनाया था [illegible] कहने को तो था कि आदमी कहीं धरम होगी दूसरे मुलुक के साथ फिर आती है तो उसके पति की जायदाद होगी है। मुझे लगी थी यानी दिखावा के लिए खाली एक आदमी के साथ रहना चाहिए। खाली कहने भर की नहीं दूसरे के साथ सचमुच कोई एक आदमी के साथ रहना चाहिए। यही जीवन का धरम है। मैं मुझे धरम का नहीं तोड़ सकती हूँ चाहे आप मेरे शरीर का कोई भाग, या पेशेवर मेरे मन पर कोई असर नहीं हो सकता है। इसी तरह से आप भी [illegible] कि कुछ हो जाए, मन में कुछ बात नहीं लाएगा है।"

"ऐसा हो सकता है क्या? मुझे तो संदेह लगता है।'

आपको संदेह हमेशा है क्योंकि आप शहरोवाले हैं और सब लोग को देखा हुआ है लेकिन मुझे यह बात का अनुभव नहीं है। मैं इतना ही जानती हूँ कि आपने मन की [illegible] हम लोग आपस सब को सोलह आना सच मान लेंगे तो समझो सारा संसार के सारा लोग और बीच में संसार भर में सब काम खराब हो जाएगा। तब आप समझिए कहीं भी कि कहीं कुछ [illegible] तो दोनों पक्षों को [illegible] कोई [illegible] तो किसी हालत में [illegible] नहीं होना

नहीं दिया और डरकर छोड़कर भाग गया।"

वार्तालाप आगे तो कुछ बोल नहीं पाई तब वहीं पुलिस संघ के भाग्यशाली प्रश्न थे उस दिन से पहले मैंने कुछ पैसा तो किसी से मदद नहीं ली थी लेकिन पैसों के अभाव में उस समय मुझे मेरी बात याद आई थी और जीवन में पहली बार मैंने किसी से मदद मांगी थी।

मैं

वह जाएगा तो... यानी बात मैं आपको बताना चाहती थी...।"

इतनी बात बोलकर कामवाली चुप हो गयी मुझे उसकी बात से न सहमते पी और न असहमति व्यक्त में जानना चाहता था कि स्त्रियों की तरह पुरुषों के लिए समाज तथा नीतिशास्त्र में ऐसी कोई दृष्टि थी या नहीं आखिर मैं भी तो एक पुरुष हूँ, शाहीन्द्रा मैंने पूछा अगर वैवाहिक दुरुष किसी दूसरी स्त्री के साथ सेक्स कर ले उसके बाकी पत्नी की अनु होगा हो सकती है कि वहाँ इसके बारे में क्या कहा गया है?"

मेरी जिज्ञासा के संदर्भ में उसने तुरन्त कहा पुरुष के बारे में कुछ नहीं कहा गया है इस लिए उसे तो पुरुष को भी पालन चाहिए ये कैसे वह आजाद है स्त्री की तरह हर तरफ से बँधा हुआ नहीं है संन्यास के शास्त्रों में भी यही कहा है पुरुष सत्रह के बाद अपने मन पर अंकुश लगा सकता है जबकि औरत को एक एक बार की भी को जन्मों तक छोड़ा पड़ सकता है फिर भी औरत इस तरह की भावना से झूलती रही है यह बात लड़की खुद भी मानती है कि जरा ढील की भी से वह भावना ही न रहे वह पति का अपना मोहन लोहे आने वाले लिए और आगे बच्चा पाने के सुख लोगे तो इसलिए दोनों में से किसी का पैर तो ढीला नहीं होना चाहिए किसके लिए पैर ढीला न होना चाहिए मेरे लिए या उसके लिए मैंने उससे पूछा उसने भी सहज ही कहा दोनों के लिए मैं भी सोचने लगी कि क्या सचमुच दोनों के लिए ही पैर ढीला नहीं होना चाहिए या सिर्फ उसके लिए ही मैं भी

मेरी जिज्ञासा के बीच में कैसे पैदा हो गई इसको लेकर मैं स्वयं असमंजस में थी और मेरे चेहरे पर उसे भाव को पढ़ लिया था उसने कहा मैं आपको बताती हूँ कि ऐसा क्यों हुआ मैं आपको बताती हूँ कि ऐसा क्यों हुआ मैं आपको बताती हूँ कि ऐसा क्यों हुआ

बोलते बोलते बासमती का ध्यान मुझ पर गया कि अपनी बहिनपा की स्मृति में उलझ गया। कुछ देर तक चुप रही फिर अपने में वापस लौटते हुए बोली, मैं तो आपके जैसी पढ़ी लिखी नहीं हूँ जो सब बात विज्ञान से ही बोलूँगी मगर मुझ जितनी समझ है उतना मैंने कह दिया अब आप जो सही लगे सो लिखिए।

आपकी सभी बातें सही हैं केवल एक बात से मुझे दुविधा हो रही है अपने समाज में पुरुष का साथी पुरुष और स्त्री की साथी स्त्री होती है यानी स्त्री और पुरुष के बीच में साथी के सम्बन्ध का चलन नहीं है ....।"

मुझे लगा कि ऐसा प्रश्न सुनने के लिए वह पहले से तैयार थी उसने मेरी बात को काटते हुए कहा, सच तो आपने समाज में एक बहुत बड़ा सच है जो पहले नहीं होता था लेकिन अब शुरू हुआ है पहले मंडी जाति की लड़कियों को गाँव से बाहर पढ़ने नहीं जाती थीं लेकिन अब जाती हैं पहले आपसी लगाव की ओरतें साथ घूमती नहीं थीं लेकिन अब घूमने बनाकर फिल्म देखने हैं पहले खिलने न बताना पड़ती थी न छिपाना पड़ता था अब बताना पड़ता है और छिपाना भी है पहले हरियाली प्रेमिल साथ न पकड़ती थी सब बातें बोलती थीं अब आप कहते हैं कि एक लड़का पढ़ा भी और बोल भी ऐसे ही एक लड़के का साथ कैसे नहीं हो सकता है? पहले हरियाली की छोड़ दो यहीं चार पड़ोसियों में अब एक ऐसी मेड़ मय अपना गोदना पेंटिंग कमाल कर रही है तब यह बात सही है कि आपस में एक लड़के और लड़की का साथी संबंध नहीं होता था लेकिन अब ऐसा होने लगा है कि आदमी और औरत एक दूसरे के साथी बनकर रहने लगे हैं इस बात से मेरे न होने का विचार करना है न इसे एक दूसरे पर निर्भरता कहा जा सकता है। हमारे गाँव में एक बूढ़ा पड़ोसी था जो अपनी मुख्यमंत्रीजी के स्वर्गवास के बाद अकेला रहने लगा था उसको एक अच्छे साथी की जरूरत थी उसने मुख्यमंत्रीजी की बेटी को गोद लेकर अपने पास रख लिया। उसने अपनी मुख्यमंत्रीजी को खेत में खेती करना, पशुओं की देखभाल करना, घर चलाना सब सिखाया। उसने उसे बड़ा करके उसकी शादी भी कर दी। अब मुख्यमंत्रीजी का दामाद उसके साथ रहता है। उसने भी उसे बेटे की तरह ही प्यार दिया। अब आप ही बताइए कि ऐसे में उनका साथी संबंध कैसा है? उसने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा, मैं तो आपसे यही कहूँगी कि आप अपनी बहिनपा की स्मृति में उलझे रहिए और अपने समाज के इस नए बदलाव को लिखिए। मैं तो आपको यही बता सकती हूँ कि मेरे और मेरे साथी के बीच में साथी संबंध है।

मैं नेपाल-प्रवास से पहले की बातों को याद करने में लग गया तो बासमती समझी कि मैं उस संबंध के प्रस्ताव से विचलित हो रहा हूँ उसने कहा "आप घबराइए नहीं मेरी बनकर मैं आपके घर परिवार का कोई नुकसान नहीं करूँगी ..... !"

मैंने उसकी बात को समझते हुए कहा, "आप जैसी स्त्री का साथी बनकर तो बहुत खुशी की बात होगी ... भला हम लोग एक-दूसरे का क्या नुकसान करेंगे ..... ?"

उसने तुरंत कहा "ऐसा नहीं कहिए ... भगवान ने भी बहुत तरह का नुकसान दी जगह है मेरे और आपके बीच में आकर संसार आ जाएगा तो दोनों का बहुत बड़ा नुकसान हो जाएगा यह सभी चीजों को खत्म कर देगा ... दौलत को भी ..... !"

आपका सोचना बिलकुल सही है मैं भी ऐसा कुछ नहीं चाहता हूँ, लेकिन मुझे अपने आप पर भरोसा नहीं है इस मामले में मैं आपके जैसा सयाना नहीं हूँ

यदि आप समझते हैं कि इस मामले में आपका मन कमजोर है तो उसे मजबूत करना होगा कोई भद्दी बात दुख से कमजोर हो जाता है तो हमेशा करने से फिर ठीक होता है कि नहीं मैं पूरा जतन करूँगी कि आपका मन कमजोर नहीं हो आप अगर ईमानदारी से अपनी कमजोरी बताते रहिएगा तो मैं जरूर आपको सम्हाल लूँगी लेकिन इस बात के लिए तो आपको भी सतर्क रहना होगा

बासमती एवं अतिरिक्त काम को अंजाम तक पहुँचाने पर तुली हुई थी समय से पहले उसके शब्द बाणों से मुझे लगा उसके मन में कुछ और ही चल रहा है। उसने बहुत चतुराई से मुझे शीशे में उतार लिया था। जिस तरह उसने मुझे अपनी गोद में सुलाकर मेरे बाल सहलाए थे, फिर मेरे हाथों पर अपने हाथों को रखकर मेरे हाथों को अपने सीने पर रखने का प्रयास किया था, उससे मैं उसके पहले ही प्रयास में समझ गया था कि उसका मन कमजोर नहीं है। उसने कहा था कि मैं उसे अपने ऊपर भरोसा करने के लिए कहूँ तो उसे मुझ पर भरोसा करना है। मैंने उसको कहा और क्या कहा था, यह याद करने की कोशिश करने लगा। मैंने उसको

यह विधि क्या होती है?

यह बात तो हम पहले बता दिए थे भूल गए? यह साथी बनाने की विधि है आपने एक बार पूछा था कि जिसके हाथ में लॉलीपॉप लगा छोड़ नहीं रहता है उ कैसे साथी बनाता है तो मैंने क्या कहा था दोनों आदमी खड़ा होकर पीठ में पीठ सटाना और दोनों हाथ पकड़कर कहना संगी साथी हम जाए नाम–नाम छूट जाए ...याद पड़ा कि नहीं?"

हाँ–हाँ याद है लेकिन आप तो मेरा नाम पकड़कर कहीं बुलाती ही नहीं हैं अब आप मुझे सखी कहकर बुलाएगी कहाँ?"

तो हमेशा न और मंदान पर चढ़ने के समय कोई नाम लेकर क्या बुलाएगा आपका नाम तो मेरे मन में ऐसा छाया गया है जैसे घाटी में घाटिन मैना नाचे है तेरी अंखियाँ खून बरसावे नाम ही दीवाने रहता है ऐसन नाम ओम पर कैसे आ सकता है न मैं आपको सखी कहूंगी न आप मुझे सखी कहकर बुलाएंगे यह तो एक ठो विधि है पक्का साथी बनने की विधि जैसे शादी ब्याह की अलग विधि होती है ; खाने की बेला पूरी करके दो आदमी एक दूसरे का रिश्तेदार बन जाते हैं पर पहले का नहीं पाते मगर सखी वाली यह विधि करने से दोनों के बीच में दोस्ती की मजबूती नहीं होती है कि कोई के बीच में दोस्ती को दुश्मनी की जगह ही नहीं मिलती है अब जल्दी मुझे याद करा कर नाम दीजिए कोई आ जाएगा तो यह काम नहीं होगा.....।"

"अरे धत्तो ...?"

[illegible] है।

[illegible] हाँ–हाँ याद है लेकिन आप तो मेरा नाम पकड़कर कहीं बुलाती ही नहीं हैं अब आप मुझे सखी कहकर बुलाएंगी कहाँ?" [illegible] नाम–नाम छूट जाए .....।"

उसने तीन बार मंत्र की तरह उच्चारण किया. मैंने भी वैसा ही किया. रक्षासूत्र पूरा होने के बाद वंदना ने कहा बस... हो गया... अब मुँह मीठा करवाइए. लेकिन मैं इस सुखद स्पर्श से इतनी जल्दी पृथक होना नहीं चाहता था. मैंने कहा कुछ देर ऐसे ही रहिए. उसका सिर मेरे कंधे से सटा था. सीढ़ियों से पीठ टेढ़ी थी और दोनों की कमर से ऊपर का भाग बिलकुल आगे झुककर नहाने-मंडल के अनेकहोल जैसा हो गया था. सिर के मुक्तलाकधार में मेरा समूचा अस्तित्व कलाँ खुशी सना जा रहा था. क्षण भर मैं उस आनंद में लीन रहा. सोचा कि उसने पूछा कैसा लगा है ? मैंने कहा मैं यहीं हूँ कहीं? कहीं भटक गया हूँ. उसने सँवारते हुए कहा लोग ने आज विश्वासघात पर बैठ जाइएगा तो नहीं भटकिएगा...?" और पृथक हो गयी.

उसने हाथ पकड़कर मुझे बिछावन पर बैठाया और दूसरी कुर्सी में खुद बैठी. बैग से एक पैकेट में चार लड्डू लेकर लौटी. आमने-सामने बैठी और हँसते हुए मेरे मुँह में एक लड्डू दिया. मैंने भी उसके मुँह में एक लड्डू रख दिया. दूसरी बार भी वंदना ने एक दूसरे को खिलाया. खाने के बाद उसने कहा अभी नहीं पीना है. पहले खाकर पानी पीते हैं. इस वेद का मतलब यह है कि दोस्ती का यह रिश्ता जीवन भर [illegible] यह बहुत आसानीसे नहीं टूटेगा. [illegible] टूटा. इस रहस्य को उसने समझाकर स्पष्ट किया. मैं भी खुश हो गया.

[illegible] के लिए [illegible] मैं [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible]

हासमस करय सहअँ हिन लोनि [illegible] कत भाँति
कोपहि न पाहिअ हृदय उलास, मुनलओ बदन केकत होअ हास
भनइ विद्यापति तोह न दोस, मूखल बदन बकाथय पोस।"

गहरे गीत बैन पहले नहीं सुना था। गीत की टेर उसकी नानी के बोलने ढंग से भींगी थी या विद्यापति की माधुरी ही शुद्ध टेक थी सो मैं नहीं समझ पाया किंतु गीत का जो अर्थ मैं समझ पाया उसमें बड़ी उलझन ही छन्द दिखा। जैसा ही गीत का भाव, वैसा ही स्वर माधुरी गीत के रग रग में रंगी उसकी मादकता नानी बनकर मेरे मन पर ऐसे पसर गयी थी कि वहाँ से उठना कठिन हो रहा था। मगर उसे समय का भान अवश्य रहता था। दरवाजे खाली की ओर ध्यान दिलाते हुए कहा "आज आपको बहुत अबेर हो गया। आपका भोजन भी ठंढा हो गया होगा। क्या कीजिएगा?"

यद्यपि कि मेरी कार्तिनाइ का विचार करके यह नहीं चाहती थी कि और अधिक मैं वहाँ रुकूँ, लेकिन पूछे जाने के बाद कुछ और बोलना चाहती थी। मेरे उसके मन का अनुमान करते हुए कहा "जाना तो है ही हमका कोई रोका नहीं है। [illegible] और हम लोग हूँ। मैं एक बात और समझा। आपने उस दिन बताया कि साथी लगाने वाली किस दूसरे से छिपाकर की जाती है। सो क्यों?

"कि असल हकीकत की बात तो है कि कोई भी नानी बेटी है। किसी की कहर नहीं लगे। इसलिए छिपाकर किया जाता है। वैसे बाद में तो सब जान ही जाते हैं। दस्तूर तो जाने के बाद दोनों सबको ही बताते हैं लेकिन कोई मुख होने से पहले के जाने आने के बारे में [illegible] बोलकर जाने के बाद पुरुष नहीं जैसा ही होता है। तब अपने दोनों की दुनिया में कुछ मुश्किल बात ही जाकर है....।"

"सो क्या मुश्किल है....?"

यह कुछ रहस्य [illegible] कहते कहते वह रुक गई और मैं असमंजस में पड़ गया। उसकी [illegible] को मैं अपने लायक समझती नहीं दिखाई दे रहा था। [illegible] में भी होता है। [illegible] दूसरा औरतों पास आया करती।

मुझे उसकी बातों का आशय [illegible] कि मुझसे पहले दोनों के लायक लड़की की दोस्ती को [illegible] जाता है। [illegible] दोस्ती को पक्का नहीं करते। [illegible] दोस्ती के बाद लड़की [illegible] लड़के के घर की औरतों [illegible] लेकिन इसे छिपाकर रखा जाता है। [illegible] दोस्ती को पक्का नहीं करते। [illegible] दोस्ती को पक्का नहीं करते। [illegible] दोस्ती को पक्का नहीं करते

तरफ मेरी ओर झुकते हुए फुसफुसाकर कहा "बात है कि इस्थ में लोग सब कुछ करने लग जाते है खराब काम भी ऐसा नहीं न करना चाहिए इसीसे उसको ... न कहा जाता है ऐसा होने लगेगा तब शादी ब्याह का क्या ... रहेगा ब्याह का तो रिवाज ही खतम हो जाएगा उसी रिवाज को बचाने के लिए मारा-मारी होता है लेकिन अपने दादी आदमी से ना ... काम लगा नहीं इसीलिए मैं दीदी को बता दूंगी।"

दीदी को क्या बता दीजिएगा?

यही बात अपने दोनों की दोस्ती वाली बात मैं दीदी को सब बात बता देती हूं दीदी आपको बहुत अच्छा आदमी समझती है बहुत बड़ा आदमी आप तो हमको इतना मानते हैं सो दूसरा दीदी बहुत खुश रहती है। अब ... बिस्तर की बात बता दूंगी तो ... और खुश हो जाएगी आपका कुछ आदमी में खोटी पसेम नहीं होगा, काहे कि हम ब्याहता हैं न...."

आप प्रेम माने केवल यही बात तभी समझती हैं? शादी शादी के समय की उम्र में प्रेम तो होता है किसी को शुद्ध मन से चाहने को प्रेम कहा जाता है देह का खेल तो बाद की चीज है यह कोई जरूरी नहीं है कि प्रेम हो जाने से सेक्स भी होना ही है आप किसी को प्रेम करते हुए भी ये कि केवल सुनकर ही प्रेम को इतना खराब मान रही हैं?

हमी ने इस देखे भी हैं और यह भी समझते हैं कि परहेज से रहने पर कोई गलतफहमी नहीं हो सकती है, लेकिन उसमें मन को बहुत कसकर पकड़ना पड़ता है ... को दोष के बराबर कहा है ... ही तो मछुआरे होने का डर रहता है सो मन आप काबू में रखने लायक हों तो ही तब आपको ये पेशा नहीं अपनाना चाहिए। इसलिए हम तो ... देते नहीं करेंगे यहां की तरफ ...

देखिए अब तो हम दोनों में दोस्ती हो गयी है यह दोस्ती साथ दिन पैदा हो गयी यही हमेशा के लिए बना रहे इसके लिए हमें कुछ करना पड़ेगा आप तो समझ ही गए होंगे कि मैं क्या कहना चाहती हूं। मैं आपको दुबारा ... नहीं दे सकती हूं जो आप पहले बोल दी थीं वह तो हमारे ... की तरह है लेकिन आप ... रहें मैं ... करूंगी

मैंने उसे साथ चलकर आश्वस्त करते हुए कहा "मैं आपको पूरा भरोसा दिलाता हूँ कि कहीं भी ऐसा कोई काम नहीं होगा जिसे आप गलत समझें। लेकिन बाहर खड़ा आपका कुत्ता भी हमें छूने से आपके मन पर कोई असर नहीं पड़ेगा ना!"

इसके बाद वह निश्चिन्त होकर आगे कुछ कहने लगा। उसकी पूरी बात बेसिर-पैर की लग रही थी। फिर भी उसको सुनना जरूरी था। इसलिए मैं उसकी बात को बीच में काटकर बोला "आप बताइए वह कौन था...?"

यह कहानी उसकी अपनी है। उस लड़के ने अपने बारे में जो कुछ बताया उसके अनुसार उसके पिता की मृत्यु उसके जन्म के पहले ही हो गई थी। उसकी माँ ने उसे बड़ी मुश्किल से पाल-पोसकर बड़ा किया है। उसकी माँ ने उसे बताया था कि उसके पिता की मृत्यु एक दुर्घटना में हुई थी। उसके पिता की मृत्यु के समय उसकी माँ गर्भवती थी। उसके पिता की मृत्यु के बाद उसकी माँ ने उसे अकेले ही

मैं समझी यह बात समझ नहीं पाया मुझे लगा कि सेक्स और चुंबन की बात फिर से दुहराई गई है। मैंने अपने खुलासा जान लेने की गरज से पूछा आप चुम्मा के मतलबी कह रही हैं ?

रसने मुँह पर लगा लिपिस्टिक साफ़ कर लाते हुए कहा, नहीं जी चुम्मा और सेक्स दोनों बातों में पहले की बात सही है इस पेंट से भी ऊ खेल करने देती है वही बात रही हूँ कि नहीं करना है।

मैं वास्तव में ऐसा कुछ नहीं जानता था रसवती बात से मैं उलझन में पड़ गया। मुझे कहना पड़ा, मैं आपकी कसम खाकर कह सकता हूँ कि ऐसा कोई तरीका मुझे पता नहीं है मुझे लगता है कि आप अज्ञान कहीं कोई मजाक न हो लगे इससे अच्छा है कि आप ही देखें सो बता देंगी तब सीखा जाता।

रसने कहा आपकी कसम खाने की जरूरत नहीं है सच्चा आदमी पेट में घुसकर जाता है आप ऊ आदमी नहीं है ऊ तो हमको लेना है मैं भी आपसे कुछ छिपाना नहीं चाहती हूँ पिछले ही रविवार को आपसे दोस्ती करने लेकिन ज्ञान मीठे लगने के चक्कर में हमारा तो कुछ भला नहीं होता है मेरे तो साथी और भगवान दोनों आप ही हैं ये भी आपसे क्या छिपाना।

[illegible] मैं तो बताता भी नहीं पर सोचा कि [illegible] मैं [illegible] के बारे में [illegible] के बाद [illegible] मैं [illegible] के [illegible] से [illegible] के [illegible] मैं [illegible] के [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible]

नहीं आते सो तो किसी गुरुजी के लिए बहुत मुश्किल बात है बड़े बड़े ऋषि मुनि की तपस्या भी स्त्री देह की सुंदरता से छेड़ खानी में फेल खेल की भूली है लेकिन आपको घबराना नहीं है

अच्छा आपको एक गुरु मंत्र बताऊं मेरी नानी कहती थी कि मन में जब गुस्सा बढ़ जाए या कोई खराब बात आने लगे तो आँख मूँद के खूब लंबा सांस लेना चाहिए और सांस को रोककर धीरे-धीरे छोड़ना चाहिए दो तीन बार ऐसा करने से मन मजबूत हो जाता है ऐसे आप भी कोई साधारण आदमी नहीं है मेरी दीदी कहती है कि आपके जैसा आदमी आगे जा के महात्मा ही बन जाता है ऊ बोलना जिन्नगी की बहुत बड़ी बात है जो आप समाज के मन चित्त मार के कोई आदमी बड़ा बनता है आपका नाम हो जाएगा तो मेरा भी जीवन तर जाएगा हम कौन सुंदर है जो उसके लिए इतना बड़ा त्याग समझौता

मैं आपकी बात समझ रहा हूँ महात्माजी बनना तो बहुत दूर की बात है उसके रास्ते पर चलकर लोगों का कुछ भला कर लें तो भी मन में संतोष होगा मैं बहुत बड़ा आदमी बनने का सपना लेकर नहीं चल रहा हूँ मैं तो समाज के दुखी लोगों की कुछ मदद भर करना चाहता हूँ इस प्रयास में मैं पहले भी लगा था लेकिन उस समय लोगों की मदद के लिए मेरे पास कोई साधन नहीं था अब आ ने जो रास्ता दिखलाया है उसके लिए आप अपना अमूल्य समय भी दे रही हैं इसका मतलब हुआ कि आपके भी मन में लोग कहते हैं कि किसी बड़े काम में जो भी बाधाएं आती हैं उन सबका सामना पहले किसी न किसी औरत को ही करना पड़ता है पता नहीं यह सच कैसे हो गया है लेकिन लोगों की एक तो बात याद आ रही है मैं उनकी दाढ़ी के बाल देखकर जब आश्चर्य कर रहा था तो एक कहानी भी कि आपने कोई सुंदर नहीं दामाद भी हो न ऐसी कितनी बड़ी बात पर आसानी से फेर लेती है आ दूसरी तो पहले बहुत सुंदरी होगी है आप तो भी सुंदर थी हैं और दयालु भी लेकिन इसमें तो कोई बात है कि मेरे मन में एक तो ऐसा है जब आपके बारे में कोई कुछ नहीं है इसलिए बात देता हूँ आपको याद आने के ही दिन हुए थे। उस समय आप सोलह के साथ के चलते बन न नहीं पहचानी थी मैं पहले तो मैं ही एक क्षण यही एक सुबह किसी काम से आप ऑफिस में कैसे रही थी कि औरत को सुंदर बहुत कहा और आपका कहना वाली देखकर ही मैं आ गया मन देख कर आपका सुंदर तन तो मैं पहले कहीं नहीं देखा था सो दो-तीन तक बात में मैं आपका व्यक्तित्व बहुत बाद में मुझे बहुत प्रभावित हुआ

मेरी बात सुनकर वह थोड़ी गंभीर उसका पैन एकाएक रुक गया और उसकी आंखों के अधोवस्त्र कर उसने फिर आश्चर्य से मेरी ओर देखा दूसरी ओर मुंह कर कहा आप मेरा मजाक तो नहीं उड़ा रहे हैं नहीं मुझे याद है कि आपने मेरा हाथ देखा था इसलिए मैं आपको आश्वस्त करने की आवश्यकता नहीं है मुझे याद है कि आपने मेरा हाथ देखकर कहा था कि आपके भाग्य में बहुत यात्राएं हैं आप यात्रा करेंगे और बहुत सारे लोग आपको अपनी जिंदगी में बहुत महत्व देंगे लेकिन आपकी शादी नहीं होगी आपने यह भी कहा था कि कोई आदमी फलवाले में बेर-पेड़ के सुंदर फूल देखता है तो वह उसका है सुंदर फूल देखकर वह रहना चाहता है लेकिन फूल को तोड़कर मुंह में डालने नहीं चलता है वैसा ही करना चाहिए

सुंदरता को देखने की चीज है ही देखने में कोई बुराई नहीं है

उसकी बात सुनकर एक बार फिर मैं उसकी आगे कमलेश मंडल कर रहा था बात बहुत अजीब हो गयी थी कहां मैं मदद की बात कर रहा था और कहां यह बात बीच में ही बोल दी है उसकी सुंदरता और विद्वत्ता से मुझे बहुत प्रभावित होने का मैं नहीं हुआ हूँ लेकिन मेरे मन में मेरे मन में

खड़ी हुई और हाथ पकड़ते हुए बोली "कम और आप आज से दोस्त बन गए मगर मैंने आप पर बहुत बड़ी की मनाही लाद दिया सो मुझे अच्छा नहीं लगता है असल में यह मनाही मेरे लिए है मैं नानी की बात पर चलना चाहती हूँ लेकिन इससे आपको अगर कोई तकलीफ हो जाए तब तो सब धरम करम बेकार हो जाएगा। इसलिए आपको जो अच्छा लगे सो कीजिएगा मेरा मन और शरीर आपके लिए सब तरफ से खुला रहेगा बाकी बात आप पर । मैंने एस कुछ नहीं कहा वह मुझे विदा करने आँगन के मुँह तक आयी।

मैं बासमती के पास से चला तो आया था लेकिन उसके आज के गीत की मिठास अभी तक मन में वैसे ही रसी बसी थी मुझे लगा उसका गायन शायद मेरी मनस्थितियों को ही आइना दिखलाने के लिए था इस गीत में चेतनपति ने प्रेम की प्रारंभिक अवस्था में उठने वाले तूफानों का चित्रण किया है गीत में नायिका अपनी सहेलियों से कह रही है कि वह अपने समाधी घर पोखी के सहारे से है कर और में खड़ी हो गयी और मन को लालकर दूसरी ओर ले जाने की प्रयास करती रही किंतु दर्शन के प्यासे नयन मानने को तैयार नहीं हुए प्रेमी के मुँह से हँसी का अमृत जो छलक रहा था उसका आस्वादन करने के लिए ये बेचैन हो मन मान नहीं रहा था और आँखें बस में नहीं रही थी आखिर हारकर उसने आँखें मूँद ली उसने सोचा कि नहीं देखने से मन मान जाएगा लेकिन हो सका उल्टा आँख मूँदे रहने से तो सकता है कि कुछ समय के लिए दृश्य हमारे ऊपर से ओझल हो जाए लेकिन आँख मूँद लेने से ही लोग हृदयस्थ हो जाते हैं संसार के इस संसार में ऐसा नहीं है जहाँ एक बार जिसकी छवि अंकित हो जाती है उसको मन का कोई भाव छिपाना संभव नहीं होता है वह अपने मन पर हाथ के पानार रख लेती है लज्जा से मुखड़ा लाल होने लगता है यह सोचने लगती है कि अपने शरीर की हलचल को कैसे रोक करे अपने रोक भर उसने अपना चेहरा ढक लिया लेकिन मुँदी आँखों पर भी हँसी के साथ हृदय के भाव झलक ही जाता है। चेतनपति उस नायिका को परामर्श दे रहा है कि दूसरे उसका कोई दोष नहीं है उसके पाहुन कामदेव भूखे हैं और भूखे प्राणी को भोजन दे देना ही है यह सभी गाहक इसी आतिथ्य के लोभ से हो रहे हैं। इसका उपाय यही है कि भूखे मनोज को संतुष्ट कर दिया जाए तभी सदय भाव हो जाएगा

चेतनपति के गीत और बासमती के स्वर साधना ने मेरे कुछ तो था लेकिन पेट की आग तो किसी तरह शांत होनी ही चाहिए इसलिए उस गीतज्ञ चेतनपति को छोड़ा था मगर दूसरा उपाय नहीं था तो फिर से रख पेटपा रख पोखर के पास खड़ी अनाज पक्षी को भगाने की कोशिश कर रही थी मुझे देखकर वह पोखर के पास कुछ दूरी पर ही रुक गयी। पेटपा समझ रही थी कि मैं उसके पास आऊँगा। मैंने उसके पास जाकर उसे बताया कि मैं भूखा हूँ। पेटपा ने मुझे बैठने के लिए कहा और खुद पोखर के किनारे से कुछ पत्ते और डंठल को इकट्ठा करने लगी। फिर उसने उसे जलाकर आग तैयार की। उसने पोखर से कुछ मछलियाँ पकड़ी और उन्हें आग में भूनकर मुझे खाने को दिया। मछली खाने के बाद मैंने पोखर के पानी से हाथ धोया और पेटपा के पास आकर बैठ गया। पेटपा मुझसे पूछने लगी कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ जाऊँगा। मैंने उसे बताया कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ जाऊँगा। पेटपा ने मुझे बताया कि वह पोखर के पास अकेली रहती है। उसके पति का देहांत हो चुका है और उसके बच्चे नहीं हैं। वह अपना समय पोखर की देखभाल करने और पक्षियों को भगाने में बिताती है। मैंने उसे बताया कि मैं एक लेखक हूँ और मैं अपनी यात्रा के दौरान लोगों से मिलता हूँ और उनकी कहानियाँ सुनता हूँ। पेटपा ने मुझे बताया कि वह अपनी कहानी किसी को नहीं सुनाती है। मैंने उसे बताया कि मैं उसकी कहानी किसी को नहीं सुनाऊँगा। पेटपा ने मुझे बताया कि वह अपनी कहानी सुनाने के लिए तैयार है। मैंने उसे बताया कि मैं उसकी कहानी सुनने के लिए तैयार हूँ। पेटपा ने मुझे बताया कि वह अपनी कहानी सुनाने के लिए तैयार है। मैंने उसे बताया कि मैं उसकी कहानी सुनने के लिए तैयार हूँ।

दुख की एक अनजाने रात तो किसी तरह कैसे गाँव सहर कहर और कहराते हो आ रहा था पेट कमर और छाती में मरणान्तक पीड़ा उठती थी और मन बेहोश हो जाता था देह लाद लादने पर चलाने पर जैसा किसी ने दर्द की फसल भूसलाद दिया हो पेन बाद भोर से ही दरद और आफ़त मचाने थी दर्द की हर टीस के साथ बेकाबू बेकाबू हो रहा था अब तो शरीर बेकाबू बेकाबू हो गया था किसी तरह से रमोहड़ा तक गए ताकि को खबर्दार सरपंच पटवा था कि वह मिल गया उसी सभी बात समझाकर दवा लाने के लिए कुछ रुपए दिए। करीब आधी रात बाद कुछ दवा और विश्वास ले आया। उसने एक बार दवा पिलाना दी और उसने सोने सोने के लिए बोल दिया। उसने बाद से ही अनजाने में ही अचेतन रह गया था।

दवा खाने से इतना फायदा तो हुआ कि शाम के लगभग चार बजे तक दर्द और कै रुक गया लेकिन दूसरी तकलीफ और बढ़ गई सभी थी जैसे-तैसे मेरी लगातार बिगड़ती हालत को देखते हुए सरपंच पटवा ने बैलगाड़ी का इंतजाम किया। हर तरफ कुहासा छाया हुआ था कि घर बाहर की सारी चीजें अदृश्य सी लग रही थी। हवा बराबर सन्नाटा बुनती रहती थी। बुखार से शरीर धधक रहा था। बुखार से शरीर धधक रहा था।

[illegible] थी [illegible] [illegible] [illegible]

के भीतर घुस आकर देह के बाल्य के सब भ्रम वैद्य जी के हाथों से दबाव भी ले लेते आखिर अढाई दिन में के बीकले आ जाते हैं।"

बहन को समझाकर रासबती चली गयी। वासमती ने अपना हाथ मेरे मुँह पर फेरा और धीरे से कंबल में घुसकर मेरे शरीर को कसते हुए सोने लगी वह सो रही थी या मैं समझ रहा था लेकिन उसे कुछ कहकर चुप कराता, वह सामर्थ्य मुझमें नहीं था।

पाँच वर्ष पहले भी मुझे ऐसा दुख हुआ था उस समय मेरा विवाह नहीं हुआ था। माँ और बहन साथ में ही थीं। माँ अपनी देह लगाकर सोयी थी और दोनों बहनें देह पर बैठती थीं। तीन चार दिन के बाद तबीयत सुधरी थी। घरेलू परहेज में अधिक सरोकार नहीं था लेकिन जिनके आश्रय में आए वे किसी तरह अपनों से बढ़कर साबित हुए। कहते हैं कि दुख में कभी-कभी आनंदित बीत ये देता है रासबती और वासमती ऐसी ही अनमोल थीं मेरे लिए।

रासबती वैद्य को लेने गयी थी। कोठरी में आते ही रासबती काम में लग गयी। वासमती ने उससे पूछा की कि वैद्य ने क्या कहा। रासबती कुछ बोली नहीं। कटोरी को बाँहों पर रखकर काढ़ा बनाती रही। वासमती वैद्य की बात सुनने के लिए इतनी उतावली हो रही थी। उसने दुबारा पूछा तो रासबती झल्लाकर बोली है वैद्यजी ने क्या कहा है। सबसे कहना था कि दूसरा गद्दा लाए हैं। कपड़ों हो सकता है। तुम लोग तो यहीं रहोगे। कोठरी के साथ घर भी देख दो। हम बिमारी में बहुत सेवा करना पड़ता है। देह गरम रखना पड़ता है। तुम लोग के पास कुछ इंतजाम नहीं है। सोने के घर गरम रखना पड़ता है। तुम लोग पैसे का गरमा इंतजाम नहीं है। कहने का तो हमको नहीं कहना। इतना बोलकर रासबती झाड़ू को कोठरी में रखने के लिए भीतर चली गयी। वासमती बहुत दुखी तो थी ही वैद्य की बातें सुनकर और बेचैन हो गयी। अपने पेट पर हाथ रखकर सिर को नीचा किए बैठी रही। रासबती ने फिर बोलना शुरू किया। वैद्य समझाता है कि दूसरा घर लेकर रहने से तो बच्चा लोग को सम्हालना आसान होगा। साथ भर नहीं पहले रहने वासमती को ज्यादा तंग करेगी। कोठरी में रहने वालों के घर पैसे दोनों। अपनी बहन के घर-संसार की तलाश में एक क्षण बोलती रही। वासमती ने इस बार उसी सूनी आँखों से देखा। उसकी आँखों में आँसू भरे थे। रासब

भी लगा कि हल्का हुआ। वैद्य ने कहा था कि मुझे घर भेज देना चाहिए क्योंकि ये लोग मेरी उचित देखभाल नहीं कर सकती थीं। इस बात से दोनों बहनें हताश हो गयी थीं। अब उन्हें लग रहा था कि हताश की आवश्यकता नहीं है। मैंने भी उसी क्षण में एक अहम फैसला कर लेना चाहा। मेरे बटुए में एक हजार से अधिक रुपए थे। उस समय का एक हजार आज के बीस हजार से अधिक रुपए होते। मैंने जूते की जेब से वह बटुआ निकाला और वासन्ती की ओर बढ़ाते हुए कहा, 'इन रुपयों से कोई धन्धा करो।' वासन्ती ने बटुआ लेते हुए कहा, 'लेकिन आपके इस रुपयों के पास रहने से कोई है मगर आपकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है।' इतना बोलकर उसने रुपए निकालकर एक बार देखा फिर बटुए में रखते हुए बटुआ वासन्ती की ओर बढ़ा दिया, 'ये लीजिए, मैं सम्हाल के रख लेती....।'

मेरी बीमारी तीन दिन और और बढ़ी तक बनी रही। इस दौरान वासन्ती की पीड़ा से दुखी मेरे अनुभव और उन रुपयों से सम्बन्ध करती दोनों दुखित बहनों की स्मृति आज मेरे जीवन की सर्वश्रेष्ठ निधि है। वैसे तो मेरी अकल्पनीय सेवा मुझे नहीं मिलनी होती तब उन अनुभवों को बाँटने के लिये मैं जीवित नहीं बचा होता। यदि दो सगे के लोग और दो सगे की सेवा का प्रकृत मैंने न देखा था। वैद्य ने वासन्ती से कहा था कि वह मुझे मेरे घर पहुँचा दे क्योंकि वैसी बीमारी में मेरी उचित सेवा उसके सामर्थ्य से बाहर की बात थी। साथ उनके दोनों का आपसान हटना गोदे में दूध पीते बच्चे को रखने का सेवायत्न नहीं करना। मेरे सेवाकाल में उनके बीमार की तबीयत की ओर रुख विश्वास को बढ़ाने के लिये दोनों बहनों ने आपस में झगड़ा। दोनों पर लगभग पैंतीस अठारह वर्षों की उम्र का सवाल था। वासन्ती ने आ के बदन को सेवायत्न नहीं के लिये बिना लुगा बदलने के आगे से सिकुड़कर सुन्न पड़ जाना है तो दूसरी मुरारजन से कैसे रात से भर और पेट से ऐसे सम्बन्ध उसकी सेवायत्न को प्रेरणादायी नहीं है। तू भी पैसे कर पर से और आपसी गले झगड़ने से हुए कर देख चुकना है। वासन्ती ने जैसा कुछ आवश्यकता से जैसा को कैसा। यह सभी मेरे पास से आसान नहीं हुई। यह सीन मेरी से उसे मेरी सीमा से उसकी नहीं थी। मेरे लिए अपने से वहाँ से जो उसे जाना चाहती थी। अपनी देह आकर्षक यह सही दुर्घटनाओं में कुछ भरती रही। यह आप से कुछ पोषणी नहीं। दूसरे अब की बीच दुर्घटना अवश्यकी उसे गयी थी मेरे भी सोचा फैसलाकर उसे यह से से पास्ता। मेरे से मेरे आपसान हटाने रही बीमारी की उसके पास से साथ हाथ दूसरे से से यह यह। से नहीं मेरा कैसे उसे बच्चों के लिए दोनों बहनों से मेरे उसके भाभी देह यह दिन। यह यह नहीं। यह आसान से मेरी से से बहनों को आज मैं सम्बन्धों की सेवा याद कर लूँ। इससे अधिक मैं और कर ही क्या सकता हूँ।

भीड़ी रात बुखार उतर गया और देह में कहीं दर्द भी नहीं था। इसलिए उसकी नींद से बीमार था। मेरे लगा। मैंने पैर नीचे लटका से के सहारे लेकर रोटी खाई और सात से बना गयी। मैं के बाद फिर सोने लगा। वासन्ती भी रोटियाँ खाकर गयी। फिर इसी बरामदे में एक बिछावन ले आई। उसने सिर पर से कैसी मेरे के लिए मेरे के सामने और पैर की ओर पाँव पैरवाई और सोई। बुखार तो उतर गया है लेकिन शरीर में कमजोरी है। इसके लिए अब करना पड़ेगा। मेरे मन में यही सोचते। पैर को बीमे होंगे। यह वासन्ती से से मैं भी सोई। मेरी भाभी की वासन्ती। मैं से से मेरे लिए के हैं। मैं से सोचकर आगे पर गये करते मेरी होती मेरे से को मैं। बुखार उतर गया है मैं भी से है सोई करना नहीं फिर से करना। मैं से से मेरे। मैं से से मेरे। मैं से से मेरे

है वह किसी अंधेरी सुरंग की तरह हवा हवा सी क रही थी और बांसती भी ना रही थी यह देर तक नाचि से जंगल पेड़ और चाँद तक सोकती रही तीन दिनों में दद कभी मुझसे अलग नहीं सोयी चाय पहली बार मैं उसे रसोई के साथ पेश रखा था प्रॉस्ट मिली को एक मुस्कान के साथ लेता गयी उसकी तबीयत को लेकर चिंतित हो उठा और कमरे में घुसकर मुझसे लिपट गयी मुझे लगा बासमती अपनी निर्मलता से किसी स्वर्ग के लोक लोकर जैसा पेड़ा आध्यात्मिक स्नान करा रही है धीरे धीरे मुझे छोड़कर जाने लगा।

एक सुबह मैं घर से उठा सब बिलकुल हल्का था, देह में कहीं कोई पीड़ा नहीं थी दुख का एक भयानक सच बीत चुका था आज का मौसम भी सुनहरा था लोगों ने लंबे समय के बाद भरे पुरे सूर्य का दर्शन किया था दुख का कुहासा जब छंटता है तो लोग भूल जाते हैं कि कुछ देर पहले का दृश्य कितना भयावह था पलक झपकते मन बदल जाता है यही संसार की माया है मेरी नींद जब टूटी तब तक पूरे परिवार में खबर फैल चुकी थी। रामबती आंगन बुहारने पर लगी हुई थी और बासमती मेरे पास ही बैठी मुझे निहार रही थी मेरी आँख खुली तो पहली नजर उसी पर गयी वह मुस्कुरा रही थी उसने मेरे ललाट पर हाथ रखते हुए पूछा, "अब मन अच्छा लगता है न.... ?"

पैर अंगद सदा से अपनी जगह से अविचल थोड़ी देर रुका जैसे ही रुकने का मन किया है मेरी दृष्टि में सामने का सारा दृश्य घूम गया और हम दो लड़के दिखाई दिये, कुछ देर तक हम दोनों में कुछ बातें हुई फिर हम लोग एक दूसरे को पहले की तरह आलिंगन में बांधे हुए थे मेरी आँखों से आंसू बह रहे थे हम दोनों की पहली मुलाकात याद आ रही थी हम दोनों ही कैसे दुर्भाग्यशाली लोग दुख के मारे हुए हैं हम दोनों के जीवन में कुछ एक समानता थी हम दोनों ही बचपन में माँ के प्यार से वंचित हो गए थे हम दोनों ही अपने पिता के कठोर अनुशासन में पले बढ़े थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति विद्रोह से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति घृणा से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति क्रोध से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति नफरत से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति बदले की भावना से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति हिंसा से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति अहिंसा से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति प्रेम से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति करुणा से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति दया से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति क्षमा से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति मैत्री से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति मुदिता से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति उपेक्षा से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति शांति से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति आनंद से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति परमानंद से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति ब्रह्मानंद से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति सच्चिदानंद से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति ईश्वर से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति अल्लाह से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति गॉड से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति वाहे गुरु से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति बुद्ध से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति महावीर से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति कृष्ण से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति राम से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति शिव से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति ब्रह्मा से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति विष्णु से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति महेश से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति त्रिदेव से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति त्रिमूर्ति से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति त्रिलोकीनाथ से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति त्रिलोकेश से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति त्रिलोकपति से भरे हुए थे हम दोनों ही अपने पिता के प्रति त्रिलोकाधि

इस समय मुझे आपसे मैं खो न दूं अक्सर यही डर सताता था, यह अंधेरे का डर जब मुझे अपनी कुलक्षिता दीदी कहना चाहिए था, वैसे कारणों से कहीं ज्यादा आप चोरों पर बहुत बड़ा डंडा लेकर पड़ी न कि कहीं गड़ी, आपका उपकार सदैव मेरे मन में रहेगा मैं सदैव ही रहूंगा लेकिन आपकी दीदी का उपकार जरूर मेरे माथे पर चढ़ गया ..... ।"

दीदी ने आप पर उपकार नहीं किया, उन्होंने मुझे पर किया है, वो आपको साथ लाने के लिए ही गिरा, उसने अपना सब्र ही खो दिया था, उसने अपने कमरे तक बंद कर लिए थे, मुझे डर था मैंने आपको अंधेरे वाली में बंद कर दिया था, मैं नहीं चाहता था, आपके साथ बेरुखी की मैंने थोड़ा आपको दरख्त के ऊपर और कुछ बौखारे में आप को शाल को साहब नहीं रखने दिया, उसने मेरी शक्ल नोटों का सब्र ही रखने को लोक से खुश तो दे दी थी दीदी रुपयों का लालच होती है, उसे आपके प्रति मेरी के उसे आपको अंधेरे में बंद कर मेरे इरादे से लेने के लिए, मैं उसे रुपये लालच देकर आपको लाने के लिए कहा था, मैंने उसे कहा था, वह आपको लेकर आएगी, लेकिन वह आपको लेकर नहीं आई, दीदी ने मुझे धोखा दिया, मैंने उसे रुपये दिए थे, उसने मुझे भी धोखा दिया

सामने
हो चुका था।

कहीं-कहीं समलीचा पार्टी का खेमा भी लगा रहता था

छतों से लगा लिया। अब हम थोड़ी मिन्न थे

समार साथ दो विदेशी चेहरों को अपना देखकर काछा बहुत प्रसन्न हुआ नेपाल में पुराने समय से अनेक देश के पर्यटक आते रहे हैं इसलिए विदेशी महिलाओं को देखकर काछा को आश्चर्य नहीं हुआ बातचीत के लिये एक शतरंजी बिछाने और बोलने के लिए पत्ते मंगाने का हुक्म काछा बेटिल के एक पहाड़ी दुकानदार से पत्ते की बनी कुछ प्लेटें ले आया सामग्री से सजाकर थाली प्रस्तुत होने अचार की गंध सभी के मन पर छाने लगी। उस गंध ने सबों की भूख जगा दी। समार पास बैठकर के सामान इकट्ठे थे कि साथ आये आदमी भर पेट खा सकते थे। सब भरकर खाने मुख्य सामग्री ,बनियम ,दाल से बना पुआ और लसकोन में आलू की सब्जियां चने का सागर अचार काछा को अचार बस पर से सिंगापुर दुकान से खरीदकर आया था काछा खाने का बहुत शौकीन है। सबों का तो नहीं कुछ चटपटा अचार हुआ अच्छा लगा कि वह उसकी खाने की सभी चीजों को बहुत पसंद करेगा भोजन के बाद भी भोजन बहुत देर तक चलता रहा काछा ने अपने पारिवारिक दुकानदारों में बाँट दिया शेष को बाद घर ले जाने के लिए पैक कर दिया।

पीने के बाद सबों का मन झुठ गया

[illegible] बाद सबों ने अपने-अपने कमरों में जाकर आराम करने का निश्चय किया। लेकिन हुआ कुछ और ही। शतरंजी पर बैठकर काछा ने पत्ते फेंटने शुरू किये। समार ने देखते ही चार पत्ते निकाल लिए। [illegible] ने भी दो पत्ते उठा लिए। [illegible] ने भी दो पत्ते उठा लिए। [illegible] ने भी दो पत्ते उठा

हम लोग बचपन में यूरोप की पुस्तकों में पढ़ते थे कि अफ्रिका की काली जनजातियों के लोग जंगलों में पेड़ों पर उल्टी लटककर और पत्थर का साथ रगड़कर आग पैदा करना जानते थे। सन् 1960 के दशक तक भी विश्व के लोग अनजान थे। उनका खान-पान, रहन-सहन और पुरानी परंपराएं बाकी दुनिया से बिल्कुल अलग थीं। अफ्रीकी समाज का रहस्यमयी पर्दा तभी उठा जब विदेशी लोगों ने उनकी धरती पर कदम रखा। गोरे अंग्रेजी लोगों की संख्या में कम होने के बावजूद उन्होंने अफ्रीकी लोगों को पशु की तरह पकड़कर जंजीरों में बाँधकर उनके शरीर पर अपना मालिकाना छाप लगाकर झुंड के झुंड अफ्रीकियों को अपना गुलाम बनाकर अमेरिका लाने लगे। यह सिलसिला 1680 ईस्वी से प्रारंभ हुआ। प्रारंभ में गोरे लोग अफ्रीका के तटीय क्षेत्रों से लोगों को पकड़कर लाते थे। बाद में अफ्रीकी लोगों को पकड़कर लाने के लिए अफ्रीका के अंदरूनी क्षेत्रों में भी अपने एजेंट भेजने लगे। इसके बाद अफ्रीकी लोगों को पकड़कर लाने के लिए अफ्रीका के अंदरूनी क्षेत्रों में भी अपने एजेंट भेजने लगे।

एक रजिस्टर से दूसरे रजिस्टर तक नाम के हिसाब से अफ्रीकियों को लाकर बेचने वाले व्यापारियों के दलालों को अफ्रीका के तटीय क्षेत्रों में बैठाया गया। इन दलालों को अफ्रीकी लोगों को पकड़कर लाने के लिए अफ्रीका के अंदरूनी क्षेत्रों में भी अपने एजेंट भेजने लगे। इसके बाद अफ्रीकी लोगों को पकड़कर लाने के लिए अफ्रीका के अंदरूनी क्षेत्रों में भी अपने एजेंट भेजने लगे।

अफ्रीकी समाज की यह एकता सफेद चमड़ी वालों के लिए बहुत फायदेमंद साबित हुई। इस कारण उन्होंने अफ्रीकी लोगों को आपस में लड़ाकर उनकी एकता को तोड़ने का काम किया। इसके बाद अफ्रीकी लोगों को पकड़कर लाने के लिए अफ्रीका के अंदरूनी क्षेत्रों में भी अपने एजेंट भेजने लगे। इसके बाद अफ्रीकी लोगों को पकड़कर लाने के लिए अफ्रीका के अंदरूनी क्षेत्रों में भी अपने एजेंट भेजने लगे।

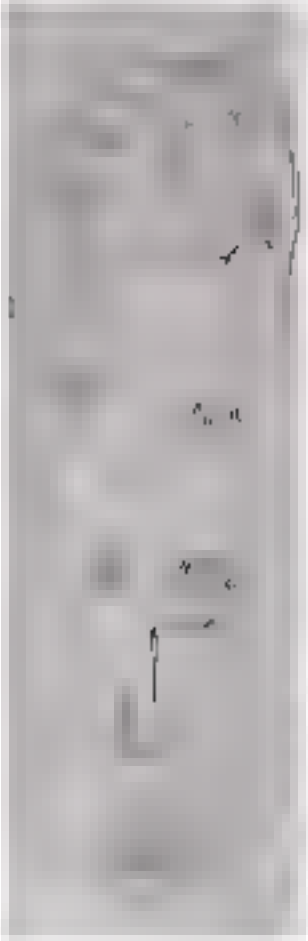

की चिंता नहीं थी दुकान के पीछली भाग में महिलाओं

अलग-अलग विषयों पर केन्द्रित था।

खरीदारी का काम खत्म होने के बाद हम लोग इकट्ठे अलीसाहेब के कमरे में आए यहाँ कई तरह की बातों पर परस्पर आदान-प्रदान हुआ। मैं मुख्य बातों का अनुवाद करके वासमती को बताते जा रहा था। मैंने संक्षेप में अपनी और वासमती के साथ जुड़ाव की कहानी भी कही उनके विचार से वासमती की योजना, कि गोदना की पुस्तक तैयार हो और दलित स्त्रियों को प्रशिक्षण देकर काम में लगाया जाए बहुत रचनात्मक और लोकोपयोगी थी

उस समय तक मुझे मिथिला या देश के अन्य भागों में अधुनिक गोदना-परंपरा के संबंध में कोई खास जानकारी नहीं थी मेरे घर के पीछे एक बूढ़ी महिला रहती थीं लोग उन्हें सालकाकी कहते थे मैंने उन्हें देवनागरी, कैथी और मिथिलाक्षर या तिरहुता में पढ़ते-लिखते देखा था। उनकी छाती और बाँह गोदना से भरी हुई थी 1935–40 इसवी तक मिथिला में सभी जाति की हिंदू स्त्रियाँ

रूप में, प्रायः विशेष अंग में था उसमें हाथ की कलाई पर भी गोदना का काले एग का यह गोदना बहुत सुंदर लगता था पास शिव में कुछ था। अलीसाहेब ने बताया कि स्पेन की प्राचीन शिल्पकलाओं में इस बैल की आकृति साथ दिखाया गया था और छाती जैसे अलंकरणात्मक सजावट थी। बताया कि उसकी जाँघ पर बैल आकार का एक क्रॉस (ख्रीष्टीय प्रतीक) गोदा हुआ है जो उसके वासमती को ट्रांइलम में दिखलाया था मगर यह गोदना आधुनिक मशीन से गोदा गया था अलीसाहेब ने मेरे सामने अफ्रिकी गोदना की संबंधित कई फोटो रख दिया उन फोटो में उसकी जाँघ वाला फोटो भी था

प्रचलित लोककलाओं से मैं उस समय तक अनभिज्ञ ही था। अलीसांद्रा ने मुझे बताया कि प्रलय चाहे भारतीय लोककलाओं के उद्गम का हो अथवा किसी दूसरे देश की कला-परंपरा का आदिकालीन शैलचित्रों अथवा गुफाचित्रों को इनका मूल स्रोत माना गया है भारत में ऐसे शैलचित्रों का बाहुल्य मध्य प्रदेश (छत्तिसगढ़ समेत) महाराष्ट्र उड़ीसा और आसाम से जुड़े उत्तर-पूर्व के राज्यों में प्रागैतिहासिक काल से रहा है मध्य और उत्तर पूर्वी ये भाग भारतीय कला के विकास में सभी युगों में प्रतिनिधित्व करते रहे हैं इन्हीं क्षेत्रों में भारत की प्रचीनतम आवादी के साथ शैलचित्रों का समृद्ध संसार भी संकेंद्रित रहा है भौगोलिक और ऐतिहासिक रूप से ये राज्य अपने पड़ोसी राज्यों के साथ अनेक प्रकार से जुड़े रहे हैं जैसे कि मध्य प्रदेश के साथ (छत्तिसगढ़ समेत) उत्तर प्रदेश और आंध्र प्रदेश महाराष्ट्र के साथ गुजरात और कर्णाटक उड़ीसा के साथ बिहार बंगाल और आंध्र प्रदेश आसाम के साथ बंगाल और उत्तर-पूर्व के आदिवासी क्षेत्र।

अलीसांद्रा भारत में काफी घूम चुकी थी भारतीय कला परंपरा और खासकर आदिवासी कला में उसकी गहरी पैठ बन गयी थी उसकी बातों से पहली बार कला विषयक मेरा ज्ञान बढ़ रहा था विश्लेषण के क्रम में उसने मुझे बताया कि राज्य क्षेत्रों के भौगोलिक और ऐतिहासिक संबंधों का प्रभाव उस क्षेत्र की कला विकास पर महत्वपूर्ण होता है इस दृष्टि से मध्य प्रदेश जो वास्तव में भारत का हृदय प्रदेश है. भारतीय कला के उद्भव और विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण क्षेत्र है शैलचित्रों और गुफाचित्रों के लिए प्रसिद्ध भीमबेतका मध्य प्रदेश में स्थित है। पुरातत्ववेत्ताओं की मान्यता है कि भीमबेतका में मनुष्य का आदिम रूप कम से कम एक लाख वर्ष पहले उपस्थित था, यहाँ मिले कुछ शैलचित्र तीस हजार वर्ष पुराने हैं। कहा जाता है कि भीमबेतका नाम महाभारत के महाबली पांडव भीम के नाम पर पड़ा। लोक परंपरानुसार, पांडवों को अज्ञातवास की अवधि में भीम ने यहीं पर हिडिंबा से विवाह किया और इसी आधार पर उस स्थान का नाम भीम बैठका भीमबेतका पड़ गया। जिस प्रकार भीमबेतका शैलचित्रों के लिए प्रसिद्ध है उसी प्रकार बस्तर गोदना के लिए प्रसिद्ध है

पहली बार अलीसांद्रा ने ही मुझे बताया कि छत्तीसगढ़ में गोदना का प्रचलन आदिवासी युवक और युवती आदिकाल से परंपरागत रूप से रहा है अब ये आदिवासी समुदायिक रूपों में सिमट गयी हैं और गोदना लोकर बनजारा और गाड़ाओरी आदि समूहों के रूप में जानी जाती है। इन आदिवासी में सभी वयस्क पुरुष और स्त्रियाँ अपने शरीर पर गोदना गुदवाते हैं किंतु स्त्रियों के शरीरी अंगों पर गोदना गुदवाना अधिक लोकप्रिय है। गाड़ाओरी समुदाय में गोदना इनकी समूह का परिचायक चिन्ह है

लगातार सालों से अलीसांद्रा को लिए करीब दर्जन भर फोटो फिल्में थी इन सभी फिल्मों में आदिवासी स्त्री पुरुषों की देह पर गोदनों को ढूंढ-ढूंढकर बनाए विभिन्न डिजाइनों पर थी अलीसांद्रा और मैंने फोटोग्राफरों ने ये फोटो उस समय लिये थे जब वहाँ का जनजीवन आज जितना विदेशी प्रभावों से आक्रांत नहीं था एक तो कोई भी स्त्री दूसरे तन ढंके फोटो देखकर हतोत्साहित नहीं होती है किंतु आसमानी के लिए लोगों से भी अधिक इस आश्चर्य का विषय था कि स्त्रियों की आँखों पर भी गुदनों को काटकर इस तरह के गहने भी हो सकते थे। फिर भी वह हैरानीदार थी। लगता था जैसे वे सभी स्त्री पुरुष गुदनवाने की प्रक्रिया अपने शरीर पर लगा लिये हों

बातचीत के प्रवाह में यह पता ही नहीं चला कि रात अधिक होती जा रही थी। मैं उनसे बहुत कुछ सीख रहा था लेकिन घर तो जाना ही था। ओरोथी और अलीसांद्रा ने विचार दिया कि भोजन उनके साथ ही कर लें और कल दिन में दूसरे दौर की बातों के लिए बारह बजे तक आ जाएँ। ऐसा ही हुआ। संयोग अच्छा था कि होटल से निकलते ही रिक्शा मिल गया। भानु चौक से आगे स्टेशन की ओर बढ़े तो जूते-चप्पल की एक दुकान खुली मिल गयी। बासमती के लिए चप्पल खरीदना बाकी था। चप्पल भी अच्छा मिल गया। चप्पल का दाम तो अधिक था लेकिन इतने वर्ष बिताकर पहली बार अगर मँहगा भी हो तो हर्ज नहीं। अब बासमती का पहनावा पूरा बदल गया था। बदले परिधान में उसका सौंदर्य और भी निखर गया था।

रात की ठंड बहुत बढ़ गयी थी लेकिन मुझे इत्मीनान था कि अब बासमती की देह पर गर्म स्वेटर और शॉल थे। उसकी सुंदरी देखकर मैं बहुत खुश था। बासमती के साथ मैं उसके घर तक आया और उसे अपने स्थान तक पहुँचाकर वापस ऑफिस आ गया।

अगले दिन मुझे बासमती के साथ अलीसांद्रा और ओरोथी से बारह बजे कोलन होनी है। मैं निकला था ग्यारह बजे हम लोग अपने स्थान से विदा हुए। हम दोनों रास्ते में ही थे तभी वह दोनों टहलते मिल गयीं। एक दूसरे को मिलकर हम लोग प्रसन्न हुए। होटल में पहुँचकर ओरोथी ने तीन कप कॉफी और बासमती के लिए चाय मँगवायी। कॉफी पीने के बाद ओरोथी अपना स्वेटर निकालकर बासमती के बगल में बैठ गयी। उसकी पूरी पीठ पर चित्रण बना हुआ था। उसके काम बहुत महीन थे। बासमती उसकी पीठ पर उँगली घुमाकर आश्चर्यचकित हो रही थी। मैंने ओरोथी से आग्रह किया कि वह हमें अफ्रीकी समाज की गोदना-परंपरा के बारे में बताये।

ओरोथी ने अफ्रीकी लोगों की त्वचा पिगमेंटेशन स्वीकार कर चित्रकला के प्रति उनके आकर्षण पर चर्चा करते हुए कहा कि अफ्रीकी लोगों की त्वचा और और त्वचा का पिगमेंट मानवी हो तो उस पर की गयी चित्रकारी देखिए। त्वचा पर की चित्रकारी के लिए पिगमेंट का होना अत्यंत आवश्यक है। यह चित्रकारी का पैमाने भी गोदना से अलग किस्म का होता है। उनकी मान्यता है कि मनुष्य की देह और मेह या मन दोनों ही चित्रों का आवासस्थान होता है तभी उनका देखना होता है इसलिए उनका मानना होता है कि देह और मेह दोनों को सजाकर रखो। उनके घर प्राय: बीच लकड़ी के ऊपर ही बने होते हैं जिस पर तरह-तरह की पैदावारों मिट्टी का दीवार खड़ा होता है। प्लास्टर सूख जाता है तो उस पर लाल काले और सफेद रंगों से चित्रकारी की जाती है। लोगों उनकी शरीर का रंग प्रकाश करना होता है कि उस पर कोई रंग चढ़ना कठिन होता है इसलिए कुशल पेशेवर कलाकार उनकी त्वचा को काट काटकर अलग-अलग प्रकार के डिजाइन से शरीर को सजाते हैं। शरीर को कैनवास बनाकी इस संवेदनशील कला को हम यहाँ टैटू करना कहते हैं। टैटू बनाने के क्रम में शरीर का बहुत रक्त निकल जाता है। माना जाता है कि बहा हुआ रक्त किसी को अर्पित करने होता है। आई पाकर निश्चय प्रसन्न होते हैं। टैटू बनवाना वस्तुत एक अनुष्ठान होता है।

डोरोथी और अलीगढ़ा तो मेरे साथ अंग्रेजी में बात कर रही थीं, लेकिन मेरी अंग्रेजी उस समय उतनी अच्छी नहीं थी कि सभी बातों [illegible] रहता था... मैंने अपनी समस्या उन दोनों से बताई. वह समझ गयीं [illegible]

पौधा-चित्रण (अपरत्व से चित्रण / चित्रण पदबंधपरक) एक क्लासिक प्रश्नित परीक्षा है जिसकी परीक्षा लंबे समय तक चलन करना पड़ता है इसमें पात्र सूचनाओं में अर्थ संपन्नता लाने जोड़ते हैं, जिसका की शिक्षा पीढ़ियायक होने के अलावा खतरनाक भी है. किंतु इनका समाज में [illegible] जाता है और इनके चित्रकार भारतीय अभी मौलिक वैशिष्ट्यपूर्ण होते हैं

[illegible]

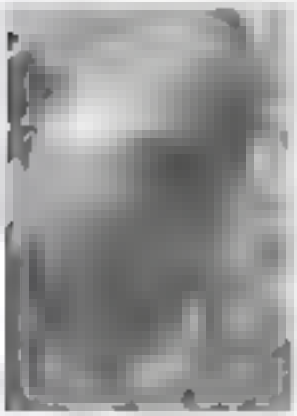

ओरोची ने जनजातीय समाज में गोदना की सामाजिक अनुबंध पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ऑस्ट्रेलिया में पूर्वकालिक समय में, नक्सार–गोदना सभी एबोरीजनल समुदाय में व्यापक रूप से प्रचलित था किन्तु अब इसे कानून द्वारा उत्तरी राज्य क्षेत्र के अर्नहेमलैंड तक सीमित कर दिया गया है। यहाँ 16 वर्ष की आयु में, पुरुष और स्त्री दोनों की छाती, कंधा और पेट पर नक्सार लगाया जाता है ऐसे चिन्ह से रहित, सपाट चमड़ी वाले लोग सामुदायिक सदस्यों के परंपरागत व्यापार, आनुष्ठानिक नाच–गान और अन्य सामाजिक उत्सवों में भाग लेने के अधिकारी नहीं होते हैं इथियोपिया की कई जनजाति में पुरुष अपनी छाती पर नक्सर गोदना बनवाकर प्रदर्शित करते हैं कि उसने दुश्मन कबीले के कितने लोगों को मारा है। स्त्रियों के वक्ष पर बना गोदना उनकी काम–प्रियता का प्रतीक माना जाता है

सामाजिक परंपरा में गोदना के प्रभाव की चर्चा करते हुए आजीवाद्रा ने बताया कि तंजावूर सुल्तान में नूवा जाति की लड़कियों सुरक्षात्मक दृष्टि से पहले परंपरागत रूप से अपने कपाल, छाती और पेट पर गोदना बनवाती हैं पहली बार रजस्वला होने पर ये लड़कियाँ दूसरी बार सांस्कारिक बनावटों के रूप में दोनों वक्ष के आस–पास पीठ बनवाती हैं गोदना की यह प्रक्रिया धीरे–धीरे आगे बढ़ती है और जब तक लड़की बच्चे को जन्म देती है तब उसके दो. छोड़ने की भाँति व्यापक रूप से छाती वक्ष के रूप में, पीठ के [illegible] और अधिक पर गोदना बनाया जाता है इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि नूवा जाति में गोदना स्त्रीत्व व मातृत्व सौंदर्य और शिष्टता की अभिव्यक्ति होता है

[illegible] के तौर पर [illegible] से पाये जाने वाले इस प्रथा में अविवाहित लड़कियों को लड़के वालों के सामने प्रदर्शित किया जाता था, जहाँ भी [illegible] पर पूर्व अभिनेत्री ने गोदना कराने की सार्वजनिक [illegible] को पढ़ने के बाद ही [illegible] गोदना की कोई पहचान नहीं होती है पीड़ा की कठिन परीक्षा को पार करने हुए [illegible] के बाद ही कोई व्यक्ति सम्मानित सामाजिक सदस्यता प्राप्त करता है [illegible] को अनिवार्य लोगों के बीच गोदना प्रथाओं के साथ गोदनकला का सार्वभौमीकरण से संबंधित तकनीकी साम्य सम्भवतः है कि गोदना [illegible] को संबंधित सांस्कृतिक मनुष्य और किसी सुधर अवयव विशेष की में कोई अंतर नहीं है दक्षिण पूर्व एशियाई [illegible] के लोगों का विश्वास है कि उनके शरीर पर बने गोदना मृत्यु के बाद आत्मलोक तक जाने की यात्रा में मुद्रा विनिमय की तरह होते हैं क्योंकि इथियोपिया की ओमो घाटी की मुरसी जाति सौंदर्यीकरण के उद्देश्य से गोदना बनवाती हैं यहाँ की स्त्री पुरुष अपने शरीर पर किसी दुश्मन व्यक्ति की [illegible] जैसे विजयोत्सव मनाते हैं इस तरह के विजयोत्सव का कोई प्रतीकात्मक अर्थ तो नहीं होता है किन्तु ऐसे [illegible] विजयोत्सव जिन के लोगों को आकर्षित करते हैं

अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया में प्रचलित गोदना परंपरा के मनोवैज्ञानिक पक्ष का उद्घाटन करते हुए, ओसाकी ने कहा कि नक्सार गोदना बनवाने के क्रम में यद्यपि कि बहुत प्रारंभिक यह लगता है और प्रारंभिक गोदना

भी होती है फिर भी प्रथा से जुड़ी जनजातियाँ इस परम्परा का अनुपालन अवश्य करती है इसके पीछे उनका तर्क है कि यह किसी व्यक्ति की स्वस्थता सहनशीलता और बहादुरी को प्रदर्शित करता है जो उन कर्तव्यों की पूर्तिता और जिम्मेदारी का मानक है इस मनोवृत्ति का प्रदर्शन वस्तुतः किसी तरुण बालक या बालिका के यौवन-अनुष्ठान के अन्तर्गत चलने वाले गोदना से ही शुरू हो जाता है जब कम आयु के तरुण को यह प्रमाणित करना पड़ता है कि वह वयस्क आयु की जिम्मेदारी खासकर युद्ध में घायल होने अथवा मृत्यु की आशंका झेलने का दम रखता है इसी प्रकार एक तरुण बालिका को यह प्रमाणित करना पड़ता है कि शिशु जन्म के क्रम में होने वाली असहय पीड़ा को झेलने में वह सक्षम होगी पीड़ा के साथ भविष्य के रूपान्तरकारी तत्व का गुहार वास्तविक दैहिक अनुभव से होता है और भविष्य के सुखद आनन्द से परिचित के एक तरह की स्वचालित प्रक्रिया होती है जो हर्षातिरेक मुक्त स्राव करती है और आध्यात्मिक अनुभूति को प्रेरक होती है। इस प्रक्रिया से एक तरह की स्वाभाविक स्थिति बनती है और आदमी दर्द को किसरकर गोदना करवा लेता है।

डारोथी और अलीसाद्रा ने गोदना परंपरा पर गहन अध्ययन किया था यह एक अच्छा संयोग था कि उनसे हमारी भेंट हो गयी मुझे लगा यह प्रकृति को निहारने है प्रकृति कहती है कि अपने विश्वास से मुझे इस देह कलश को मैं अपने भविष्य के कर्म पथ का पाथेय बना लूँ बातचीत का क्रम अभी भी चल रहा था उनका मानना था कि विश्व के आदिम जनजातीय समाज में समय के साथ गोदना के शैली और विधि में सुरक्षा की दृष्टि से परिवर्तन होता रहा है किन्तु इसका आधार सिद्धान्त वाक्य वही है जो आदिम युग में था जैसा कि गोदना शब्द से स्पष्ट होता है त्वचा को सुई चुभोकर गोदकर कोई रेखा को दर्शाकर स्थायी चिन्ह बनाना जिससे शरीर का रूपान्तरण हो इसका मूल उद्देश्य यह है आध्यात्मिक रूप से इस परम्परा का प्रसार पूरे विश्व में हुआ और हर समूह इसे एक ही धार्मिक सामाजिक दैहिक और आध्यात्मिक संदर्भों के लिये तुले प्रभाव के अन्तर्गत रखता था। भारत में सहारिया जैसी जनजाति से संबंधित अनुसंधान करते समय हमने पाया है किन्तु विश्व की अनेक जनजातियों जैसे कि ऑस्ट्रेलिया न्यूजीलैण्ड पापुआ न्यूगिनी फ्रांसीसी पोलिनेशिया सामोआ फिजी सोलोमन द्वीप और प्रशांत के अन्य आदिम समाज में गोदना प्रथा पर अधिक प्रामाणिक तौर पर अध्ययन हुआ है। इस संदर्भ में मुझे लगता है कि विश्वभर विश्वविद्यालयों के मानव शास्त्र विभाग में गोदना प्रथा पर अधिक प्रामाणिक अध्ययन होना चाहिए और इसके एक नयी दिशा दृष्टि प्रदान करे।

अलीसाद्रा बताती थी कि जनजाति समाज में गोदना के साथ विशेष बात है कि आदमी से लेकर पशु तक सभी को गोदना किया जाता है और प्रत्येक का अपना विशेष महत्व है। अलीसाद्रा ने आगे बताया कि समाज हमारी नजरों से अलग होकर एक नई दृष्टि से देखने लगता है यह अपने देह विश्व को किसी साधारण कपड़े कलकल जैसा समझता था कपड़े की तरह उसे भी प्रतिदिन धोता था और उसे प्रेम करता था उसे अपने शरीर को कैनवास के रूप में मानकर चित्रकार की तरह उसे सजाता था और आनन्द भी है जब व्यक्ति अपने को बहुत आधुनिक मान रहा है तो [illegible] से [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible]

बात कहने में सभी लोग ऐसी मगन थे कि पता ही [illegible] खाना कब सीझ हो गयी। वह दोनों तो दिन का भोजन करना भी भूल गयी आखिर विचार किया गया कि एक दिन में गोदना के दीर्घवेक प्रसाद पर चर्चा संभव नहीं है इसलिए अभी बातों को विराम दिया जाए और अवसर मिलने पर फिर इस विषय पर आगे काम किया जाए अलीसाहा ने गुड़ी अंगिनी गोदना से समबंधित कुछ फोटो और अपने नोट दिखा दिदा होते समय मसानं बासमती को अपना गुप्त गोदना-भंडार दिखलाने के लिए और चित्र बनाने के लिए बहुत धन्यवाद दिया दो ही दिन में हम लोग एक दूसरे के अनिष्ठ मित्र जैसे हो गए थे आखिर कोयली पीकर हम दोनों यहाँ से चलने को हुए तो अलीसाहा ने बासमती को एक सुंदर पर्स कुछ पेंसिल और इटली में बना एक बॉडी लोशन, देह में लगाने वाला क्रीम दिया, झारखंडी से बोड़ा क्रीम फ्रेंगनी से लगाकर छत्तीसगढ़ी फाड़ी पर गुदे हाथी पर मल दिया। हाथ और बाँह पर क्रीम मलते ही कमरे में एक दिव्य सुगंध फैल गयी और गोदना की छाप एकदम चमकने लगी अलीसाहा ने बताया कि यह क्रीम लैवेन्डर धारा के महीन फूल से बना था।

कुछ देर चलने पर हम सकुशल उतरकर घर आ गए वास्तव में वह स्थान शांत और रमणीक था कहीं एक जगह बैठने के बाद मैंने धीरज से कहा कि कुछ देर चुप रहकर घर पानी में पड़ती रंगोली ही डालेंगे,वहां देखे पाने नहीं. बस पिछले दो दिनों के घटनाक्रम को मन में दोहराने का प्रयास करने लगे मेरे कमरे में पाया से अतिशयकर बैठ गयी

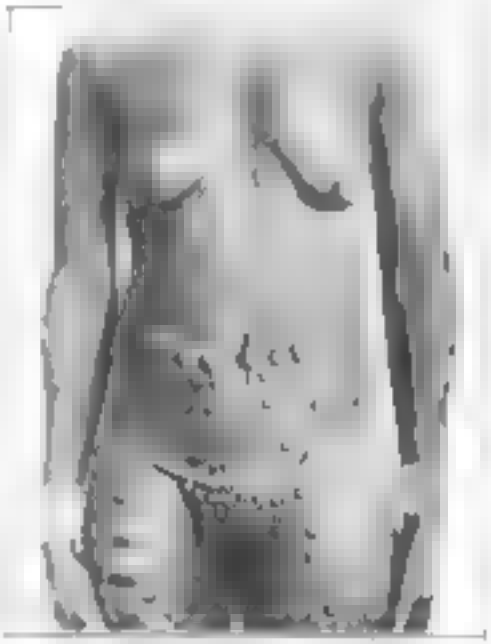

मैं सोफाथी और अलीसांदा से सुनी बातों को चित्रवत् प्रधानी चाहता था ये बातें मन में उतनी ही कौतुकी जाती थी मैं पहली बार मानव-संस्कृति के किसी एक पक्ष को इतने विशाल स्वरूप का अवगाहन कर रहा था जो मेरे मन-मस्तिष्क से अँट नहीं रहा था मैं अफ्रीकी समाज के संबंध में कुछ खास नहीं जानता था, किंतु उनके मन अंतर में कल्पनातीत पीड़ा झेलने के बाद बने गोदना, अपनी परंपरा के प्रति उनका प्राणाधिक लगाव और अमेरिकी लोगों द्वारा उन्हें गुलाम बनाए जाने की घटना मेरे मन में उनके प्रति सहानुभूति के भाव भर रही थी मुझे लगा कि गोदना के पाश्चात्य प्रयोगकर्ता किसी न किसी रूप में एक दूसरे के बहुत नजदीक हैं चाहे वे [illegible] निजी हर्ष और प्राणांतक कष्ट सहने के बाद देह को सजाने की [illegible] प्रवृत्ति [illegible] प्राचीन [illegible] विलियों-पीढ़ियों का संपूर्ण [illegible] [illegible] [illegible]

मेरे प्रति वासमती और उसकी बहन का अटूट विश्वास और मेरी भलमनसी पर उनके भरोसे का अनुभव करके मैं कई बार अपने आपको धन्य मान चुका हूँ। मगर केवल एक बात है जिसके कारण मैंने कभी-कभी भीतर ही भीतर अपने आपको अपराधी भी माना है। मैं जिस सामाजिक परिवेश में पला-बढ़ा और छुटपन से जिन लोगों की संगत में रहा उसका एक प्रभाव तो मेरे स्वभाव पर गहरा पड़ा। मेरी मंडली के प्रायः हर सदस्य स्त्री-देह की कामुक व्याख्या में काफी रुचि लेते थे। यद्यपि कि इस मनोवृत्ति के कारण किसी ने कोई बड़ा अपराध नहीं किया, किंतु किसी लड़की को देखकर छींटाकशी की रवैया तो इसी का परिणाम था। वासमती के भरोसे के बावजूद मैंने उस हद को भी तोड़ दिया था, मगर मैं उस घटना को लेकर भीतर-भीतर बहुत आहत रह रहा था। पिछले तीन दिनों से मैं काफी कुछ इस बात विश्वासघात करना और पीड़ा देना एक ही हो सकता। मेरी आँखों में फिर वह स्वप्न नाचने लगा। उस स्वप्न का निहितार्थ क्या था, वासमती ने उस मनोवृत्ति को कुछ में वह महत्त्वपूर्ण मेरा ध्यान कराया। मेरे मन के कदम फिर भी नहीं उठे। गीता का श्लोक याद करके मैंने कहा, कृष्ण शरण गच्छामि। मन फिर भी शांत नहीं हुआ। नहीं अपराध को यह घुन तब तक मेरा पीछा नहीं छोड़ेगा जब तक मैं वासमती से क्षमा न माँग लूँ। उसे बतलाना तो होगा, लेकिन इतनी बड़ी बात उसे कैसे बतलाऊँ। मन किसी गहरे में वासमती मेरे चेहरे की हलचल को पढ़ लेती थी। उसने मेरा हाथ पकड़ लिया और पूछा, आप बहुत देर से सोच रहे हैं क्या सोचने लगे जो परेशान हुए जा रहे हैं?

मैं वास्तव में परेशान था। मैंने कहा, मुझे ठीक समझ में नहीं आ रहा है, मैं बहुत परेशान हूँ। बात ही कुछ ऐसी है कि कहते नहीं बन पड़ा है ....

उसने कहा, घबराइए नहीं। मेरी आपकी दोस्ती से बड़ी कोई बात नहीं हो सकती।

वासमती अनोखी थी। मैंने कहा, आप सही हैं कि आपका मन साफ हुआ है। मैं भी यही सोचकर लौटने के लिए छटपटा रहा हूँ, मगर मेरा पाप ही मुझे पुराने जीवन से बाहर नहीं आने दे रहा है।

उसने गैरबराबरी जैसी बूढ़ी बिल्ली की तरह कहा। मानो एक ही झपट्टा पहली में, पैंतरे से मुझे लौटने पीछे धकेल दिया। फिर कहने लगी ... आदमी खुद अपनी सजा के लिए रास्ते में कांटा बोता है। सही सोचना नहीं चाहता है और कहता है कि पाप मुझे छोड़ नहीं रहा है। जो बात आपको पसंद नहीं है उसे छिपाने क्यों हैं। छोड़ क्यों नहीं देते? धोखा और अपराध की से निकालकर बाहर फेंकिए।

वासमती की बात से मैंने एक झटका जैसा महसूस किया और उसे उस रात की बात बतला दी। घटना को ब्यौरा सुनाकर मुझे लगा कि मन हल्का हो गया। मैंने कहा, इस बात से आपको बहुत दुखी होने की जरूरत नहीं है। एक साथ रहने, बैठने से ऐसा कुछ हो जाता है। आपने

देखा मगर कुछ किया नहीं बल्कि मुझे आँख दिखा आपने कोई अपराध नहीं किया तो मेरे ऊपर उपकार किया इस बात के लिए दुखी नहीं होइए, भूल जाइए मैं उसकी सदाशयता के आगे नत था।

मैंने उसे स्वप्न की बात भी बतलायी और गीता के श्लोक से अपनी अनजानी समझदारी की बात भी बतलायी उसने मेरी ओर ताका और कहा, आपका भी नया जनम हो गया है आप आग में नहाकर आए हैं अब आप में कोई गंदगी नहीं है आप मानिए कि यह सभी घटना हम दोनों के नए जनम के लिए ही हुई है नहीं से उठकर हम दोनों चौक की ओर बढ़े तो एक जगह खमेसा छन रहा था। खमीरे की गंध से भूख जग गयी उसने कहा कि सबके लिए समोसा खरीद लेते हैं घर पर सब कोई खाएगा आगे बढ़ने पर जब स्टेशन के नजदीक आए तो उसने एक जगह ठेलमठेल हुए कहा मेरी इच्छा पकौड़ी लेने की है लेकिन आज रात में आप अगर वहीं रह सकते हैं तो लीजिए नहीं तो छोड़ दीजिए ।

मैंने कहा 'मन' तो खाने का मन है तो ले लेते हैं मैं भी खा लूँगा इसके लिए वहाँ रहना तो जरूरी नहीं है? मैं खाकर अपनी जगह पर चला जाऊँगा...

मेरी बात से वह खीज गयी उसने नाराजगी के स्वर में कहा, 'खाने पीने के आसपास और कोई काम नहीं करना है? सारी भागना जा रहा है और खाली सोचते रहने से काम पूरा हो जाएगा क्या? काम नहीं करना है तो सबको बता काहे देते हैं?

वह दरअसल में नाराज हो गयी थी मुझे सात-विचार में फँसा देखकर बासमती जरूर मेरी दुविधा को भाँप गयी होगी उसने मुस्कियाते हुए कहा आपका गाँव कहते हैं कि बागमती नदी के किनारे पर बसा हुआ है तो इसी नदी में हेलकर कभी नहीं देखे हैं? आप अहर पेरकर ही इस आशंका का कैसे दूर करेंगे?'

मैं सही में एक बार तैरते हुए डूबने लगा था पूरा साल पानी में डूबकी लगाकर देखकर डर गया था और इसी कारण मैं तैराकी सीखने ही गया था मैं डूबने लगा तो एक बड़े भाई ने और पकड़कर बचाया था। अब मैं नहर देखकर डरता नहीं हूँ, मगर आशंका इतनी बड़ी थी कि

बासमती ने मेरी खामोश मन को अपनी चुटकी में पकड़ लिया था। मन मोती जैसा सुंदर और बोली बासमती को बड़ा-बड़ा देखने की आदत होती है बड़े लंबे लोग तो बहुत आदमी तो जिस मालदह की बात में हुआ। मुहावरा बनाने वाले ने कहा है कि पानी में रहकर मगर से बैर नहीं करना चाहिए। इसको भी छोटे-बड़े लोगों की कोई बात है हमारे मैरे मन पहाड़ के पेड़ की समस्या की ऐसी परिभाषा नहीं पढ़ाई है। पेड़ चुनकर खत्मी और पैर के बराबर पतली टेलनी दिखाती मेरी बात पोंछकर रख लिया और पैर से खोदा न कभी खाना बनाना है और न कोई समस्या फिर भीर तुम्हा तो बड़ी कमरदरोज खड़ी और दाल में दोनों पर घड़ी आप लोग ऐसे नहीं रख सकते हैं आप लोगों का संसार बहुत बड़ा है तो समस्या भी बहुत बड़ी है।'

मैं अखबारों के अत्यधिक और पीत हुए पन्नों के बारे हमेशा आपको सिक्कड़ पाता था वह मेरे चित्र हाल शुरू किया। पेशेवक्त और समस्या के दरवे को जिंदगी में रहती है और हमेशा चोरों के साथ ही लगे रहता है। लेकिन वरवरी अपने जिम्मेदारी से जिम्मेदार रहे हैं। लेकिन जरूरी पड़े जिम्मेदार लोग कोई समस्या को समझ समझे इतना ही कर देता है कि उसमें सिक्कड़ना करिब लगता रहता है। खेतरी इतने लोगों को भरी आदत होती है लाचार लोग किसी समस्या का पेशेवक हुए बैलगाड़ी की तरह से देखते हैं। भरे दूसरे की बेटी बैलून लेकर खेलता रहता है और उस खेल के पीछे स्वाद छोड़ा को देखने वाली है। तब बैलून को लगा सिक्कड़कर पेशेवक वाली है मां आकर रबड़ को झटका मारकर सड़क पर फेंक देती है उस बैलून के दूसरा समझदार बच्चा उठा लेता है और मुंह से पिचकार फुला लेता है फिर वही खेल तभी खेलने को बैलून फेंक से पर वह फूलकर बच्चे को उलझा लेता है.

अखबारों के समस्या सिक्कड़ना से पड़ा नहीं कोई अभिनव दृश्य ही था नहीं किंतु पेशेवक हुए बैलून जैसा वह तो मुझे एक समस्या की तरह दिखा और बाद में मैं अखबारवाले पाकड़ा पर कोई अच्छी बात लिखकर मुंह छिपा लेता हूँ उसकी तरह के अपने सपने गांव वाले थे पैसा वह कुछ काम नहीं लगता था। मैं कुछ अच्छा नहीं लगता था। मैं कुछ अच्छा नहीं लगता था। मैं कुछ अच्छा नहीं लगता था।

अखबारों के यहीं पहुँचने को अखबार में लिखा हो गया

देखा मगर कुछ किया नहीं बल्कि मुझे डाँट दिया आपने कोई आपत्ति नहीं की। मेरे ऊपर उपकार किया इस बात के लिए दुबारी नहीं सौ बार धन्यवाद दे सकती हूँ। मैं उसकी कृतज्ञता से अभिभूत थी।

मैंने उसे स्नान की बात भी बतलायी और गीता के श्लोक से अपनी समझदारी की बात भी बतलायी। उसने मेरी ओर ताका और कहा आपका भी नया जन्म हो गया है आप आग में नहाकर आए हैं अब आप में कोई गंदगी नहीं है आप मानिए कि यह सभी घटना हम दोनों के नए जन्म के लिए ही हुई है। नदी से उतरकर हम दोनों धीरे-धीरे आगे बढ़े तो एक जगह समोसा छन रहा था समोसे की गंध से भूख जग गयी। उसने कहा कि सबके लिए समोसा खरीद लेते हैं पर पर सब कोई खाएगे। आगे बढ़ने पर अब स्टेशन के नजदीक आए तो उसने एक जगह बिलमते हुए कहा, मेरी इच्छा मछली लेने की है लेकिन आज रात में आप अगर यहीं रह सकते हैं तो लीजिए नहीं तो छोड़ दीजिए।

मैंने कहा मछली खाने का मन है तो ले लेते हैं मैं भी खा लूँगा, इसके लिए यहाँ रहना तो जरूरी नहीं है? मैं खाकर अपनी जगह पर चला जाऊँगा...

मेरी बात से वह खीज उठी। रहने नाराजगी के स्वर में कहा, खाने पीने के अलावे और कोई काम नहीं फलता है? सामने भागलपुर जा रहा है और खाली सोचते रहने से काम हो जाएगा क्या? काम नहीं करना है तो सबको बता काहे देते हैं?

वह वास्तव में नाराज हो गयी थी। मुझे सोने लिहाज में फँसा देखकर वाराणसी जैसी दुविधा की भीड़ नहीं होगी। उसने मुस्कुराते हुए कहा आपका गाँव कहते हैं कि बागमती नदी के किनारे पर बसा है्ग है तो उसकी नदी में नहाकर कभी नहीं देखे हैं? आप लहर देखकर ही डर जाइएगा तो कैसे काम चलेगा?

मैं सही में एक बार तैरते हुए डूबने लगा था। दूर तक फैली नदी में उठती लहर देखकर डर गया था और इसी कारण तैरना सीखने का सपना मैं बुनने लगा था। [illegible] मैंने कहा [illegible] लहर देखकर डरता नहीं हूँ, बल्कि बागमती कुछ बड़ी नदी है।

बागमती जैसे मेरी कमजोर नस को अपनी मुट्ठी में पकड़ लिया था। वह किसी विषय पर कभी भी लम्बी समस्या को बढ़ा-चढ़ाकर देखने की आदत होती है पढ़े-लिखे लोगों की बहुत आबादी तो विशेष मौसम में गंगा में डुबकी लगाने के लिए ही जीती है कि साल में स्नानयात्रा रहती ही आती है। इसमें भी ऐसे बड़े लोगों की कोई बात है इसारे जैसे तो मजदूर के पेट में समस्या की ऐसी औकात नहीं रहती है कि वह खुलकर रोने और चैन से खाने पड़ती। चिलमनी दिहाड़ी मिली, खाए-पीकर खा लिया और चैन से सोया न काली खाना बचता है और न कोई समस्या... किन्तु और हुआ तो नहीं कमबख्त खटमल और रात में होती है चहल-पहल। आप लोग ऐसे नहीं रह सकते हैं। आप लोगों की संख्या बहुत बड़ी है तो समस्या भी बहुत रहती है।

[illegible] के बाद कांता एक बार सबको साथ लेकर [illegible] रामलली की चूल्हे की पारी आ गई थी

कांता घबराहट [illegible] रामलली बहन का हाथ पकड़कर अपनी कोठरी में बिछावन पर ले गई। रामी वह बहुत अशक्त थी आधे मेरे और उसका [illegible] था वे सब [illegible] उसके पीछे पीछे आया था और सब कुछ देख रहा था पहले उसने पत्ते [illegible] रामलली की जगह में रख दिया रामलली उलट पलटकर पत्तों को बारीकी से निहार रही थी अपने देश में ऐसा क्यों नहीं मिल सकता है वह बेहद से बना है बाद खाने वाले [illegible] बहुत कोमे थे [illegible] रहीम ने [illegible] रामली और [illegible] एक [illegible] में [illegible] और अखरोट [illegible] के साथ [illegible] [illegible] रामलली [illegible] से [illegible] [illegible] दिखलाने थी और फिर उसी [illegible] रख देती थी [illegible] [illegible] परखकर रामलली [illegible] रही थी [illegible] [illegible] रामली ने [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] रामली ने [illegible] [illegible] [illegible]

काछा उस समय तक झिंगा तल चुका था उसमें लाहिड़ी से एक थाली में निकाला थाली में थोड़ा नमक रखा और कूदकर आँगन में जाकर पौधे से लाकर हरा मिरचा ले आया जब हम दोनों कोठरी में प्रवेश कर रहे थे उस समय वासमती शायद मेरे बारे में ही कुछ बतला रही थी मुझे लगता है कि वासमती ने अपनी बहन को बतलाया होगा कि उसके हस्ताक्षर से गोदना उतारकर पुस्तक बनाने की योजना से मैं भी सहमत हो गया था और विदेशी महिलाओं ने भी लक्ष्य योजना की प्रशंसा की थी. मगर मैं कुछ गलत हो जाने की आशंका से झिझक रहा था इस प्रसंग को मैं ठीक से सुन नहीं पाया था. किंतु रासमती आपनी बहन को जो जवाब दे रही थी और वासमती की खिलखिलाहट उस समय जैसी थी उस आधार पर मैंने अनुमान लगाया।

समोसे के साथ तली हुई झिंगा नमक मिले के साथ दोनों तले कुरे कुरे कर रही थी सभी लोग एक ही थाली से ले लेकर खा रहे थे रासमती ने हँसते हुए कहा ऐसा चिखना अगर रक्सी पीने वालों को मिल जाए तो कु पीते पीते बीत जाएगा इस बात पर सबसे ज्यादा हँसी काछा को आयी नेपाली भाषा में रक्सी कहते हैं दारू या शराब को और चिखना कहते हैं चखने के नमकीन भुजिया को जो दारू के स्वाद बढ़ाने के लिए लिया जाता है नेपाल में दारू का बेशुमार चलन था। रासमती भी कभी-कभी अपने पति के साथ पीती थी मैंने रासमती को जवाब देते हुए कहा मैं चाहता हूँ कि नेपाल में बेतहाशा बह रहे दारू पर लगाम लगे लेकिन आप चाहें तो किसी दिन ऐसा चिखना बनाकर दी सकती है !" बात आयी—गयी हो गयी

नाश्ता खत्म होने से पहले काछा चाय बनाकर ले आया चाय पीते हुए मैंने रासमती से पूछा वासमती ने आपको विदेशी औरतों के बारे में बताया होगा कैसा लगा

सहसाएव सभी की जोहिन को कहना है कि उनका जोहिन तो भाग से बहुत लम्बा-चौड़ा लिखा है आप पत्र लिखें तो हमारी देहात में कुछ लड़के हैं उन्हें अब बिलकुल औरतें रखने के ... बात खत्म करने का प्रयास मगर हर बार कोई-न-कोई कहने में आपको लगता है कि कहीं उनके लिए शिक्षा की व्यवस्था आप भारत लिख दें इसका ध्यान रखिएगा हमारा जोहिन तो बहुत बड़ा होना चाहिए कहते-कहते हँसी उनकी चेहरा लिख दो आप चाय पीजिए ठंडी हो रही है वे कुछ सुनकर सकते हैं सब से सभी पूछा करते हैं कि आप लोग आ रहे हैं वे कब पूरा हो जाए अगर हम लोग नहीं लगता कहीं ... बताकर चले गए

मैं चूल्हे के पास रखी हुई खाली बोरी पर बैठकर चाय पीने लगा था। रासमती चाय पीकर बर्तन धोने लगी थी। काछा बाहर गया था। मैं सोच रहा था कि रासमती को क्या कहकर धन्यवाद दूँ। मैं कुछ कहूँ इसके पहले ही रासमती ने मेरी ओर देखकर कहा आपने हमारे लिए बहुत कुछ किया है। मैं आपका धन्यवाद कैसे करूँ। मैं कुछ कहूँ इसके पहले ही रासमती ने मेरी ओर देखकर कहा आपने हमारे लिए बहुत कुछ किया है। मैं आपका धन्यवाद कैसे करूँ। मैंने कहा आप ऐसा सोचिए कि हम दो बहनों के हाथ पीले हो गए। मेरी बात सुनकर काछा खाली बोरी लाने लगा रासमती ने भी अपनी बात दोहरा दी वासमती मुस्कुरा रही थी

गोदना उतारने का काम कल रात से ही शुरू हो गया था. नाश्ता चाय के बाद बासबती मेरे साथ ही कोठरी से निकली। मैं पेशाब करने बाहर चला गया. बाहर से लौटा तो बासमती कपड़े बदलकर साड़ी पहन चुकी थी. कोठरी में प्रवेश करने के बाद उसने स्वयं दरवाजा बंद कर लिया. मैं बिछावन पर बैठ अपने मन को संयत कर रहा था. बाहर के एक कोने में लालटेन जल रहा था लेकिन इसके मद्धिम प्रकाश में गोदना के चित्र उतारना संभव नहीं था. बासमती ने काम की भूमिका बाँधते हुए कहा. एक डाक्टर को भी लोग भगवान ही कहते हैं क्योंकि वह दुख से छुटकारा दिलाता है. इसलिए आप अपना शरीर मेरे हाथ में सौंप दीजिए. अब वह देह को नहीं मन को छुएगी. कि इसमें कोई खास बात नहीं आती है. हम लोग जो काम करने जा रहे हैं उससे गरीब औरतों का काम मिलेगा. उनका दुख दूर होगा. इसलिए आप मान लीजिए कि आप भगवान का ही काम करने जा रहे हैं.

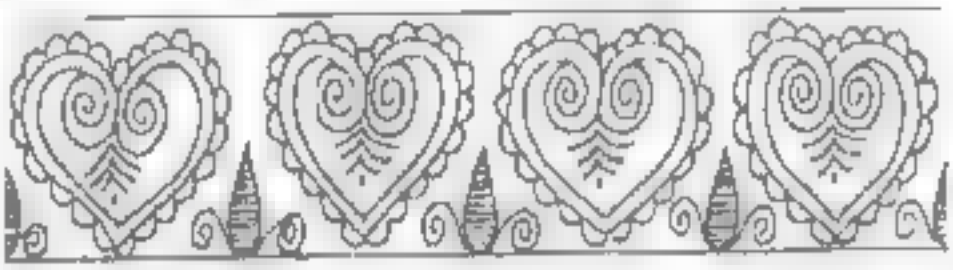

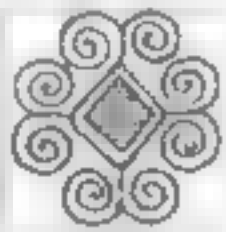

उसने अंगीठी पर को लोहा छड़ियों को गरम करने के लिए रख दिया. मैं उसके आदेश पर बैठकर उसका चेहरा अपनी ओर कर लिया. उसने अपने अंगरखा को उतारकर एक ओर रख दिया. तब उसने मेरे हाथ को उठाकर अपने दाहिने वक्ष पर रख लिया. मैं उसके वक्ष को देखने लगा. उसके वक्ष के ठीक ऊपर कंधे से कुछ नीचे हृदय के पास जैसे किसी ने कुछ बनी हुई थी. बासमती ने बताया कि इसे धनकोरिया कहते हैं. धनकोरिया प्रकार से हृदय रोगों के लिए रक्षा कवच है. मुझे लगा था. रेखाओं से घिरा हुआ आकार और कुछ की आकृतियों के रूप में मानो तलवार से बहुत आसानी से जैसे 'धनकोरिया' का आकार कागज पर उतार लिया। एक ओर से चित्र उतारने के बाद दूसरे ओर को ठीक उसी प्रकार चित्र उतार लिया गया। इस ओर का यह पहला काम था। चित्र की अनुकृति देखकर हम बहुत प्रसन्न थे.

धनकोरिया से ऊपर ठीक उसी भाग में अत्यंत चिकाल से बनी हुई बूटी की तरह सजी हुई थी. इस रेखांकन के आधार पर हाथ रख लिया था. उसके [illegible] दूसरी ओर से

नाबीज जैसी रचना के ऊपर जांघ के नीली आग में एक हो रहस्यमय चाक बना था जिसको बांधे पर दोनों तरफ से घुंघुट पहने दो अस्कृत सुग्गा (सूआ) बने थे। उसने बताया कि यह गोदना दो तरह बनाया जाता है, बांयी जांघ पर और नाभि के नीचे पेट में कुछ गोदने वाले [illegible] पति फिर से उसे प्यार करने लगता है

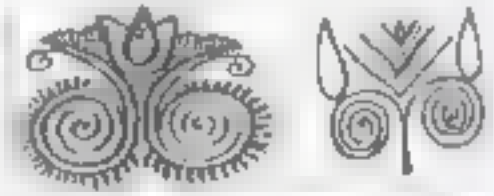

शुकसप्तती किस्सों में कभी सरस्वती ने बताया था कि 'मानवी हाथी' के प्रभाव से स्त्री या पुरुष प्रेम में मत्त हो जाते हैं। विद्यापति के गीतों में कृष्ण को मत्त-भाग हाथी कहा [illegible]

प्रजाकामः दक्षिणेन पाणिना ऊरू प्रसार्य प्रजास्थानमिमृशति पूषा भगसविता मे ददातु।' इसका अर्थ यह हुआ कि पुत्र की कामना करने वाले पुरुष अपने दाहिने हाथ से स्त्री की जंघा को पसारकर उसकी योनि को 'पूषा भग सविता' आदि मंत्र पढ़कर स्पर्श करे। आगे उल्लेख है कि 'प्राङमुख उदङमुखी वाग्यविष्टो मन्थं दत्वा भूयांसमिते नैके ज्ञानमं कुर्यात्।' अर्थात पुरुष पूर्व या उत्तर मुँह बैठकर रेतां पुत्रम आदि मंत्र का जप करते हुए वीर्य का क्षरण करे अकेले अपनी विधि कोई मैथुन करेगा कि मंत्र पर ध्यान लगाए रहेगा। सो तो वही जाने लेकिन मुझे इस प्रसंग के स्मरण से हँसी आ गयी। बासमती ने पूछा तो बताना पड़ा। वह भी खूब हँसी। इस हँसी के साथ हम लोगों ने एक विराम लिया और प्रसाद करने बाहर निकल गए।

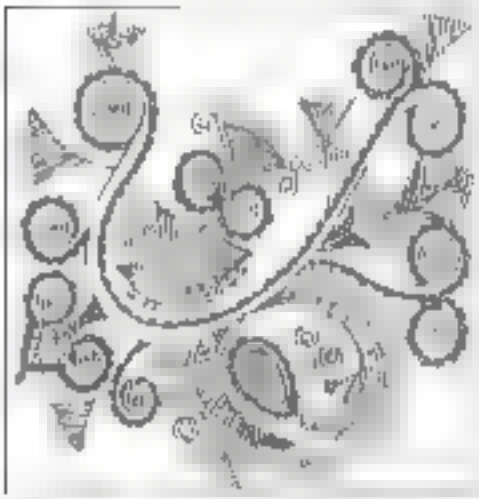

बाहर से लौटकर आए तो रात के एक से अधिक का समय हो चुका था। हम दोनों देह-मंथन से रत्न की खोज में लगे हुए थे अभी तक जो कुछ मिला था वह अनमोल था। बाहर से लौटकर आने के बाद बासमती ने फिर पुरुत काम चालू करने की गरज से बाँयी जांघ पसार दिया। मैं उसकी दोनों जांघ पर नोटबुक रखकर पेंसिल की आकृतियां बना रहा था मेरे द्वारा की गयी अनुकृति बहुत सटीक या सुंदर नहीं होती थी लेकिन ऐसी तो बहुतों की थी कि बासमती फिर से उसे पुकारकर बता दे अभी बाँयी जांघ पर काम चल रहा था अब मेरे सामने एक खूब भड़कीला, विशेष अलंकृत मयूर था। बासमती ने बताया कि उसे सुरमा मोर कहा जाता है मैंने अनुमान लगाया कि मयूर की उस प्रजाति के शरीर पर विभिन्न रंगों के संयोजन और सज्जा से मुख्य रूप से प्रजनन के लिए मादा को आकर्षित करने का भाव था जिसमें पैर का आकार भी शरीर के अनुपात में बड़ा था और दीर्घकाय मयूर पंखों के आकर्षक जाल का शेष भाग तीन तरह की बुंदिकियों से भरा था।

इस दरमियान कमरे में कुछ और लोग आ गए थे। तय किया गया कि अगला काम कल से किया जाए। हम दोनों आज की उपलब्धि से संतुष्ट थे

अगले दिन बासमती सुबह से ही काम पर लग गयी। पिछली रात मैंने जिन-जिन जगहों पर आकृतियां की थीं, उनको फिर से नोटबुक पर नोट कर लिया था। मैं नए काम में लगा तो उसने पहले की बनायी हुई आकृतियां देखीं। वे बहुत सुंदर थे। फिर सिलसिला शुरू होने के बाद वह पीछे मुड़कर नहीं देखती थी। उसे इतना तो मालूम ही था कि अलग-अलग अवसरों पर किन्हें गोदना है उसके पास न कुछ खोने को था न कुछ पाने की। अब वह अफ्रीकी गोदना में प्रयुक्त चिन्हों या प्रतीकों के अर्थ बताने लगी थी

अफ्रीकी गोदना के प्रतीकों के संबंध में मैं इतना कुछ ही जान पाया था जितना अलीशबा और औरतों से जान पाया था। अफ्रीकाद्वीप को नोट करते-करते भी मैं कुछ बात समझने लगा था बासमती ने मेरे समझने में अफ्रीकाद्वीप के देश-काल-परिवेश फैला दिया था ताकि प्रतीकों अथवा चिन्हों में

अलग किया जा सके। एक फोटो में बच्ची के पैर पर ढेर सारे ज्यामितिक चिन्ह उकेरे थे। मेरे लिए ये चिन्ह अजूबा थे। इस तरह के कुछ चिन्ह मैंने सिंधु घाटी सभ्यता की मुद्राओं पर देखा था इसलिए इतना तो मैं समझ रहा था कि संभवतः यह प्रचीन आदिवासी चित्रलिपि हो किंतु मैं उनके अर्थ नहीं समझ सकता था। मैंने बासमती को बतलाया कि मनुष्य अपनी अभिव्यक्ति के लिए तरह तरह के चिन्हों का उपयोग सभ्यता के आदि काल से करता रहा है धीरे–धीरे ये चिन्ह आपस में जुड़कर और आंशिक अभिप्रायों के साधन बने फिर चिन्ह आकार का रूप लेने लगे चिन्हों को जोड़कर चित्र बनने लगे किन्हीं से बने आकार को आज हम प्रतीक कहते हैं जिस प्रकार सिंधिल पेंटिंग में हाथी मात्र रूप कहुआ भाव स्वातंत्र्य कमल आदि अनेक प्रतीक हैं उसी प्रकार गोदना चित्रकला में भी हाथी सूपा मयूरपंख जैसे अनेक प्रतीक हैं जिनके अपने अपने अर्थ हैं यह जरूरी नहीं है कि किसी चिन्ह या प्रतीक का जो अर्थ भारतीय कला में लिया जाता है वही अर्थ आदिवासी कला में भी लिया जाए अपनी सभ्यता के मूलभावों प्रतीकों या चिन्हों के अर्थ बंधते आते हैं सिंधिला कला और गोदना कला में एक प्रतीक है चक्की जिसका प्रयोग लेखन की अनेक कला परंपराओं में हुआ है लेकिन इसी जगह उनके अर्थ में अन्तर पाया जाता है भारतीय कला में चक्की का अर्थ कभी सूर्य और कभी सृष्टिचक्र तो कभी स्त्री या प्रकृति के रूप में लिया जाता है जबकि आदिवासी कला में चक्की को गहरा घनत्व और शक्ति का प्रतीक माना गया है सिंधिला लोककला और गोदना चित्रकला में एक और समान प्रतीक है नागा जो प्रेमभाव सख्य का प्रतीक माना गया है आदिवासी कला में भी एक सर्पाकार लंबी नागा सी बनी चित्र को घेरकर हुए है जिसका अर्थ सर्वत्र व्याप्ति लिया गया है।

एक फोटो में हल्के गेरू रंग की चौकोनी छवि अंकित एक स्त्री की छाती से नीचे, पेट पर किया गया था रचना की दृष्टि से यह चौकोनी सिंधिला चित्रकला के जलमंगुआ और अवाकमुख त्रिभुजों का योग लगती थी भारतीय लोक संस्कृति में जलमंगुआ त्रिभुज को शांति का प्रतीक माना गया है जबकि अवाकमुख त्रिभुज को हिंसा [illegible] त्रिभुजों के योग से बनने वाली आकृति को बीच की विभेदक रेखा को लंबा खींच दिया गया था। इन दोनों को मोड़कर आमने सामने रखने से बनी चौकोनी आकृति के भीतर दो त्रिभुज एक दूसरे को काटते हुए दिखाई देते हैं। आदिवासी कला में इसे स्त्री–पुरुष संयोग ही है आदिवासी कला में इस प्रतीक को अक्सर लहू लोहान और इसका प्रयोग प्रेम के संदर्भ में सुरक्षित है

मैंने बासमती को बताया था कि अपने मानवीय कार्य का प्रारंभ मैंने 1968 में किया था (सोलह वर्ष की आयु में) जब विदेशी सभ्यताओं के लिए आकर्षण के कुछ चिन्हों से भारत बनाने की विधि विकसित की थी साधारण चित्रों के टुकड़े लेकर मैं लोगों आकारों का सरल रेखा और त्रिभुजों में विश्लेषण करता था। बासमती के आग्रह पर मैंने अपनी पोटली और आदिवासी लोगों के चित्रों से लेकर अनेकों चौकोनाकार और आयतों के कुछ भिन्न भिन्न आकार बनाकर [illegible] उन्हें अलग अलग आकारों में फोटो स्टेट चित्र तैयार करने के बाद मैं अपना पोटला खोले [illegible] और आदिवासियों [illegible] उन्हें कुछ [illegible] दिखाने लगी।

लोग इसी चक्कर में थे कि रासमती चाय के लिए पूछने आयी, रासमती ने उसी बैठा लिया और सोदना के चिन्हों से अक्षर बनाने की बात बतलायी. रासमती यह खेल करके देखना चाहती थी. रासमती ने तरह अंग्रेजी फोटो दिखलाकर पेट पर बने चिन्ह पहचानने को कहा. उस फोटो में सबसे ऊपर एक खड़ी रेखा और अर्धवृत्त का है बना था. फोटो में दाहिनी ओर एक गोले में चौड़ा या कांटेदार बना था और नाभि के आसपास दायें-बाँए खुलने वाले दो अर्धगोले बने थे. अब रासमती ने उस फोटो से मिलते बाँयी ओर खुलने वाला एक अर्धगोला एक सरल रेखा और एक अर्द्ध या खड़ी रेखा अंकित करने को कहा. रासमती ने बहन के कहने पर अर्धगोला के नीचे में एक और अर्धगोला जोड़कर ब बनाया. फिर ब में बीच से के आसपास अंडाकार छ बनाया. छ में बीच से एक रेखा लगाकर उसमें एक खड़ी रेखा लगाय और अ बनाया. म में एक और खड़ी रेखा लगाकर आ बनाया. अब बारी-बारी से सोदना के चिन्हों से हो रासमती ने छ क अ और आ बना लिया. सोदना से अक्षर बनाकर वह अत्यधिक खुश थी. वह कभी सोदना को देखती थी कभी अपनी बहन को. अब तक बिल्कुल चुप उस दलित स्त्री के पास शब्द नहीं थे. वह बोल पड़ी. भावुकता से उसकी आवाज भारी हो गयी. गला रुंध गया. उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे. रासमती ने उसे कागज पर बने अक्षरों पर लिटाकर उसे फैला दिये. रासमती ने अपने आँचल से एक-एक घुले हुए अक्षरों को समेटकर कागज से अलग किया और उसकी गोलियाँ बनाने लगी.

चाय पीने के बाद सब लोग फिर काम में जुट गए. रासमती ने दाहिनी हाथ में लोहे का कील पकड़कर आँगन में उसकी बाँयी ओर पर गोलाकार घसीटकर घेरा बनाने लगी. घेरा के ऊपर एक कोर (बॉर्डर) बना था. घेरा के बाहर कुछ विशेष प्रकार की चित्रकारी की जा रही थी. उसने बताया कि सोदना की कला को चित्रलेखा कहते हैं. चित्रों के पीछे से कहानी बनाने की परम्परा है. रासमती ने यह भी बताया कि घर के पीछे पेंट के चित्र मनुष्य पेशेवरों को समर्पित होते हैं.

इन चित्रों के ऊपर दो तरह के हाथी दो तरह के मनुष्य कछुआ और एक खास चित्र बना था. **रतनपीती** रतनपीती का अर्थ होता है 'हल्दी से भरी पिटारी'। इसकी रचना दो सुआ की उदय आने से हुई थी जिसका आधार किसी पीली (फूस और सींकों घास से बनी ढक्कनदार पिटारी या मंजूषा) जैसा था. रासमती ने बताया कि दूसरा तरह का सोदना उसकी

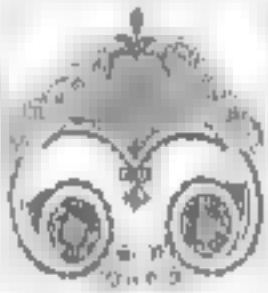

नदी की छाती पर बना हुआ था नदी ने उसे बताया कि यह चित्र असल में स्त्री की हजामत और सुहाग की पिटारी है, खोजकारों ने इस चित्र को सहज मानकर कहा था खोजकारों ने बाकायदा को इस चित्र में छुपी एक रोचक कहानी भी सुनायी उसने बताया कि शुरू-शुरू में यह घरती रहस्य नायक नहीं थी घरती पर पुरुष अकेले रहता था और उसे घर बसाने का हुनर नहीं आता था इसकी चिंता भी नहीं थी दिन भर यह इधर से उधर टहलता रहता था और बेमतलब सोकर रोटी पका रहता था, उसे खाना बनाने का हुनर भी नहीं आता था धरती पर हर तरफ पानी और कीचड़ फैला हुआ था जहाँ तहाँ बड़े पहाड़ कीचड़ और कचरा लगातार की तरह फैले हुए थे, एक दिन पता नहीं कैसे पानी और कचरा को सौंप को स्त्री से अलगकर बनाया बड़ा पर बैठकर वह स्त्री नदी से निकलकर धरती पर टहलने लगी उस समय उसकी देह में धागे नहीं थे और न उसके पंख थे लेकिन उसका शरीर उस समय भी सहना से लद था उसने वहीं नदी फैले कचरे का ढेर देखा कीचड़ कुछ का ढेर लगा और बीज बादल जमा देखे एक घर बनाया उसी समय नदी से तूफान की तरह पुरुष आया और सब कुछ तबाह किया, उसने स्त्री के सभी गहना छीनकर उसे पानी में तैरा दिया पैर बार बार हाथ उसे पानी ही अचानक सड़क कर घर बनाती थी पुरुष सब कुछ छीनकर उसे गहरे तैरा था और घर पोंछकर उसे पानी में तैरा देता था आश्चर्य एक बार फिर वह स्त्री बदला रूप में आयी इस बार उसने स्त्री की छाती में सूरज जैसा गोल था दोनों भाग के बीच आगे से पीछे तक एक रेखा थी और नाभि से रक्तधारा बहती थी उसने नदी के पानी को कचरे को मिट्टी को कीचड़ को बीज को बादल को मिलाकर उसे गूँथा और उसे पुरुष का रूप दिया उसने उसे अपने पास बैठाया और उसे अपने पास रहने को कहा पुरुष ने उसे बताया कि वह उसे छोड़कर नहीं जाएगा उसने

है स्त्री और पुरुष के मूल स्वभाव का भी इस कथा में दर्शन होता है बुद्धू बक्सवाली की ज्ञान सम्पदा से ईर्ष्या होने लगी

अब तक दोनों जगह के सामने की चट्टान से चित्र उतारने का काम पूरा हो चुका था। बाबासाहेब चाहते थे कि चित्रण अधिक काम हो जाए अच्छा है अब नाम से नीचे के हिस्सों पर काम करना था नीचे से ठीक पीछे महान काम की एक रचना बहुत सुंदर थी। बाबासाहेब ने बताया कि इस पेंटिंग को गहबर कहते हैं गहबर से चित्रकार का वास होता है जो असल में हरियालियों के देवता होते हैं यानी चित्रित वृक्षों के गुण अगर की रक्षा करते हैं और कल्याण प्रदान करते हैं। मैंने शिलाश्रयों पर कि फोटो में छतरीनुमा अफ्रीकी शिल्पों की देह पर मूर्तियों में भी गहबर बना हुआ है ऐसा उसकी देह में भी है क्या उसने बताया कि इसके शरीर में भी एक स्थान पर कूबड़ है किंतु वे कलात्मक वृद्धि की तरह है मैं उस भाग को अनावृत नहीं करना चाहता था मेरा मन भर गया था इतने सारा कि आज के लिए इतना काम पर्याप्त था बाबासाहेब चाहते थे कि मैं भोजन करने के बाद वहीं से चलूँ लेकिन मैं इतना थक गया था कि अब रुकना पैर घिसने था

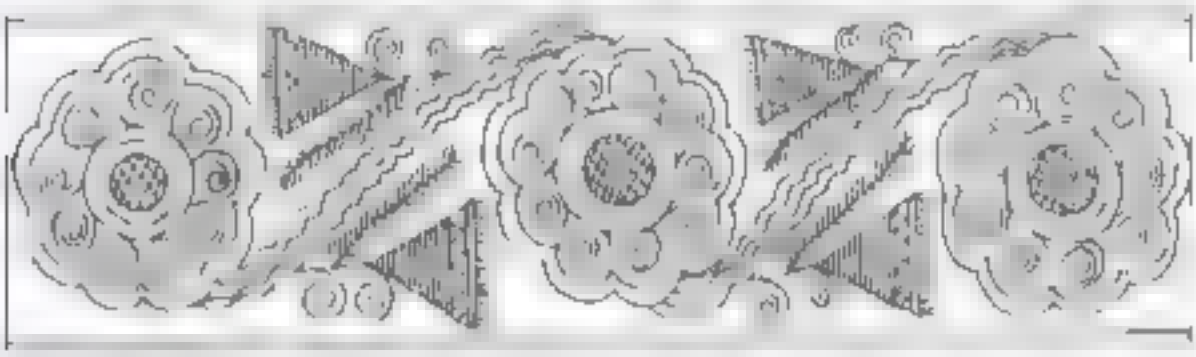

अगले सेशन में रवानगी होने से पहले ही एक अनहोनी घटना घटी मैं वहाँ सैलाब की बाबासाहेब भोपालवाला से बैठकर दाल भी खा रहा था तभी मुझे देखकर आसपास मुफ्त के नाम पर पैसा लेने वाले कुछ बच्चे भ

करण धरती पर भटक आती है ना पितरलोक में भी उस आत्मा को अपने पितर से भेंट होने में कठिनाई होती है ऐसी हालत में बासमती मदद करती है और उसे पितर से भेंट कराती है ऐसी ही कुछ बात मोरीकाड़ बताती थी उसके कहने के मुताबिक दक्षिण पूर्व नाइजीरिया के लोगों का विश्वास है कि मृत्यु के बाद आत्मलोक 'पितरलोक' तक जाने के मार्ग में बहुत कुछ और है उनकी कहने से ऊपर 'अदृश्य' भाग से दोनों भाग में बंधने हुए सांपों की एक पंक्ति है बासमती ने बताया कि हाथी की रस पंक्ति को 'नतना' कहते हैं समय समय पर इन हाथियों पर सवार होकर पितर लोग आत्मलोक से धरती तक की यात्रा करते हैं और अपने परिजनों का कुशल क्षेम जानते हैं पितर 'ओलोक' के दानवेन्द्र बड़ि वर्ष में एक बार अपनी प्रजा का हाल जानने पृथ्वीलोक पधारते हैं यही कारण है कि नाइजीरिया में वर्षा ऋतु के दिन आते ही सब लोगों की प्रजा 'हाथीबद्ध' बली मंत्र के 'मन्दो महाराज' तंत्र का 'ओकुकाम' यज्ञ, मांत्रिक साधना मंत्र के साथ अपनी कलाई पर पुरोहित द्वारा रक्षी बंधवाते हैं हाथियों की सही संख्या से कम हाथियों की एक ओर पंक्ति होती है पितर पर वापसी और चौथाई होती रहती है बासमती ने बताया कि इस रचना को पितर पंक्ति कहते हैं पितरलोक से आत्माएं जब पितर के पास वापस हो जाती हैं तब पितर की अनुपस्थिति में उनके परिवार की रक्षा करते हैं हाथियों के झुण्ड का मुखिया मरने के बाद भी सही सलामत पितर पंक्ति में इकट्ठा मिल जाता है मुझे बताया गया कि मनुष्यलोक में शुद्ध है कि इस प्रकार के दिव्य पितरलोक का खौफ कम हो गया है

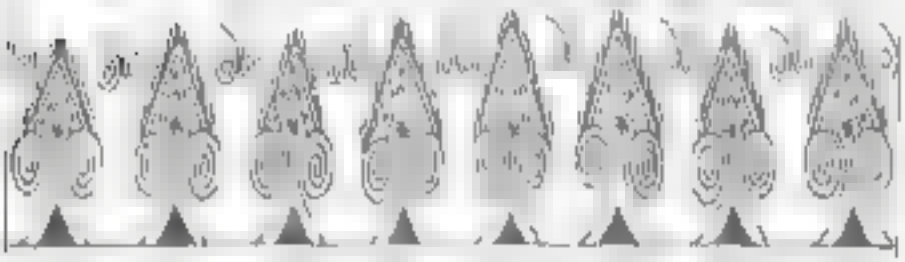

बासमती अपना काम करने में कभी देर नहीं लगाती थी रात में मैं जितने चित्रों का स्केच बनाता था, अगले दिन वह उतने चित्र तैयार कर लेती थी। अब तक तीन सौ चित्र बनकर तैयार थे। पिछले छह दिनों से हम लोग लगातार काम में [illegible] काम का फिनिश टच पूरा हो चुका था। बासमती चाहती थी कि काम पूरा होने के अवसर पर हाल में [illegible]

[illegible] 'मोदना चित्रकला' [illegible] हाथ में [illegible] एक [illegible] बासमती [illegible] एक [illegible] एक [illegible] [illegible] [illegible]

मैं जब ऑफिस पहुँचा तो वहाँ अधिकारियों की बैठक चल रही थी। मुझे भी बुलाया गया। मुझे बताया गया कि जलेश्वर मंडी का प्रबंधक बीमार हो गया था, इसलिए सुबह की पहली बस से मुझे वहाँ जाकर चार्ज का प्रभार लेना है। मुझे पहली बार अनुभव हुआ कि नौकरी में व्यक्ति की इच्छा का कोई महत्व नहीं होता है, अधिकारी का आदेश ही सर्वोपरि होता है। मैं इनकार नहीं कर सकता था। मुझे घर में ही अपना सामान पैक कर लेने को कहा गया

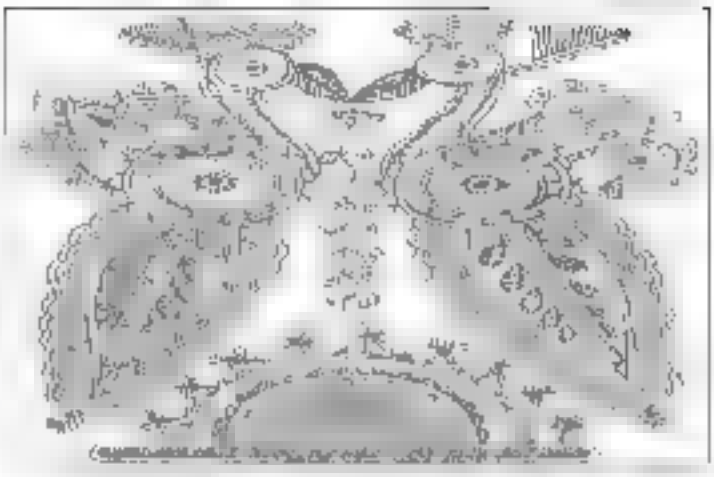

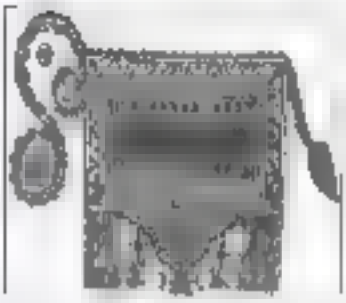

सुबह बहुत सवेरे मुझे उठा दिया गया। मैं सबसे तेज़ चलनेवाली भागा भागा बाइसगती के ऑफिस पहुँचा। वहाँ तक दौड़ते चलने से मेरा [illegible] रही थी। मैंने जल्दी से दुलाना ही बस पकड़ने के लिए दौड़ लगा दी। मुझे सिंहासन पहुँचना था। [illegible] मात्र दस्तों का रास्ता था। मैं सफर तय करने के दौरान भूख और प्यास के कारण मेरा [illegible] हुआ। कि मुझे भोजन करना चाहिए। मैं [illegible] बस में बैठ गया। [illegible] मुझे बताया गया कि जलेश्वर में [illegible] मुझे भोजन करना पड़ेगा।

[illegible] मैं [illegible] मैं [illegible] मैं [

भरोसे का आदमी नहीं मिल सकता था इरशाद अहमद के बोलने के बाद बात आधी भाषी हो गयी मैं अपने कमरे में लग गया फजर की बाद थोड़ा घूमने का बहाना करके मैं बाहर निकल गया और सीधा बासमती के आँगन आ गया

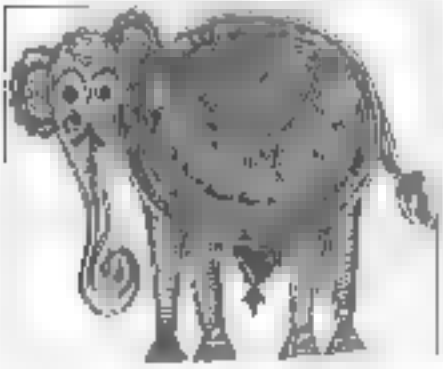

बासंती मेरा इंतजार कर रही थी। वह जानती थी कि मैं आज उससे जरूर मिलूंगा मैं जब पहुँचा तब समय दोनों बहन सब्जी छील-काट रही थी और किसी बात पर तेज हंस रही थी मुझे आता देखकर रामवती और जोर से हँसने लगी जब उसकी हँसी रुकी तो आने फिर हँसिनि अंदाज में बोलने एक फकरा सुनाया जिसका भाव कियत-कन्हैया, ओही चला आवे कि घुमका मार पड़ाय बासंती फकरा सुनकर हँसने लगी हँसने पर उसका मुँह एकदम लाल हो जाता था मैं उसे एकटक देखता रहा। उसने मेरी ओर ताका और लजा गयी

आ॰ मैं अधिक देर नहीं रुक सकता था बासंती हालात की नजाकत समझती थी वह उठकर हाथ धोकर आयी और कुछ बुदबुदाते घर में ही कहीं कुछ ढूंढने का उपक्रम करने लगी मैं उसे एकटक देख रहा था वह अपने बालों से निकालकर पुस्तक ले आयी और हमें थमाकर मेरी गोद में रखने हुए बोली अब आपको रात में पढ़ाकर सुनाना नहीं पड़ेगा मैंने दोनों हाथों में थामकर पुस्तक को चूम लिया पुस्तक के कवर पेज पर सुंदर लिखावट में लिखा था मोना चौधरी दो तीन क्षण मैं मौन में खोया रहा। इसके बाद मेरा ध्यान उसके पैर में लगे चोट से हटकर उसके चेहरे पर बासंती ने मेरा मौन तोड़ते हुए कहा, अब आप जाइए मैंने कहा बासंती तुम्हारे पैर में चोट है। मैं कल आऊंगा तुम्हारे लिए दवा लेकर। मैंने उसके सिर पर हाथ फेरा और उठकर पुस्तक को सीने से लगाए हुए बाहर निकल आया।

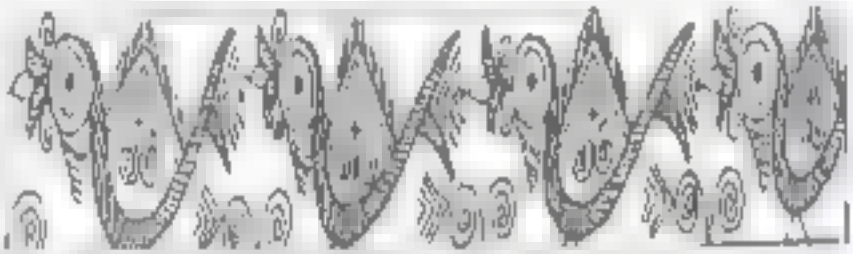

बासंती मेरी बात सुन रही थी। उसने कहा मैं पैर ठीक हो जाएगा। आप कल आइएगा। मैं चौधरी के घर से निकलकर सीधा बासंती के आँगन में आ गया। मालकाइन ने मुझे देखकर कहा, आइए मास्टर साहब। आपके बिना बासंती का मन नहीं लगता है। आप उसे पढ़ाते हैं तो वह बहुत खुश रहती है। वह बहुत होशियार है। उसकी पढ़ने की बहुत दिलचस्पी है। मैं कहता हूँ, मालकाइन, बासंती बहुत समझदार है। उसे पढ़ाने में मुझे भी आनंद आता है। मालकाइन ने मुझे चाय पीने को कहा। मैं चाय पीने लगा। बासंती मेरे पास आकर बैठ गयी। उसने मेरे पैर को छूकर कहा, मास्टर साहब, आपने मेरे पैर में दवा लगा दी है। अब मैं ठीक हो जाऊंगी। मैं उसके सिर पर हाथ फेरा और उठकर पुस्तक को सीने से लगाए हुए बाहर निकल आया।

आखिर भोला बाबा अपना भूत प्रदेश की बोले कि जो कोई बच्चा पहले मिल जाए उसका गरदन काट के ले आव फूल रेत को एक तो हाथी का बच्चा मिला। ऊ लोग उसीका गरदन काट के ले आया आ भोला बाबा को दे दिया भोला बाबा ऊ गरदन मुरती में जोड़ दिया ऊ त गणेशजी थे भोला से मुरती में परान दे दिए ऊ मुरती फुरफुरा के खड़ा हो गया आ भोला बाबा से पूछा कि ऊ कौन हैरे भोला बाबा ने कहा एकरा नाम गणेश है। तब तक पारबती जी हाँ आ गयी भोला बाबा गणेशजी को बोले हे तुम्हरो माइ है। पारबती ने कहा आ हे सुन्दर बाबू हैं, बच्चा दोनों के पैर छुआ पारबती बच्चा को गोद में उठाकर खुश हो गयी उस अवसर पर गणेशजी के जन्म की कथा सुनकर मैं बहुत खुश हुआ और मन ही मन उनको नमन करते हुए प्रार्थना की कि यह पुस्तक दुखी लोगों का कष्ट हरे

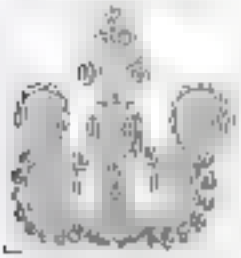

मुझे जल्दी निकलना था मैंने दोनों बहनों से जाने की अनुमति माँगी बासमती ने एक झोले में वह पुस्तक और लिफाफे में अर्थीराशि के दिए फोटोग्राफ्स डालकर मुझे सौंप दिया। जाते जाते मैंने कहा अब मैं आऊँ दिन लारी ओफिस में काम नहीं करूँगा अब हम अपना मन के काम शुरू करेंगे मुझे विदा करने दोनों बहन ओंग की मुँह तक आयी बासमती ने पहली बार मेरे पैर छुआ मैंने सर पे हाथ रखकर उसे आशीर्वाद दी। वह 25 दिसम्बर, 1978 की बात थी

आज लगभग चार दशकों के बाद आज मैं स्वयं को परिस्थितियों और परिवेशोंतरों का साक्षी भाव से देखकर रह हूँ एक भी बासमती की तुलना में मैं अपने आपको कहीं पा पाता हूँ पहली की लीला पुरुष की परछाई से दूर है मुझे लगता है कि मनुष्य के जीवन में कठिनाइयों आने पर ही बड़ी सम्भावनाएँ प्रकट होती हैं और उसके विकास में होती हैं बासमती का सेवा जीवन में आना एक आकस्मिक जैसी घटना है जहाँतक मेरे दूर भोजपुर के कुछ काम करवाना चाहती थी बासमती उस काम की कार्यकारी बनकर मेरे जीवन में आयी विकास का साक्षी बनी। अपने जीवन के दो अमूल्य वर्षों और आशाओं को दी।

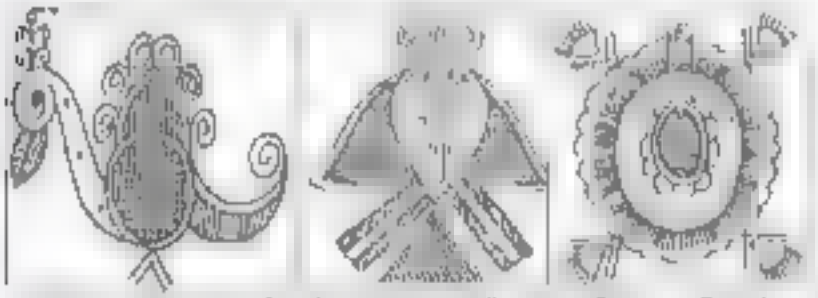

बासमती से "संवेदना-चित्रकला की लघुकथा पुस्तक प्राप्त कर अगली सुबह मैं जलेश्वर चला गया और तीन सप्ताह बाद, 18 जनवरी, 1977 को [illegible] वापस बस से [illegible] बासमती से विदा ले सके और मैं [illegible] बासमती अपने बच्चों को [illegible] करने गयी होगी और बासमती मेरी विदाई [illegible] के लिए गयी होगी। मैं [illegible] कभी नहीं थी मैं सोचता हूँ बासमती से विदाई विश्वासघात की दुर्घटना थी या एक सुखे सपने ही होते रहते और मेरे साथ ही घर के लिए विदा हो गयी अँधेरे में आगे ही एक धड़ाम से आवाज पर सिर और जोर जोर से रोने लगी मैं कुछ समझ नहीं पा रहा था आखिर उस सन्नाटे और पूरी बात बासमती बासमती के साथ बहुत बड़ा अन्याय हो गया था पर वह उसके पति से शुरू हुई [illegible] [illegible]

की आयु में जिस लड़की से हुई थी उसका नाम है नु पासवान था। बासमती ने बचपन में अपनी देह पर गोदना नहीं करवाया था, जिस कारण से उनका पैर या पेंडुलरी खाली हुई। आखिर जब घर आना ही नहीं तो नितम कुमार से शरीर में गोदना करवाना रहा। सरलतिया अब गौना कराने के लिए बैजू पासवान से कमाकर आया था। दोनों तरफ गौने की तैयारी होने लगी। बैजू कपड़ा सामान और खास कर बासमती के लिए पर्मिनेंटर की झुमकेवाली खरीदने लखनपुर गया था। वह सामान खरीदकर वापसी में मधुबनी जिला स्टेशन के प्लेटफार्म पर मधुबनी जाने वाली ट्रेन का इन्तजार कर रहा था। टिकट खिड़की खुली नहीं थी इसलिए उसके पास टिकट नहीं था।

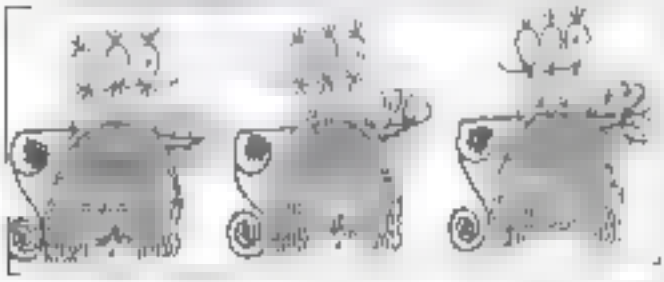

यह इमरजेंसी का शीर्ष समय था जब 'पुरुष नसबंदी' के नाम पर संजय गांधी का अत्याचार चरम पर पहुँच गया था। लोग कहते थे कि प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी को इतना अत्याचार अच्छा नहीं लगता था, लेकिन वह अपने बेटा को रोकने में असमर्थ थी। सरकारी नौकरी करने वालों को बेतरह डरा दिया था। सब कोई से कम दो लोगों को वे नसबंदी कराने के लिए अलग अलग सूत्रों से दबाव डालते थे। जो लोग नसबंदी कराने के लिए ले जाते थे उनको भी प्रोत्साहन राशि के रूप में कुछ रुपया मिलता था और करने वाले को भी कुछ कमीशन मिलता था। इससे गांव समाज में काफी बदनामी होती थी। वे लोग छोटी जाति वालों, गरीबों, भिखमंगों और बेरोजगार लोगों को पकड़कर नसबंदी कराया करते थे। बैजू सिंह खिड़की खुलने का इन्तजार कर रहा था, वह किसी से कुछ नहीं कह रहा था लेकिन पुलिस वालों ने उसे भी पकड़कर अपनी गाड़ी में बैठा लिया और किसी से कुछ कहकर नसबंदी कराने ले जाने लगे। उसने बहुत कहा कि वह शादीशुदा है और उसका बाल बच्चा भी है लेकिन पुलिस वालों ने उसकी एक नहीं सुनी। इस अत्याचार को देखकर लोग के बहुत लोग नेपाल की तराई में भाग गये। लेकिन वह नहीं भाग सका था। वहाँ भी उसे कोई न कोई तंग ही करता। इसलिए वह वापस आ गया था। वह सोच रहा था कि उसका शादी करने वाले दिन किसी तरह उसे बचाने में वह सफल नहीं होंगे।

बैजू को बचाने के सभी प्रयास जब नाकाम हो गए तो उसकी बहन ने बासमती को सिंदूर को काम हाथ सूचाकर संदेश भेजा। अब बासमती को लखनपुर में रुकने का कोई मतलब नहीं था। उसकी माता पिता लखनपुर में और बारातियों को लेकर आने वाले थे। दिन ढलने ही बारातियों की बैलगाड़ी आ गयी। बासमती को पहले से ही पता था कि उसका गौना होने वाला है। बासमती को कोई संदेह किसी ने नहीं होने दिया। लोगों ने बासमती को बैलगाड़ी पर बैठा दिया। वह बैलगाड़ी के अन्दर छिपकर बैठी हुई थी। बैजू के पिताजी वाली दूसरी गाड़ी में बैठे हुए थे। बैजू को पिताजी ने बताया कि बासमती को लखनपुर में रखने का कोई मतलब नहीं है। उसे वापस ले जाना ही ठीक है

जब बारबरीक को पागल करार दे दिया गया तो उसके पिता का पैसा इलाज कराने के लिए उसे लेकर तीन दिन पहले कलकत्ता चले गए। मेरे लिए भी यह दर्दनाक अनुभव जैसे ही थी। पिछले पचास बरस दिनों में इतनी बड़ी बात हो गयी और पूरी दुनिया कहीं चली गयी इतने दिनों का ही साथ था हमारा लेकिन जाते जाते उसने मुझे अपनी अमूल्य निधि दे दी थी। इस निधि से पूरी वंचित लोगों के लिए एक शिक्षण खड़ा करना है जैसा वह चाहती थी।

अब घास एक बड़ा उलझनपूर्ण हो गया था। मेरे सामने अब निश्चित रूप में अकेले सफर पर निकलने जैसा एक चैलेंज था। नेपाल में तो मुझे रहना नहीं था तब क्या करता हूँ? अपने देश में कोई नौकरी खोजनी है या वैसा कुछ करना है जैसा बारबरीक के साथ मिलकर तय किया था? ऐसे कुछ निश्चय थे दूसरा था पूरी गरीब लोगों के लिए काम करना है उनके लिए लेखक बनना है कलाकार बनना है उनकी लोक कलाओं को शिक्षा और रोजगार का औजार बनाना है पुराना काम यही करना है, मैं बारबरीक की लिखि हुई बातें याद करने लगा मुझे राजनीति के दाँव के तल अपने भविष्य का हल नहीं चुनना है बल्कि जो अब विनोबा जी के चरणों में छूटकर दिखा था उनके महान दर्शन जीवन और शिक्षण के प्रयोग से समाज का हित करना है विनोबा जी से पूरी तरह से मिलने के लिए विनोबा जी एम एल एकेडमी आए थे उनकी सभा में काफी भीड़ इकट्ठा हुआ थी। बारबरीक को मैंने कभी बताया था कि जिस दिन मेरे पहले वाले विद्यालय में हम शिक्षक विनोबा जी के लक्ष्य जीवन और शिक्षण पढ़ने आए थे, उसी दिन शिक्षक महादेव ने पूरी कक्षा पेलकलम पार्क से निकाल दिया था मैं विनोबा जी को लेकर नहीं समझ पाया विनोबा जी को सभा में मुझे दर्शिया कहती थी कि मैं उनको गुरु मान बनाऊँ लेकिन मैं उनसे लोगों के बीच में पैसा कुछ बोलने का साहस नहीं कर पाया था। बारबरीक मेरे हाथ पकड़कर बार बार खड़ा देती थी एक बार बाबा की नजर मेरे हाथ पर पड़ी और उन्होंने स्वयंसेवक को मेरे पास भेजा। मैं जोश के साथ बाबा के पास गया। बाबा ने मेरे प्रणाम का हाथ मेरे माथे पर हाथ फेरते हुए बोलने के लिए कहा। मैं कुछ नहीं बोल पाया। बारबरीक ने बाबा को सब बात बताई तो

था और भाषण के बाद किताब हाथ में लेकर उसे खोल दिया और 8 जनवरी को उसके गाँव के लिए जनकपुर के प्रस्थान कर गया।

दरभंगा आने पर हर तरफ लोगों में लगा रहा था कांग्रेस और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीआई) एक तरफ और दूसरी ओर बीकी पार्टियाँ मिलकर जनता पार्टी बन गयी थी। छात्र और युवा लगातार से घर घर चुनावी उम्मीदवारों की सहायता कर रहे थे। हर तरफ लोग उमड़ रहे थे। पूरे क्षेत्र में चुनाव का भारी उत्साह था। जिस तरह इमरजेंसी में लोग तबाह हुए थे वही तरह चुनाव में कांग्रेस का सफाया हो गया। दिल्ली में जनता सरकार का गठन हुआ। जयप्रकाश नारायण और आचार्य कृपलानी की सहमति से मोरारजी भाई देसाई को प्रधान मंत्री चुना गया लेकिन उतने बड़े आंदोलन से भी पटनीपुर राजनीतिक का ढर्रा परिवर्तन नहीं हुआ। वहाँ मुझे राजनीतिज्ञों से कुछ पर किसी तरह की चर्चा नहीं करनी है। मुझे तो सिर्फ यह देखना था कि अकल्पनीय सफलता के बाद क्या सरकार जेपी की संपूर्ण क्रांति को आगे बढ़ाती है या पुराने राजनीतिक ढर्रे पर ही चलती है। मैं जब दिल्ली पहुँच गया तब मेरा कोई परिचय या पैरवी नहीं था। सौभाग्य से मैं ही एक आंदोलनकारी हूँ मुझे अपने अनुभव से यह लगता था कि अपने दम और जनता जी के साथ मुझे बातचीत से कोई न कोई अवसर जरूर मिलेगा।

दिल्ली आने का मेरा उद्देश्य प्रकट रूप से तो नयी सरकार की कार्यशैली देखना था। लेकिन मैं जानता था कि जिस सरकार को बनाने या बनाने के लिए इतनी बड़ी संख्या में लोगों ने अपनी जान तक कुर्बान कर दी है उसी सरकार के एक एम पी चुने जाने के बाद मैं उनसे मिलने जाऊँ और उनसे कहूँ कि मैं भी आंदोलन में भाग लिया था तो इसमें कोई अजीब बात नहीं होगी। मैं पिछड़ा वर्ग से आता हूँ। मैं भी एक कार्यकर्ता के रूप में काम करने की इच्छा रखता हूँ। इसी तरह की कुछ बातें मैं सोचकर गया था। मैं जब दिल्ली पहुँचा तो मेरे पास कोई पैसा नहीं था। मैं अपने साथ एक चादर और ओढ़ने के लिए एक कंबल ले

काम के लिए कुछ नहीं कर पायी। मैंने तय कर लिया कि अब पूरी तरह से कुछ काम [illegible] सब के लिए बिना सरकारी मदद के।

[illegible] के दौरान जहां भी गोंड लोग रहते हैं वहां से [illegible] हाथों के अलावा इस चित्रकारी में भरा जाने के लिए [illegible] चित्रकला के विकास की ओर किसी का ध्यान नहीं था। [illegible] के काम में [illegible] के [illegible] बनाने का विशाल भंडार था। सीता राम बाघ, [illegible] देखना शामिल थी। [illegible] के लिए [illegible] में [illegible] में मुझे काले [illegible] ही कम नजर आ रही थी। कलाकार [illegible] बना रहे थे और [illegible] कर किसी [illegible] रंग से चित्रों को [illegible] करने के तरीके कभी पैसे की [illegible] थी। [illegible] होता रहा था कि [illegible] के काम में [illegible] हो रहा है। [illegible] में [illegible] के साथ [illegible] में [illegible] कुछ [illegible] और [illegible] को [illegible] प्रशिक्षण [illegible] [illegible] [illegible] नहीं था और ऐसा कोई [illegible] नहीं था जो [illegible] काम [illegible] [illegible] कोई जानता था कि [illegible] को [illegible] [illegible] को सकता था?

[illegible] के [illegible] मैंने [illegible] किया कि [illegible] [illegible] [illegible]

रहे हैं मुझसे छोटी बहन बनारस में रहती थी लेकिन उसके मकान का पता मेरे पास नहीं था बस इतना ही जानते थे कि वह अपने परिवार के साथ दशाश्वमेध घाट इलाके में रहती है घर में लोगों ने पाया कि ठिकाने पर ही आ रहा है तो कोई हलचल नहीं है मैं बनारस आया, चार दिनों तक खोजबीन रहा मुझे बहन बहनोई का घर नहीं मिला मैं असल में चाहता भी यही था बहन बहनोई अगर मिल जाते तो बिना खास मतलब के मुझे दिल्ली नहीं जाने देते मैं तो अब दिल्ली आना चाहता था मुझे दिल्ली की जमीन पर उसके बिल्कुल अनजाने की उड़ान भरनी थी चाहे फटेहाली में ही क्यों न रहना पड़े मैंने मान लिया था कि यहीं कोई उपाय मिलेगा

दिल्ली पहुँचने पर सबसे बड़ा प्रश्न ठहरने का स्थान खोजना था मैं किसी परिचित व्यक्ति के पास जाकर अपने नसीब को घुमा फिर नहीं सकता था मेरे पास तो थोड़े रुपए थे उसे मैं होटलबाजों में खर्च नहीं करना चाहता था शुरू की कुछ रातें स्टेशन के प्लेटफार्म पर ही गुजारीं दिन भर तहाँ तहाँ घूमना कहीं जाने में रात बीती और रात में प्लेटफार्म पर अखबार बिछाकर सो जाना यही दिनचर्या थी। एक दिन घूमते घामते जनपथ, जनपथ क्षेत्र का अशोक होटल, गोलचक्कर पार्लियामेंट स्ट्रीट की तरफ चला गया। उधर हर तरफ कपड़ेलत्ते अधन बन रहे थे और बनाने वाले मजदूर बिहार उत्तर प्रदेश के थे। मजदूरों में स्त्री पुरुष दोनों थे एक कैंप बनाते थे खाने खाने के लिए जगह होती थी जनपथ क्षेत्र जहाँ आलीशान रोड गोलचक्कर से निकलता था उस पहाड़ पर कतारों में चार पेड़ों की छाया में बेशुमार मजदूर रहते थे अब मैं रोज वहीं जाने लगा सबसे ही पहले लोगों से मुलाकात होती हो गयी थी मजदूर वर्ग में स्त्री भी थीं वे खाना भी उधर ही बनाते थे खाने के उपरान्त से बचे हुए आटे से बनाई हुई बाटियाँ बाँट जाती थीं मजदूरों के साथ खाना बनाने में भी कुछ दिन तैयार हो गया, लेकिन प्लेटफार्म पर मेरा सोना उन्हें पसन्द नहीं था। मजदूरों में भी कुछ मजदूरों के साथ मेरा [illegible] साथ में लगभग दो तीन महीने तक काम करता रहा। दिन में तो मैं काम करता रहा रात को प्लेटफार्म मजदूरों से भी खाली लगता।

अब थोड़े से पैसे भी इकट्ठे हो गये थे अब मैंने कुछ व्यवसाय करने की सोचा मैं अपने आसपास के लोगों को देखता था कि कुछ लोग बीड़ी बेचते थे मैंने सोचा कि बीड़ी बेचना बहुत आसान है मैं भी बीड़ी बेचने लगा। बीड़ी बेचने के लिए मुझे कुछ पैसे चाहिए थे। मैंने अपने कुछ साथियों से उधार लिया। बीड़ी बेचने के लिए मैं जनपथ क्षेत्र में ही घूमता रहता था। बीड़ी बेचने के लिए मैं जनपथ क्षेत्र में ही घूमता रहता था। [illegible] मजदूरों से बीड़ी बेचने लगा। [illegible] मजदूरों से बीड़ी बेचने लगा। [illegible] मजदूरों से बीड़ी बेचने लगा

मेरे पास आठ-नौ साल का एक लड़का आकर बैठता था. उसका नाम कोरल बैज था. वह कपड़ा बीनकर गुजारा करता था. एक दिन मैंने उसका हाथ पकड़कर देखा. उसके हाथ में कहीं बाल सुलभ कोमलता नहीं थी. उसकी हथेली और उँगलियाँ कट-छिलकर एकदम कठोर हो गयी थीं. उसने बताया कि वह केवल टूटे भागे सीसा चुनता था. सीसे को तेज धार से खरोंने पर उसकी सफ़ेदी और रोशनियाँ साफ़ दिखती रहती थीं. तब खून नहीं निकलता था. मैंने सोचा. इस बच्चे की देह में खून ही कितना था जो बहता. मगर मैं उसकी बात नहीं समझ सका. वह सीसा ही क्यों चुनता था. उसके जैसे दर्जनों बच्चों को मैं इधर कचरा चुनते देखता था. मगर यह नहीं जानता था कि सभी बच्चे अलग अलग तरह की चीज चुनते थे. उसने बताया कि उनका भी संगठन था जो तय करता था कि किन कालोनियों में क्या चुनना. कपड़ा चुनने वालों को कथरीचिया कहा जाता था. कोई केवल कागज और गत्ता चुनता था. कोई प्लास्टिक और रबड़ बीनता था. कोई लोहा और टिन चुनता था. कोरल को शीशा और पीतल चुनना था.

कुछ दिनों में कोरल बैज कचरा ही चुन रहा था. वह मेरे पास आता तो खुश था. लेकिन मनहूसियत कहीं पड़ रहता था. एक दिन वह मेरे सामने के रास्ते पर भागा जा रहा था और पीछे से एक पुलिस उसे खदेड़ रही थी. दौड़ते-दौड़ते वह बच्चा गिर के बल गिर पड़ा. मेरे कुछ करने पर कुछ मजदूर पीछे मजदूरों ने पुलिस को घेर लिया. पक्की सड़क पर मुँह के बल गिरने से कोरल के दो तीन दाँत टूट गए और काफी खून से भीग गयी. कुछ लोग उसे उठाकर पास के एक डाक्टर के पास ले गए और कुछ लोग पुलिस की धुनाई कर हमारे पास ले आए. मजदूर बहुत गुस्से में थे. वे किसी अधिकारी को ही उसे सौंपना चाहते थे। इस घटना के पीछे बात यह थी कि कोरल ने पर पुलिस को पीछे कई सप्ताह से लगे अपने ठिकाने पैसे के सिलसिले को अब नहीं चलता है. वह लगातार ही मजदूर को दिया था. नियम का पैसे जो मजदूर ठेकेदार से लेकर ठेकेदार तब उस इलाके की पुलिस को और बड़े अफसर को पहुँचाता था. नहीं तो रहे धंधे के आरोप में पकड़ लिया जाता। कोरल ने पैसा चौथे दिन से बीमार होने पर और पैसा के काम नहीं कर पाया था इसलिए इलाके की पुलिस को भी नहीं पहुँचा था. पुलिस उसी खोज रही थी उस दिन वह उसे दिख गया, इसलिए खदेड़ रहा था।

मेरी दुकान पर कार बनों के बाद मोबिलेस का दूसरा बड़ा ग्राहक वही था. वह लगभग दो घंटा चाय पीने में और बातचीत में खाता लेता था. वह एक आदिवासी इलाके से था. वहाँ उसकी माँ और अपनी भी थोड़ी खेती थी. उसके पास लगभग तीस एकड़ जमीन थी. वह मुख्यतः मोटे अनाजों की खेती करता था और गाहे-बगाहे जिसमें कपास भी बो देता था. उसके पास लगभग बीस बैलों की जोड़ी थी. बहुत लोग मेरे पास इकट्ठा हो गए थे. उसके साथ कई मजदूर लोग भी आगे खड़े थे. सभी लोग कपास के किस्मतपुरा की कहानी सुन चाय पीने में और चाय पीने के बाद उन्हें बीड़ी की जिए मेरी दुकान पर आकर सभी बैठने थे। खुल मिलाकर वहाँ लोग एक मनोरंजक जमा होते थे। उस पंचायत के एक सदस्य पहुँचा पाठे भी थे. वह पंचायत के सेक्रेटरी दिनेशजी दुबारा से पुरा पैसा का विरोध करने के कारण हमेशा उनका दुश्मनदार ही होता रहता था. अब वे उसके सामने से हटने की सुरक्षा कर दिया. उसे पैसा अब मिलने लगे थे. तो मजदूरों ने पुलिस को उसके पास लिया. चर्चा बात चलने के बाद वे तो ये तहले तो मुनाफी खुद पुलिस की इसके बाद उसे पकड़कर कुछ लोगों को साथ पुलिस चौकी ले गए.

इस घटना का अच्छा असर यह हुआ कि अगले दिन मेरी दुकान पर उस इलाके के सभी कत्लबरिया जमा हुए मजलिस में सुनने वाले बहुत लफाड़ी लोग भी जमा हुए। मथुरा पांडे एक बजे ही आ गए। अब कत्लबरिया बच्चे मजलिस ही रह थे। मजलिस में बहुत लोग शामिल हुए। संगठन ने पहला निश्चय किया कि कोई कत्लबरिया अब पुलिस को पैसे नहीं देगा। दूसरा निश्चय हुआ कि सबको पढ़ना है। तीसरा महत्वपूर्ण निश्चय हुआ कि संगठन इसमें सभी उन लड़कों की मदद का इंतजाम अख्तियार करेगा ताकि कबाड़ा चुनने से बचकर मिले मजदूर पाठशाला के हिसाब से अपने पैरों का इंतजाम कर सकें। निश्चिंत होकर सीख सकें।

महीना भर के अंदर ही बच्चों से सहानुभूति रखने वाले बहुत लोग संगठन के सदस्य हो गए। कभी लोग उन बच्चों के लिए कुछ न कुछ करना चाहते थे बच्चों की संख्या सत्तर थी जो आठ-नौ साल से पंद्रह सोलह वर्ष तक थे। उनकी सबसे बड़ी समस्या थी सोने और रहने की। रमजान के एक सदस्य बुलाकी सिंह थे। उनका एक गैरेज था जो अब खाली पड़ा था। उन्होंने उसमें बच्चों को सोने और रहने की इजाजत दे दी। एक सदस्य थी शंकरन। उन्होंने अपने घर में खाना बनाने की जिम्मेदारी ले ली। एक सदस्य थे मोहम्मद अख्तर। उन्होंने अपने घर से दो बड़े बरतन बच्चों के लिए जुटाने का वादा किया। तय हुआ कि खाना सभी सदस्य अपने घर से लेकर आएंगे। बुलाकी सिंह के गैरेज में बच्चों के सोने का इंतजाम किया गया। बाद में बुलाकी सिंह ने अपने घर में ही बच्चों के लिए जगह दे दी। शंकरन और उनकी पत्नी ने खाना बनाने की जिम्मेदारी ले ली। मोहम्मद अख्तर ने अपने घर से बरतन लाने का वादा किया। तय हुआ कि खाना सभी सदस्य अपने घर से लेकर आएंगे। बुलाकी सिंह के गैरेज में बच्चों के सोने का इंतजाम किया गया। बाद में बुलाकी सिंह ने अपने घर में ही बच्चों के लिए जगह दे दी। शंकरन और उनकी पत्नी ने खाना बनाने की जिम्मेदारी ले ली। मोहम्मद अख्तर ने अपने घर से बरतन लाने का वादा किया।

मैंने देखा कि मेरे सामान बाहर फेंक दिए जाएंगे, इसलिए वहाँ से मैंने अपने सामान को पहले ही बाहर निकाल लिया था। मैंने देखा कि मेरे सामान बाहर फेंक दिए जाएंगे, इसलिए वहाँ से मैंने अपने सामान को पहले ही बाहर निकाल लिया था। मैंने देखा कि मेरे सामान बाहर फेंक दिए जाएंगे, इसलिए वहाँ से मैंने अपने सामान को पहले ही बाहर निकाल लिया था। मैंने देखा कि मेरे सामान बाहर फेंक दिए जाएंगे, इसलिए वहाँ से मैंने अपने सामान को पहले ही बाहर निकाल लिया था। मैंने देखा कि मेरे सामान बाहर फेंक दिए जाएंगे, इसलिए वहाँ से मैंने अपने सामान को पहले ही बाहर निकाल लिया था।

स्त्रियाँ सभी जाति के मिलेजुले समूह में नहीं बैठ सकती थीं। इस परंपरा को तोड़ने के लिए लड़कियों को प्रेरित करने का साहस मैं नहीं कर सकता था। मुझे यह सब करना तो था, लेकिन बहुत धीरे-धीरे।

पटना में एक सप्ताह बिताने के बाद मैं बापूजी का हालचाल पता करने जनकपुर चला गया और राजकली को मिला। राजकली करीब महीना दिन पहले कलकत्ता गयी थी। बापूजी का इलाज अभी भी चल रहा था, मगर वह धीरे-धीरे ठीक हो रहे थे। उनका मन पढ़ने में लग गया था। वकील साहब चाहते थे कि उनका विवाह कर दिया जाए, लेकिन विराज की चर्चा से ही उनका मन बिदक जाता था। इसलिए विनोदानंद भी विवाह कराने की अनुमति नहीं दे रहे थे।

दिल्ली में मैं कुछ स्वयंसेवी संस्थाओं के संपर्क में आया था, जो वंचित स्त्रियों और मजदूरों के लिए काम कर रहे थे, किंतु उनके लक्ष्य और काम को देखते हुए मैंने यही तय किया था कि मैं बिहार के देहातों की परिस्थिति के अनुसार बदलाव की प्रक्रिया शुरू करूंगा। शिक्षित मैं इन दिनों ऐसी कोई संस्था नहीं थी, जो सामाजिक बदलाव और गरीबी की मार से दलित स्त्रियों के लिए काम करती हो। उसके लिए मुझे ही लोगों में प्रचार करना था। पहली दिक्कत मेरे सामने यह हुई कि मैं मुश्किल से चार साल बड़ी आयु की होऊंगी, लेकिन सामाजिक कार्यों के मामले में वे मुझसे बहुत बड़े थे। वे सर्वोदय और भूदान आंदोलन में जुड़े हुए थे और संगठन में उनकी विशेषज्ञता बहुत अधिक थी। मेरी पूरी योजना सुनने के बाद उन्होंने मुझे एक संस्था की प्रसिद्ध समाजसेवी रामदास आश्रम बोधगया के प्रमुख श्री हरिकांत मुखर्जी के नाम एक पत्र दिया। मैं वह पत्र लेकर सप्ताह आश्रम पहुँच गया और हरिकांत जी से मिला। उन्होंने मेरे काम और विचार जानने के बाद आश्रम के कार्यकर्ता बना लिया।

आश्रम में उनके सहयोगी सचिव श्री नूरुल हिदायत जी की देखरेख में कई गतिविधियाँ चलती थीं। आश्रम में हिदायत जी को सभी लोग 'मौलाना' कहकर संबोधित करते थे। वे आश्रम के पास के गाँवों में जाकर लोगों से मिलते थे और उनकी समस्याओं को सुनते थे। उनके पास हर गाँव के लोगों की समस्याओं की लंबी सूची थी। वे उन समस्याओं को दूर करने के लिए प्रयास करते थे। उनके पास हर गाँव के लोगों की समस्याओं की लंबी सूची थी। वे उन समस्याओं को दूर करने के लिए प्रयास करते थे। उनके पास हर गाँव के लोगों की समस्याओं की लंबी सूची थी। वे उन समस्याओं को दूर करने के लिए प्रयास करते थे।

आश्रम में आने के बाद मैंने देखा कि वहाँ के लोग मुझे 'मौलाना' के नाम से ही जानते थे। मैंने भी उन्हें 'मौलाना' कहकर ही संबोधित करना शुरू कर दिया। मैं उनके साथ गाँवों में जाता था और उनके काम को देखता था। मैंने देखा कि वे लोगों की समस्याओं को सुनते थे और उनके समाधान के लिए प्रयास करते थे। मैंने भी उनके साथ मिलकर काम करना शुरू कर दिया।

हिंदी सिखाना अन्य विषयों से कहीं भारतीय दृष्टिकोण से परिचित कराना और अमरीका की छात्राओं को पढ़ाना कहीं ज़्यादा चुनौती भरा था। मैं इंग्लैंड के स्कूलों में अपनी छात्रा मैरियन रथिमन से इस तरह

राजकीय आश्रम में मैं नौकरी करने नहीं गया था। मैं समाजों की व्यवस्था प्रक्रियाएं और कार्यकुशलता देखने-समझने के लिए ही नहीं गया था। ज़रूरत है मैं वहाँ की कार्य-प्रणाली देखकर बहुत कुछ सीखूँ। एक थे अलादीन भाई जो विद्वान और लगनशील जैसे व्यक्तियों थे। वे पटना के खेड़हर से कुछ किसी गति से भाग थे। इनसे बहुत कुछ सीखने को मिला। मैं पहली बार मुझसी जैसे दलित समुदाय के लोगों से मिला था। इनकी सामाजिक आर्थिक दशा को समझने से दलितों के प्रति प्रेम और भी गहराने हुआ। मैंने रथिमन के साथ मिलकर मैंने विचार किया कि दलितों और अन्य पिछड़े समुदायों की शिक्षा के लिए भी सामाजिक शिक्षण पद्धति से काम किया जाए तो इसके लिए **पढ़ाई के साथ कमाई** की एक नयी पद्धति विकसित हो सकती है। काम से संबंधित अनुभवों से इनकी शिक्षा भी रोचक और सार्थक हो सकेगी। बुनियादी शिक्षण की परिकल्पना भी होगी। मैंने इस विषय पर विस्तार से चर्चा करते हुए मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि समाज के सबसे पिछड़े वर्ग के लिए उनके घरों में उनके पास आकर ही शिक्षा की व्यवस्था करनी होगी। मैंने अपने विचार को मूर्त रूप देने के उद्देश्य से बिहार सरकार के शिक्षा विभाग के अधिकारियों से भी चर्चा की। उन्होंने मेरे विचार को सराहा। मैंने सोचा था कि इस योजना को मैं अपने कार्य के अंतर्गत ही लागू करूँगा। लेकिन मेरी योजना को कार्यान्वित करने के पहले ही मुझे **पैरोल्स-कस्बा विश्वविद्यालय** के लिए बुलावा आया। मैंने सोचा कि इस अवसर का उपयोग करके मैं अपनी योजना को कार्यान्वित कर सकूँगा। मैंने मान लिया कि इस बार मैं अपने दो साथियों को भी ले जाऊँगा। मैंने सोचा कि मैं अपने साथ ले जाने के लिए मैं अपने साथ ले जाऊँगा। मैंने सोचा कि मैं अपने साथ ले जाने के लिए मैं अपने साथ ले जाऊँगा।

सेवा में आने के बाद मैं एक ही सप्ताह में मैं अपने कार्य के कारण सफल हो गया। इस आंदोलन की सबसे बड़ी सफलता थी पुराने और संपूर्ण क्रांति की अवधारणा को लेकर पुराने राजनीतिज्ञों के हाथ से आंदोलन को मुक्त करना। इस आंदोलन में मैं अपने साथ लिए गए [illegible] मंत्री [illegible] के कार्यकर्ता से ज्यादा घर-घर में शामिल हुए। [illegible] स्वतंत्रता आंदोलन में हुई थी। [illegible] इसके बाद मैं [illegible] और [illegible] में लगभग [illegible] करके रखा था। [illegible] मैं [illegible] के [illegible] में [illegible] के [illegible] में [illegible] के [illegible] में

बराबरी जैसे प्रचुर और विशाल नहीं थे। साहित्य के पेशे अपनाने बनाने के स्वतंत्र प्रयास की ओर मुड़ जाने थे। यहाँ मैंने अपना गीत में ही शासन के विरुद्ध स्वर भरा। स्वतंत्रता के लिए **ब** और **ह** के साथ अपना गीत देखिए —

ब से बदला नहीं किसी से, कोई बड़ा है अपने घर में, ह से हल की मूंठ पकड़कर हम खेतों में,
धरती पर हक ले के रहेंगे। ऐसे लोगों का अपना खेतों की सामाजिक व्यवस्था पर बहुत बड़ा हुआ दलित अन्नदाता मजदूर थे। पेट भर खाते थे फिर भी मुट्ठे बना रहते थे। इस प्रकार गांव में उनके भीतर की विद्रोह की आग जलती रहती थी। इन्होंने जब कभी मौका मिला कर दिया तो जमींदार का गलेवक होते। सामाजिक विषमता के साथ रहते हुए मैंने **लोक-समिति बुलेटीन** नाम से हस्तलिखित साइक्लोस्टाइल्ड पत्रिका का संपादन और प्रकाशन भी किया।

[illegible]

[illegible]

[illegible] ने स्वतंत्रता आंदोलन को मजबूत करने के लिए बहुत काम किया। बिहार (झारखंड समेत) के अनेक भागों में लोक समिति के संगठन के तहत नये कार्यकर्ताओं का आर्थिक सहायता और प्रशिक्षण द्वारा उन्होंने सामाजिक क्षेत्र में कई संस्थाओं का गठन करवाया। इस काम में वे बीस वर्ष तक रहे। बिहार के इस्लामपुर (नालंदा) के हरिजन मजदूरों और भू-स्वामियों के बीच लंबे समय तक मजदूरी के सवाल को लेकर आंदोलन चलता रहा। यह शांतिपूर्ण आंदोलन लोक समिति के द्वारा ही की गई हिंसात्मक के नेतृत्व में चला। वे भी आंदोलन में शामिल हुए। इस आंदोलन से जो सामाजिक दुष्परिणाम पैदा हुई उसके फलस्वरूप आगे चलकर विनोबा भावे ने विनोबा आश्रम एवं लोक-शिक्षण केंद्र [illegible] में [illegible] कराया। आज भी इस संस्था को लोग लोक-समिति ही कहते हैं।

लोक समिति की अवधारणा ने दक्षिणी में बदलाव की जो चिंगारी [illegible] के [illegible] प्रखंड अंतर्गत भीखमपुर और परसा गाँवों में दलित लाल शोषण के विरुद्ध [illegible] इस आंदोलन में मेरे अग्रज [illegible] का बड़ा हाथ था। भीखमपुर के उत्तर पश्चिम और परसा के उत्तर पूरब हमारा गाँव है। मैं अक्सरहाँ भीखमपुर जाता था। भीखमपुर का [illegible] बड़ी अजीब किस्म का भाईचारे का था। [illegible] भीखमपुर के पूरबी टोले में मालवंशी और चमरौटा था और वहाँ लोगों के [illegible] खेतों में [illegible] सूअरी [illegible] की मेड़ों पर [illegible] के गाँवों में [illegible] का बड़ा बोलबाला था। [illegible] कायम रखने को भी को लोग बहुत तरह की [illegible] करते रहते थे और गाँवों को [illegible] बना रहता था। इस दबाव से [illegible] को राहत दिलाने के लिए बड़ी हद तक सहारा लेना [illegible] के [illegible] में चारों तरफ [illegible] के बारे में [illegible] करना [illegible] के [illegible] के [illegible] के [illegible] के [illegible] में [illegible] के [illegible] के [illegible] के [illegible] के

चिकित्सक ने बासवती के वर को सलाह दी कि उसे किसी ऐसे स्थान पर घुमाने के लिए ले जाया जाए जहाँ देश विदेश के लोग आते रहते हैं उसने मुझसे मिलने की सलाह भी दी। बासवती चिकित्सक की सलाह से बहुत खुश थी उन दिनों टेलीफोन की बहत सुविधा नहीं थी मेरे साथ रासबती सभी संपर्क कर सकती थी जब मैं उसके पास जाती मैं भी इसी कारण से बार बार जमकपुर जाकर उससे मिलता रहता था इस बार जब जमकपुर गया तो रासबती ने सभी हाल बतलाया, मैंने उसे जगहों के बारे में बताया और निमंत्रण दिया अब मैं गया के गांधीवादी संस्थान में स्थित बाल इकिया ट्रेनिंग सेन्टर में कुछ आईडेंटिटेंस हायरेक्टर की हैसियत से काम करने जा रहा था बहुत दूर औरंगाबाद में फ्रांस की संस्था थी और वहीं से इसका प्रशासन चलता था यह संस्था मुख्यतः कुष्ठ निवारण स्वास्थ्य और साक्षरता विषय को लेकर गया जिला में काम करती थी इसका कार्यालय गोरहपोरी में था मैंने रासबती को अपने गया स्थित कार्यालय का पता और वहाँ का टेलिफोन नंबर लिखकर दे दिया। निश्चित हुआ कि जनवरी के अंत तक वह बासवती और उसके पति को लेकर गया आएगी और पहले मुझे फोन से बताएगी

जनवरी 1981 बीतने पर था मैं आम बुकिंग के काम में लगा हुआ था एक के आखरी दिन मेरे फोन की घंटी घनघना उठी उस तरफ से किसी पुरुष का स्वर था उसने अपना नाम सौरभ चट्टोपाध्याय बताया और अपना परिचय देते हुए कहा कि वह बासवती का पति था मेरे साथ उसका कोई पूर्व परिचय नहीं था इसलिए सौरभ जी शब्द बोलने लगे। आखिर उसने बताया कि डॉक्टर की सलाह के मुताबिक वह बासवती और उसकी बहन रासबती के साथ घूमने के विचार से गया आना चाहते थे और मेरे साथ रहना चाहते थे मैंने उसे एक सप्ताह बाद अपने को फोन करने को कहा आखिर ये रासबती कौन है जिसके लिए ये सब हो रहा है मुझे याद आया कि रासबती नाम की एक बहन और बासवती की चाची विमला चट्टोपाध्याय दोनों ही बच्चे थे इसलिए उन्होंने मेरे बारे में कुछ नहीं बताया था। आखिर मैंने सौरभ से पूछा था कि बासवती और रासबती के साथ और कौन कौन आ रहे हैं। सौरभ ने बताया कि बासवती के पिता और चाचा भी आ रहे हैं। मैंने उसे बताया कि मेरे साथ बासवती और रासबती के अलावा और कोई नहीं रहता है। मैं अकेला ही रहता हूँ। मेरे पास एक बड़ा सा मकान है। मैं उसमें

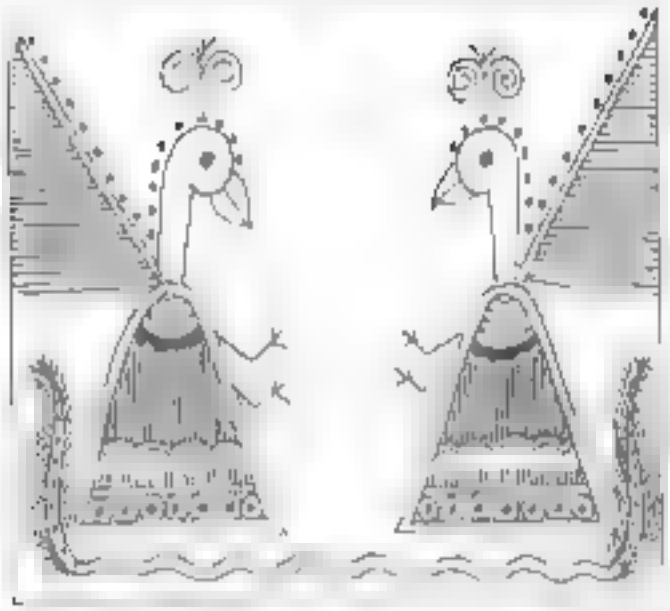

आज मैं बालमणी दीदी बच्चों को अपने साक्षरता-केन्द्रों का दर्शन कराना चाहता था। गोपालिणी से उत्तर खजनपुर, कौथेटिया और तपसी गांव में हमारे अच्छे केन्द्र थे। इन केन्द्रों पर लड़कियाँ अधिक थीं और वे सभी गोदना चित्र के माध्यम से अक्षर और चित्रांकन सीख रही थीं। कुछ लड़कियों ने प्रींटिंग कपड़े बनाया था और दो लड़कियाँ एक साथ मिलकर छह मीटर लंबे कपड़े पर ओढ़नी बना रही थीं जो पूरा होने पर था। कुछ लड़कियों ने कपड़े पर ही कुछ और सामान बनाया था। पिछले कुछ दिनों में मैंने एक आकृतिया विकसित कर लिया था, पढ़ाई के साथ ही चित्र के उपयोगी वस्तुओं के उत्पादन का आकृतिया चित्रकारी में कपड़ा चुनने वाले बच्चों के लिए प्रशिक्षण से पहले बड़ा कठिन काम होता था। मैंने बच्चों को प्रशिक्षण और [illegible] की विधि का एक संक्षिप्त पत्र दी थी और उसे [illegible] आकृति बनाने की [illegible] के लिए [illegible] मैंने कोमल की [illegible] और [illegible] के [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] और बात सामने आयी आसमानी हाजाहारी हो गयी थी।

बात पलटने की [illegible] मालवगढ़ इस लड़की को समझाइए कि इसका जीवन कैसे चलेगा आपके साथ यह जिस परदेश से रहती थी वहीं परदेश एक अपने पति के साथ भी कलकत्ते रहेगी तो कैसे चलेगा? इसका बोलकर रमाबहनी रुकी नहीं चली गयी मैंने डाक्टरनी का हाथ पकड़कर आगे पास बैठा लिया। मेरे चित्त तब पर **गोदना चित्रकला** की बड़ी कुशल की हुई चुनरिया थी जिसके रमणी चित्र बड़ी मेहनत से स्वयं तैयार किया था अपने शरीर से उतारकर उस पर चेखव के रूप में लिखा था बासमती ने पुस्तक उसके हाथ में रखते हुए कहा इस पुस्तक को आपकी संतान समझकर मैं अपने हृदय से लगाए रखूंगा और कैसे जैसे मेरा आना बढ़ेगा इसको साथ लेकर आऊंगा

आपने शरीर के संघात से उत्पन्न उन कलों को कलिल देखकर परमुग्ध सी एक टक देखती बासमती ने घर के पंखों को धन्यवाद देकर सार लेख और कहा संतान किसी एक आदमी से तृप्त नहीं हो सकती है यह अकेले नहीं संतान नहीं है आप नहीं होते तो मैं इसे संतान को जन्म नहीं दे पाती यह मेरी और आपकी संतान की बराबरी है मेरे आपको दोनों की गैरहाजिर अब आपको इसका संरक्षण करना है और इसका कर्ता भी है अब यह इसका नियंत्रण के साथ संरक्षण और लालन को जिम्मेदारी मैं इसके बाद से जिम्मेदार तो कुछ लोगों को यह बच्चे आपको पहले ही बता चुका हूँ। आप विद्यमान अवश्य है। अब इसमें भी कमी है यही आपा मरद पुरुष कहा दोनोंएक आपने मुझे सब कुछ देखना होगा इन पेड़ों से कमाकर कैसे हो सकते हैं यह भी पैसे देखा ही लिया है अब और कुछ देखना बाकी नहीं रहा अब यह एक ही देखना है पुस्तक के लेखक के रूप में आप मुझे अकेले नहीं छोड़िए मेरे साथ आपका नाम भी जुड़ा रहेगा [illegible] और क्या कहूँ ? इतनी बात बोलकर वह अचानक चुप हो गयी[illegible] उसके दोनों हाथों को अपने हाथ में ले मैं सांत्वना नहीं दे सका रोकने दुःख के आवेग को उसमें मुंह पर मेरी पुरानी आभा लौटकर एकाएक आयी

[illegible]

यह फ्रिजमिलाहट पता नहीं कैसे मेरी कोख में समा गयी जो आज तक भुलाए नहीं भूलती है यह चुपचाप उठी और कमरे से निकल गयी।

सुबह में मैं कुछ देर से उठा तब तक दोनों बहन नहा-धोकर तैयार थीं मैं भी तैयार हुआ विचार हुआ कि बोधगया चला जाए उन दिनों शायद वहाँ कोई खास उत्सव चल रहा था दुनिया भर के हजारों लोग इधर-उधर घूम रहे थे हम लोग कभी घूमते थे और कभी थककर बैठ जाते थे मैं उन दोनों को समन्वय आश्रम भी ले गया शाम होते-होते सब कोई गया वापस आ गए दिन भर तरह-तरह की इतनी चीजें हमने खा ली थी कि फिर से खाने की जरूरत नहीं थी अगले दिन बासमती के पति भी कुटमैली से वापस आ गए वह बहुत नम्र और व्यवहारिक व्यक्ति लगे बासमती की मानसिक स्थिति को जानते हुए भी उन्होंने उससे शादी की और पिछले तीन महीने से एक मित्र की तरह वह उसका परिरक्षण करते आ रहे थे मैंने इस सबके लिए उनका धन्यवाद किया मैंने बासमती के गीत चित्र और सामाजिक संवेदना के विषय में भी उन्हें अवगत कराया मैंने शुभकामना देते हुए आश्वासन दिया कि बासमती उनके दाम्पत्य जीवन को सुखी रखने और परिवार को समृद्ध करने का दायित्व अवश्य पूरा करेगी अगली सुबह बासमती ने मुझे बताया कि पिछली रात बासमती अपने पति के साथ पहली बार सुखपूर्वक रही वे तीनों अगले तीन दिन तक हमारे साथ रहे। अब उनकी विदाई का समय आया, मैंने अपना निश्चय उन्हें सुनाया अब आगम काम शुरू करूँगा दलाल से। मैंने अपने घर का पता लिखकर बासमती को दे दिया और सबों के साथ सारे पीछे हुए आदेश को स्वयं से दुहरा गया आगे और खुशी के साथ अब अपने आगे के बाहर परिवार को बढ़ाने और पोषण करने में जुटिए और बच्चा होने पर मेरी संस्था में बच्चों का आकर मिलिए। बासमती दलितों की दाखी बनेगी आपके समाज के लिए अभी उसे बहुत कुछ करना है उसके चेहरे पर एक छाह आयी थी और एक जाती थी द्वन्द्व-स्थिति को उसने किसी तरह के साथ एक बार मेरी नजर मेरी नजर से मिली और वह मेरे चरण छूकर आगे बढ़ गयी

मैंने 1965 में सामाजिक काम शुरू किया। उससे पहले मैं बरहेता में जब मैं कक्षा सातवीं में था। उस समय से 1980 तक पन्द्रह वर्षों की अवधि में मैं दलित पिछड़ों और बड़ी जातियों की सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक हालात को समझने का प्रयास करता रहा। इस दौरान अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना तो मैंने अवश्य किया लेकिन सही तौर पर मेरे कार्यकर्ता जीवन का विकास सर्वोदय सेवकों के साथ हुआ। उनकी कार्यपद्धति से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। सर्वोदय सेवकों के साथ तत्कालीन बिहार की समस्याएँ जैसे भूमि की बड़ी समस्या मुझे दिखाई दी। यहीं से अपने अनुभवों को बाँटने और विद्यार्थी समूहों के बीच में जाकर उनके कार्यक्रम में एक दिशा देने के काम में लगना शुरू हो गया। मेरे लिए यह बहुत महत्व रखता था कि एक एक करके मुझे स्वयं संस्था बनाकर काम करना है। मैं तब सर्वोदय सेवकों के साथ काम कर रहा था। वहाँ बराबर अनौपचारिक गुरुकुल की शैली में विद्यालय चलाने की मुझे आदत थी। [illegible] मैंने बड़े सेवकों के साथ मिलकर सोचने की जो प्रक्रिया बनायी थी उस समय से आज तक मैं उसी [illegible] और आगे बढ़कर अपनी [illegible] मैं ही [illegible] को न रह गयी। [illegible] मेरे लिए [illegible] मैं मेरे अब तक के [illegible] मैं [illegible] मैं [illegible] मैं

देखकर हिम्मत बढ़ जाती थी। सामना था एक दिन गली लड़कियाँ लाठी बनकर हालात को बदल देती किसी तरह समय काट रहा था लेकिन उसके साथ ही मौसम भी बदल रहा था। गर्मियों के बाद अब बरसात का मौसम शुरू हो गया। मैंने छप्पर की छतरी बनाने के लिए बाँसों की एक तह लकड़ी के ऊपर और एक तह बिछा देकर रस्सी की बनी से बाँधकर जगह जगह सिरहन लगा दी। इस तरीके से पर्यावरण रक्षा के आकार से बड़ता ना चाहें था मगर तेज बारिश में पानी लीक की छेद होकर सबसे सह वाली पर्यावरण में जमा हो जाता था पानी से बचने हेतु पर्यावरण को लड़कियाँ हाथ खड़े कर थाम रहती थी तब तक पानी बरसात थे और दूसरी और सभी सिकुड़ी रहती थी। नहीं हो के बरसात में लड़कियों बन को खाना खड़ी थी फिर भी कहीं कहीं पर्यावरण के हाथ पानी गिर रहा था। सभी लड़कियाँ शरमाकर हो गयी थी पसर हाथ नीचे नहीं कर रही थी। उनकी दुविधा देखकर मुझे रहा नहीं गया मैं शान लगा कहने हैं हाथ को कहि नाम दूर के वह घड़ी से मैंने पर्यावरणकारी कक्षा को याद किया। ये कक्षा यह पर्यावरण लाने की पहल हमने नहीं है अब भी कुछ लोग दुख को समय नीचे के बाद नहीं रहता है मगर दुख की ढेर भलाए नहीं भुलाता है तब भी वहाँ लोगों की कुछ लड़कियाँ इस को थामे रहती थी और कुछ लड़कियाँ छोड़ने को यही उपाय की कोशिश करती थी। उसे ही समय कम रहा था। साल 1983 में एक दिन पेंसिलवाड़ा आ गए हमारे पास कोशी तो नहीं थी एक टूटे चीजों के दो टुकड़ों के बीच से कपड़ा फैंक देखकर मैंने को बना लिया था। सबसे पर नहीं है। था। किंतु सबसे लड़की गाने थे। कपड़ा पैर और पर्यावरण में ही हमने था। पानी पहले नहीं सड़ी और बड़े पुराने बाद किसी गानों की छोड़े बनाकर सब का दबाने की शुरुआत हो गई। लड़कियों का काम देखकर यह बहुत खुश हुए। आगे समय पेंसिलवाड़ा ने हमें बुलाकर सम्मान किया। अब हमारे दिन बहुत नये थे। इन दिनों से हमने दुःख को छोड़ कर बाद किया। एक आत्मविश्वास पैदा हो और हम सभी लड़कियों पैर जिंदगी नया हुआ बनाकर रख हुआ पेंसिल बिहारीपुर और कुछ लड़कियों मेरे जैसे पर्यावरण हमारी हुआ कुछ पेंसिल नया। दिनों के को नया लगता है। 5 जून 1983 के दिन एक पेंसिलवाड़ा **चाचरी विकास संघ** नाम से पेंसिल सरकार ने साथ लड़कियों मुझे आगे बनाकर 1983 में अध्यक्षों ने फिर से हो और सभी को नए एक पर्यावरण बनाने के लिए बड़ा सहयोग की हमारे पेंसिल विनोबा जी ने इस भवन का भवन बनाया था।

साल 1983 में संस्था संचालन से पहले हमने अपनी और आसपास की लड़कियों की जानकारी इकट्ठी करनी थी। इस समाज के सभी वर्ग की जिंदगी के लिए जीवन कार्यक्रमों पर आधारित **शिक्षा और रोजगार** का एक पेंसिल कार्यक्रम बनाना चाहते थे जो अनौपचारिक की आवश्यकताओं के अनुसार समाधानिक रूप से लड़कियों को बेहतर जीवन के अवसरों से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाए। इसका उद्देश्य पेंसिल लड़कियों को आत्म निर्भर और आत्मविश्वासी बनाना था। इसके लिए हमें लड़कियों के बीच जाकर उनसे बातचीत करनी थी। इस काम के लिए हमें कोई ऐसा माध्यम चाहिए था जो हमें लड़कियों के बीच जाने में मदद करे। हमने तय किया कि यदि हमारे पुस्तकालय की पुस्तकें लड़कियों को दी जाएँ और उन्हें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाए तो उस उद्देश्य से हमारी दिशा का समाधान हो सकता था। इसका आधार भी बहुत व्यापक होगा। मैं अपने साथ छात्राओं द्वारा बनाए गए कपड़े प्रदर्शनी के लिए ले गया। मैं लड़कियों द्वारा बनाए टेबलक्लॉथ, कवर, दुपट्टा और सिलाई के पैटर्न भी ले गया था। इन सामग्रियों के साथ मैंने उनका आधार लेकर सीखने-सिखाने की हस्तलिखित पुस्तक भी ले गया था। जर्मनी की देह से लेकर

[illegible] गायत्री-प्रतीकों की रचना की कथा सुनकर लाख श्रद्धालु थे। इस सम्मेलन में भारत की कई बड़ी संस्थाओं से लोग आए थे। मैंने बताया कि हमारे पास पैसे नहीं हैं और कपड़े और रजाइयां खाने की इस सर्दी में कैसे भेजी जा सकती हैं, इसका कोई इंतजाम नहीं है। हमने अंदाज लगाकर सामान भेजवाएं तो कुछ समय बाद दूसरी तरह के सामानों का चलन हो जाएगा। बाजार भी बदल जाएगा। लोगों ने हम पर भरोसा किया। सम्मेलन में आए लोगों ने हमारे खाते भी खुलवाए। अहमदाबाद की इलाबेन भट्ट ने हमें खादी कपड़े की दो साड़ियां भेजने का आश्वासन दिया। मेरे पास तो [illegible] पैसे थे। [illegible] ने मुझे पांच सौ रुपये भेजे। [illegible] ने अपने बीस दिन के वेतन के कपड़े भेज दिए। [illegible] ने [illegible] टन का सामान तैयार कर दिया। सारी व्यवस्था में कुछ सहायता मैंने और कुछ काम विभा ने किया था। हमारा परिश्रम पाकर इलाबेन बहुत खुश हुईं। उन्होंने कुछ लोगों को हमारे बारे में बताया। अब हमारा पावर स्टेशनों का काम आसान लगने लगा। लोग अपनी पसंद के कपड़े भेजते थे। किसी पेड़ों के हमारा उद्योग बंद होकर [illegible] स्वयंसेवी विभाग के मुख्य संयोजक के रूप में [illegible] और [illegible] ने [illegible] परिवार से ही कुछ कुछ सीखकर आगे भी इसमें [illegible] ने काम को व्यवस्थित किया। सबों के पारिश्रमिक का अच्छा तय हो गया। काम करने की [illegible] को काम के साथ [illegible] और [illegible] की [illegible] देखते देखते हमारे [illegible] की [illegible] गति से [illegible] लगे। हमारे विद्यालय में अब सभी लड़कियों [illegible] चलती थी। लोगों ने [illegible] की। [illegible] ने [illegible] से बाहर [illegible] नहीं रहे। मैंने एक बड़ी [illegible] में देखा था। [illegible] महात्मागांधी से आए सहयोगियों से कहा कि वे हमें [illegible] से बाहर [illegible] काम करने में मदद करें। [illegible] ने यहां सूती [illegible] देने बाद और सारे कपड़े आने लगे। अब लड़कियों को [illegible] देने की आवश्यकता नहीं थी।

मैंने पुरुष और [illegible] की मुलभूत सुविधाओं की अभाव के बहुत [illegible] में [illegible] किया, [illegible] कभी [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] पुस्तक का कवर देखें और उसे पुस्तक से औरतों को [illegible] चाहती थी लगभग मैं उस बैंचर [illegible]

हल में अकेला रहना चाहती थी सभी के प्रस्ताव अनदेखे गति का प्रोत्साहन हीरा नहीं हो किंतु वह शरीर के अंतरंग भागों में बने गांठ को अनुकूल करवाने के लिए देह उघाड़ने के लिए भी उतनी ही उत्सुक थी। पेरे साथ समस्या यह थी कि मैं देह की सीमा को लांघकर इतने नजदीक पाप से काम करने लायक आदमी नहीं था इसलिए ऐसा काम करने को मैं तैयार नहीं हो रहा था मुझे समझाने सुंदरता देखने की चीज है फुलवारी के सुंदर फूल देखकर कोई क्या करता है उसे सजाने संवारने का जाल है नहीं न ! बहुत दिन बाद जाकर मैं उसकी बात का अर्थ फिर से समझ पाया जब दिनकर की उर्वशी का पेरे दिलाती हुआ किय मैथिली अनुवाद पढ़ा दृष्टि द्वारा संग से आपके ओ न भोजन हाथ स्वामिन्

हमारी गृहस्थी में काम बढ़ जाने के कारण गुड़ी गुड़ी नहीं होती थी कि तत्काल जाकर बासमती की खोज खबर लूँ आरिफ़ेर समय निकालना पड़ा मैं आपको यह बताना चाहता था कि वह कैसा पागली थी कैसे ही काम में रचना करता था और धीरे धीरे स्वस्थ भी हो रहा था परंतु मेरे मन में कितने सारे चित्रकार थी तीक्ष्ण सवाल थे कि हम एक साथ संवाद पेशेवर और परंपरागत कलाकार सुनकर चल रहे थे मनाकपुर में रहनेवाले से [illegible] बासमती भाभी के साथ अकेली में एक बेटी को जन्म देने वह सामाजी भाभी बनने की सामाजिक प्रक्रिया से गुजरने जा रही थी मैंने बासमती के लिए तो तीक्ष्ण की कल्पना [illegible] तू बेटी पाएगी की, छन्नत तेरा भाल, कुरूप—कलिका पएगी की

काम करने वाला आदमी जब शिल्प—विधान ओजस्कार किसी [illegible] शहरों से ओंकार आने लगी थे जैसे—जैसे काम बढ़ रहा था 'सहाने और कमाइ' की पद्धति भी अपने आप चलती रहा रही थी 1982 बीसवें बीसवें छात्राओं की संख्या पचास से ऊपर हो गयी पड़ोस के [illegible] बहुत सारे छात्राओं भी [illegible] ही थी की [illegible] पहले [illegible] भी [illegible] सीखने की [illegible] अपने [illegible] की [illegible] था। हमारे पास कई तरह के काम पैदा हो गए थे — नयी छात्राओं को प्रारंभिक पाठ सिखाने का काम [illegible] के [illegible] अभ्यास वीर जो छात्रा हमारे घर सीख चुकी थी उसे जिससे स्वतंत्र छात्रा के साथ [illegible] में लगा देना जो लड़की छात्रा बहुत सीख गयी थी उसको [illegible] कई काम थे जैसे नयी छात्रा को काम में लगाने के लिए उत्साहित करना [illegible] की कीमत काम का हिसाब रखना, तैयार साड़ियों का भंडारण करना, फैसेंजिंग करना आदि इन कामों के अलावा जो सबसे महत्वपूर्ण काम था वह था चित्रकला का मूल पाठ तैयार करना इस काम में शिफा तो थी ही नयी पीढ़ी की छात्राओं में शशिकाला और अमीता प्रमुख थी डिजाइन और उत्पादन के साथ ही [illegible] सेमिनार

का काम अुठा हुआ था। वहीं से शुरू हुआ गोदना चित्र के साथ मिथिला चित्र के विकास का काम। इस विषय में सबसे ज्यादा प्रोत्साहन मुझे कर्पूरी ठाकुर ने दिया। मैंने उन्हें पुस्तक विमोचन में भी अपना सहयोगी बना लिया।

अक्टूबर १९७४ का एक यादगार दिन था जब हमारी मंडली के आगे एक रिक्शा रुका। एक गंजेड़ी मुझे बुलाने आया। मैं रिक्शेवाले को लेकर बाहर गया तो देखा कि वह गंजेड़ी अपनी बहन रामसखी और गोद में बच्ची को लेकर आयी थी। बच्ची पहले कलकत्ता में ही हुई थी। मगर कुछ दिन पहले वह नैहर आ गयी थी। आज वह वापस कलकत्ता जाने को थी। दरभंगा स्टेशन पर अपने एक आदमी को सामान के साथ भेजकर मुझे बच्ची दिखलाने आयी थी। मैंने बच्ची को गोद में लिया तो वासमती बोली— अभी तक इसका नाम नहीं रखायी है आप इसका नाम रख दीजिए एक अक्षर पर।" मैंने खिड़की ओर ताका। खिड़की के नेत्र और ओठ पर फैली रिमझिम ने मुझे सब कुछ बता दिया। उसने अपनी पीर नाम नहीं लिया लेकिन मेरे नाम के पहले अक्षर पर अपनी बच्ची का नाम रखवाना चाहती है। उसकी इच्छा जानकर मुझे उर्दू कविता की दो पंक्तियाँ याद आयीं। रिमझिम अँखियों की हँसी सब कुछ कह गयी। मैंने बच्ची को गोद में लिटाकर तो नहीं देखा मगर कनखियों से उसकी ओर देखा। उसके

[illegible] की अपनी पहचान की डिजाइन के बारे में सिखाते थे. हम तो बस इतने से ही खुश थे कि बाजार ने हमारी मांग को स्वीकार कर लिया था. अगले में कला पर आधारित हमारी पढ़ाई पढ़ाई के साथ कमाई की बुनियाद भी इस बात पर टिकी थी कि थोड़े थोड़े सीखने हुए भी कला न कुछ काम की चीज तो बनाए ले और वह ऐसा था कि बिक जाए. कुछ अलग समझों ने हमारे इस प्रयास की बहुत सीखी आलोचना की. आलोचना करने वालों में दो तरह के लोग थे. एक तो पापने का विशुद्ध कला संरक्षण कलाकारों लोग थे जिनका मानना था कि कला को इतनी सस्ती चीज के तौर पर पेश करना कला को तौहीन करना था. दूसरे वे लोग थे जो पारंपरिक पेशेवालों को पारंपरिक नजरिए से देखते थे. वह कहते थे कि इन पेशेवालों के लिए वही सामाजिक संरचना पर छोड़ कर रहे हैं जिसमें वह पीढ़ी दर पीढ़ी से शोषण करते थे. हम लोगों को पहचानने की तौर पर कोई सूत्र का प्रयास कर रहे थे. वैसे कलाकार मानवीयों तो मेरे पास भी थी. मैंने कितनी लगन से पढ़ाया. पे मालूम था कि कला का संरक्षण तो पहले पहल की सौंदर्यिक जरूरतों को पूरा करने के लिए हुआ था. पे तो बस इतना मालूम था कि मालवा से [illegible] लोगों के घर पैदा हो और वह उन्हें कला संरक्षण की जरूरत है. मुझे इस [illegible] बाहर से सीख ली सरकार होगा, जहां उसकी बहुत कमी है।

समाज सरकारी के [illegible] कलाकारों के [illegible] [illegible] [illegible]

बॉक्सर या हिमाद्रि का प्रकल्प करती थी मेहनत तथा कौशलपूर्ण अभ्यास की मजबूती मिलती थी। भाड़ती के काम में सिद्धहस्त होने के बाद ही कोई पाकर रानी बनाने के काम में लगती थी। यहीं तक पहुंचने में छात्रों को लगभग दो वर्ष का समय लगता था। लेकिन काम ज्यादा भी आता था। वर्षों का सिलसिला तोड़ना पड़ता था। ऐसे में निकली कक्षा की छात्रा को बड़ी मुश्किल के साथ लगकर काम पूरा किया जाता था। पारिश्रमिक का हिसाब यह था कि बरतन का कार्य प्रशिक्षित छात्रा को और चालीस पारिश्रमिक वेतनभोगी को मिलता था।

गरीबों के कल्याण में दो रुपए आठ आने पचास पैसे की कीमत नहीं थी। सुकन्या इसे समझती थी। इसी पीड़ा ने ही मुझे गरीबों और वंचितों के लिए वैकल्पिक शिक्षण–पद्धति की तलाश में लगाया। एक पद्धति की खोज में मैं लगभग पंद्रह वर्षों तक भटकता रहा और संघर्षरत रहा। अब मैं समझ गया कि ऐसे परिवारों की लड़कियों बिना फीस लिए न केवल शिक्षा–दक्ष नहीं की बल्कि कमा भी रही थीं। हमारे विद्यालय का द्वार सभी जाति की लड़कियों के लिए खुला था। शुरू में तो हमारे संघ के कार्यकर्ता ने कोई विरोध नहीं किया। मैंने उन्हें समझाया था कि मेरी पत्नी लड़कियों को घरेलू हिंसा से मुक्ति दिलाने के लिए एक छोटे कमरे से दोनों और लड़कियों को बेचती है और लड़कियां दिनभर श्रम की चक्की में लगती हैं तो वे सामाजिक रूप से परिवर्तन के लिए हमारे हर साथ के बाद उनकी परिस्थिति बेहतरी की और संघर्ष को तेज करने में सहयोग करती थीं। [illegible] तक पहुंचने के लिए [illegible] पड़ता था। [illegible] पहुंचने के बाद [illegible] लड़कियों के साथ [illegible]

औरतों को काम से लगाने का विचार सिर्फ मेरे गाँव या अपनी जाति की लड़कियों ने किया दूसरे किसी गाँव में कहीं हमारा विरोध ही हुआ साल 1984 दिल्ली वाली दूसरी प्रदर्शनी में मेरी बहन सरोज और शशिबाला ने भाग लिया। अब प्रदर्शनियों का सिलसिला शुरू हो गया था, उसी साल हम बम्बई भी गए। बम्बई के लोगों ने तो कमाल कर दिया हमारे सारे सामान तो बिक ही गए ढेर सारे काम के ऑर्डर भी मिले यहीं से हमारा काम बुलंदियों की ओर बढ़ने लगा हम देश के लगभग सभी शहरों में प्रदर्शनी लगाते थे। दिल्ली बम्बई कलकत्ता मद्रास बंगलौर हैदराबाद पुणे गोवा कोचीन त्रिवेंद्रम हमारे प्रमुख बाजार थे इन प्रदर्शनियों में कभी-कभी दो तीन लाख रुपये जाते थे ज्यादा लड़कियों को घूमने में खर्चे तो बहुत हो जाता था लेकिन हम कोई व्यावसायिक संगठन नहीं थे जो खर्चे बढ़ने को बुरा मानते इस खर्चे का बड़ा फायदा था लड़कियाँ दुनिया देखती थीं और सीखती थीं महानगर के ग्राहकों के संपर्क में आने से उनका भविष्य तैयार होता था आगे चलकर उन्हें खुद ही ये काम करना है प्रदर्शनियों में एक तरफ हमारे खर्चीला होता था दूसरी ओर हम दुकानदार नहीं थे मोटीवेशन आर्ट के विशेषज्ञ थे, बताते थे इससे हमारे रहन सहन में और भी नयी नयी चीजें जुड़ने लगी थीं जैसे पैसे हमारे बाजार बढ़ रहे थे उसी परिप्रेक्ष्य में हम दुकानों की सजावट भी बदलने लगे थे मोटीवेशन में पहली बार प्रयोग हो रही चट्टानें तूफान बन गयी थीं

(फोटो 1985)

महाभारत के कृष्ण ने द्रौपदी की लाज बचायी थी अच्छे लोगों ने हमारी लाज बचा दी पुराने कपड़े जमा करने और बाँटने का सिलसिला साल के कुछ वर्षों तक चलता रहा

लोगों से पुराने कपड़े माँगकर जरूरतमंदों में बाँटने का आइडिया सरस्वती के कार्यक्रम पर बहुत अच्छा हुआ हमारे पास तरह तरह के कपड़े आने लगे थे इन कपड़ों को बाँटकर हम समाज के सभी हकदार और जरूरतमंद लोगों के लिए करने लगे। बहुत लोगों को इसकी जरूरत थी, इसलिए हमारा सार्वजनिक सम्पर्क बढ़ने लगा इस काम से उत्साहित स्वयंसेवकों ने विचार किया कि सरस्वती इस तरह की सहायता के काम भी करे बिहार में लगभग हर साल कोई न कोई प्राकृतिक विपदा आती ही रहती थी कभी बाढ़ तो कभी सूखा लोग त्रस्त थे। ऐसी विपदा के समय गरीबों की हालत तो और भी बुरी हो जाती थी, हमने तय किया कि स्वास्थ्य और सहायता के लिए साधन जुटाने का प्रयास करेंगे

1987 के अगस्त महीने में भयानक बाढ़ आयी। दक्षिण का बहुत बड़ा भू भाग बाढ़ से प्रभावित हुआ। कुशेश्वर स्थान प्रखंड में तो हर साल बाढ़ आती थी लेकिन उस साल बिहार सरकार और खासकर कुशेश्वर स्थान में बोहेसब लगाई हुई ऑक्सफैम ने हमें बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए बड़ी सहायता दी थी विकासभाई ने कलकत्ते की किसी कंपनी में बैठकर मोटे और टिकाऊ बड़े साइज के प्लास्टिक शीट में रस्सी लगाने के लिए अंगूठी लगवायी थी और उसके किनारों की मजबूती से सिलाई करवायी थी एक एक प्लास्टिक शीट की लम्बाई चौड़ाई एक बड़े घर के बराबर थी ऑक्सफैम ने हमें ढेर सारी दवाइयाँ और पौष्टिक आहार भी दिया था इन साधनों से हमने कुशेश्वर स्थान के बीसों हजार लोगों तक दूसरी लोगों की सहायता की। यहाँ हमारा पाला कहावतमय भाषिक बिहार से था कुशेश्वर स्थान इलाके बहुत कम से यहाँ के मुखर दुखना और छल लोगों को बीच में ही काम करते रहने के लिए धैर्य के साथ हम लोग तैयार करने में जुटे हुए थे एक दिन मैं बहुत ही लोगों की सेवा कर रही एक महिला को दवा दे रहा था उसे खाली केसी बात पूछने पर उसने बताया कि बाढ़ ने उसका सब कुछ छीन लिया है उसके पास पहनने के लिए कपड़े भी नहीं थे

नहीं रह सकती है। फिर वह इतनी बिगड़ चुकी इसका अनुमान मुझे नहीं था। मैं रासबिहारी से इतना कुछ जानकर बहुत दुखी हो गया। बासमती के स्वभाव को मैं जानता था। वह एक इच्छाशक्ति की धनी और दयालु स्त्री थी। उसने लोकहित के लिए यह काम छोड़ा जो किसी स्त्री के लिए प्राय असम्भव है। उस समय तक हम जितना जो कुछ कर सके थे उसकी बुनियाद में उसका विचार महत्वपूर्ण था। देह त्याग का त्यागकर संवेदना का जो अधिकार उसने मुझे दिया और समाज-सेवा के लिए जिस दिशा में उसने मुझे खड़ा उसीका फलस्वरूप हम इतनी सफलता के साथ काम कर पाए थे। अब जब हमारे काम का इतना फैलाव हो गया था तब सेवा के उस अभियान में वह इसलिए नहीं शामिल हो सकती थी क्योंकि अब वह किसी की पत्नी हो गयी थी।

बासमती की हालत पर सभी दृष्टिकोण से विचार करने के बाद मैंने रासबिहारी को अपना निर्णय सुनाया। मैंने उसे कहा कि बासमती अपनी बेटी की देखभाल और उसकी पढ़ाई का अच्छा से अच्छा प्रबंध करते हुए उसके सयानी होने की प्रतीक्षा करे। कालिंदी जब कॉलेज जाने लगेगी तब मैं या तो कलकत्ता में ही एक संस्था का गठन कर दूँगा अथवा दूसरी कोई बात सोची जाएगी। अगले दिन मैंने रासबिहारी को विदा किया।

आज जीवन के इस पड़ाव पर जब मैं सत्तरवें वर्ष में प्रवेश करने जा रहा हूँ, पीछे मुड़ कर एक अपने पद चिह्नों को और गौर करता हूँ तो यात्रा के पहले सोपान पर आज भी मानो पाँव पर फूली कमलिनी पहने नगे पाँव खड़ा मेरे भीतर का एक बच्चा मासूमियत से मुस्करा रहा है जिसे अभी दुनियादारी ने कान पकड़कर निकालना शुरू नहीं किया था। मेरे भीतर का यह बच्चा अभी सुरक्षित है। मैंने उसके ये पहले पहल स्कूल झुका दिया था। आगे लंबी जद्दोजहद में यह मेरे काम आने वाला है। मैं अपने बारे में नहीं हूँ, मैं अब अनुभव कर रहा हूँ कि मेरे काम की दीक्षा कहाँ से हुई। [illegible] मैं [illegible] मैं [illegible]

कम से कम मैंने तो इसी विचार से 1966 के बिहार आंदोलन और बाद में 1974-75 के जय प्रकाश आंदोलन में भाग लिया था। अब यही बात सरकार भी कहती है और बच्चों को मध्याह्न भोजन के साथ कपड़े भी उपलब्ध करा रही है।

बिहार में 1966 आंदोलन का समय था। सरकार और छात्रों में संघर्ष छिड़ गया था। उस समय बिहार के पुराने नेता कृष्ण बल्लभ सहाय थे। झगड़ा तो यूनिवर्सिटी के रवैए से शुरू हुआ था लेकिन गैरकांग्रेसी राजनीतिज्ञों ने उस झगड़े को कृष्ण बल्लभ सहाय की सरकार महंगाई और प्रशासनिक निरंकुशता का रूप दे दिया। महामाया प्रसाद ने छात्रों को सिनेमा के टुकड़े काटकर लगा लिया। सोवियत संयुक्त देशों के दौरे की सरकारें बातों और सोचती रहीं। मैंने तो यह सोचकर इस आंदोलन में भाग लिया था कि नयी सरकार के पास बच्चों को शाल ओढ़ाने और प्रतिवर्ष शिक्षा का बजट पास करवाने का प्रस्ताव रखवाऊंगा। ऐसा कुछ होना नहीं चाहिए था। 1972-73 से मैं फिर बच्चों की बेंच वाला गरीब लोगों, भूखे नंगे बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था पर पुरानी लड़ाई लड़ रहा था। मैंने 1965 में ही तालिका बनाना शुरू किया था। मैं साधारण श्रेणियों को मिलाकर आर्थिक रूप से अलग बनाता था। 1974 में मैं खुले पीने पानी के बर्तन पार्श्वक स्कूलों के बच्चों के बीच लिए जाकर गया। उस समय तक मैं समझने लगा था कि शिक्षा

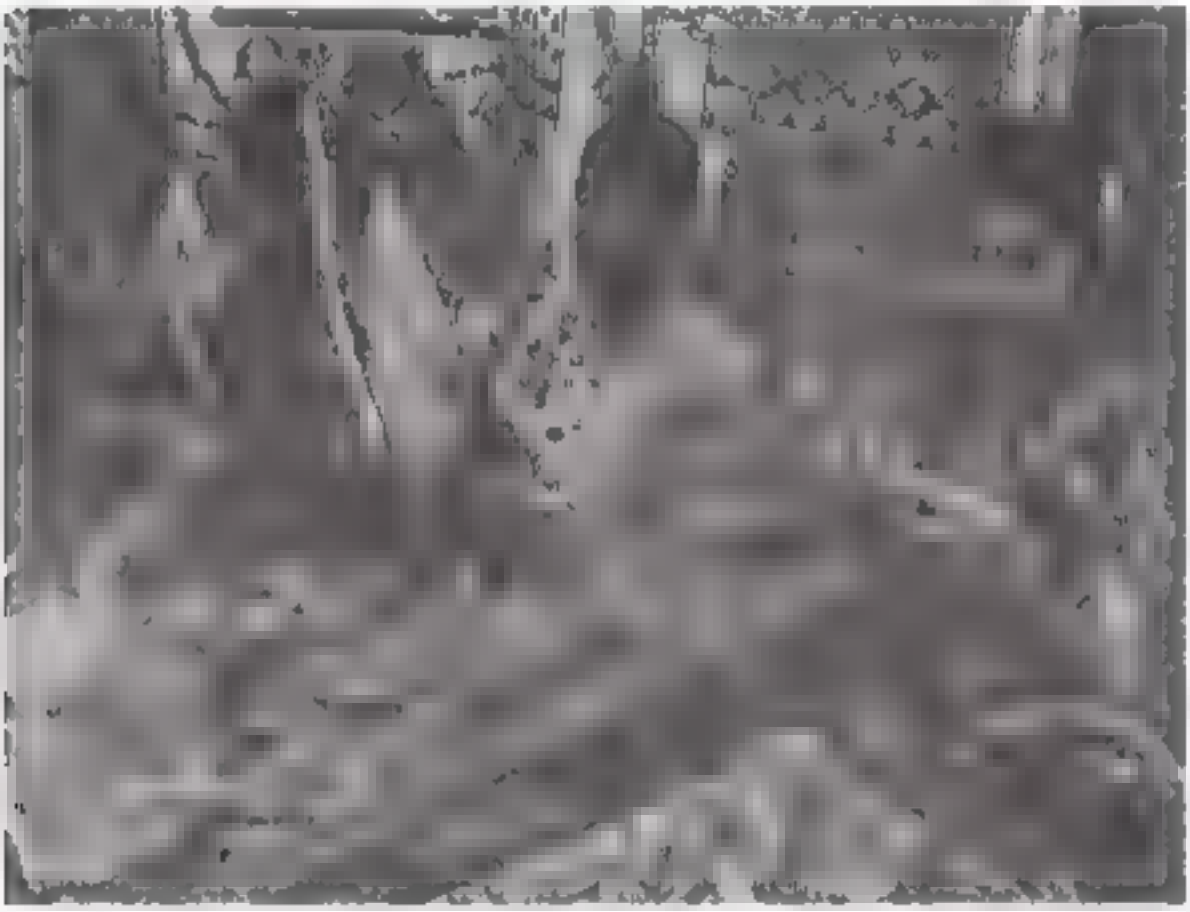

पहले भी उसने काम में लगा था और बाद में भी लगा रहा

की आशंकाओं से घिरा एकदम हकबका गया आखिर रास्तोगी ने अपने आपको सम्हालते हुए बताया कि बासमती जून में ही गुजर गयी वह पिछले कुछ दिनों से बीमार चल रही थी उसको पति ने काफी इलाज कराया मगर डाक्टर उसे बचा नहीं सके

मेरे लिए यह सन्नाटा वैसा ही था जैसे किसी के लिए अपनी माँ बहन के महीने का समाचार होता है लेकिन मेरे परिवार से इस समाचार का कोई संबंध नहीं था बासमती का संबंध मेरे साथ था मेरे परिवार के साथ नहीं ऐसे भावुक क्षण में भी अपनी पत्नी और बच्चों के बीच फैली तरह की गलतफहमी नहीं पैदा करना चाहता था मैं झटपट तैयार हुआ और इन दोनों के साथ घर से निकल गया निकलते समय मैंने पिता होकर भी सिर्फ इतना बताया कि दो तीन दिन बाद लौटूँगा

[illegible] मगर फिर रास्तोगी [illegible] बासमती [illegible] के साथ दो दिन बिताने के बाद घर [illegible] मैं [illegible] मैंने [illegible] माँ [illegible] बासमती [illegible] रास्तोगी [illegible] बासमती [illegible] हमारे प्रभु, अवगुन चित्त न धरो

उत्तर बासमती

भारती विकास मंच, बरहेता में महिलाओं ने मिथिला–चित्रकला और गोदना चित्रकला को अपनी आजीविका का साधन बनाया। जीविका की यह विधि पूरे बिहार में बसी दूसरे राज्यों में रहने वाली बिहारी महिलाओं ने उन राज्यों तक इस कला–संयोग को फैलाया खास कर वस्त्र चित्रांकन के काम से अपनी आमदनी बढ़ायी बासमती यही तो चाहती थी इस फोटो में स्त्रियाँ चित्र से पहनावे के कपड़े तैयार कर रही हैं अब कोई स्त्री भूखी नहीं रहती है। इन्हें जीने का एक रास्ता मिल गया है। यह सबों के लिए एक अच्छा उदाहरण है।

रचिती–मिलती

भारत में प्राचीन काल से समाज सेवा की अविच्छिन्न परंपरा रही है विशुद्ध मानवीय आदर्श के रूप में महात्मा गांधी राव विनोबा भावे जय प्रकाश नारायण बाबा आमटे अन्ना हजारे जैसे महान समाज सेवकों से भी बहुत पहले और बाद तक के अनेक ज्ञात अज्ञात लोगों ने अपने मन की पुकार पर समाज के दुखी जनों की अपने स्तर से सेवा की है जहां कहीं भी उन कल्याण के बड़े काम छोड़ गए हैं उनका पीछे अनेक कार्यकर्ताओं के व्यक्ति सूझबूझ और अपनी अनूठी कल्पना की कलमी छेंपें होती है ये कहानियां अगली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा की स्रोत बनती है बहुत ऐसी कहानियां अभिलेखित होने के कारण और स्मरणों की उपेक्षा के कारण धीरे धीरे छीजकर लोक मानस से लुप्त हो जाती है इसके साथ ही वह विधि भी धूल धूसरित हो जाती है जिससे ऐसे महान कार्य सम्पन्न हुआ करते हैं भविष्य में फिर जब कभी किसी को वैसे कार्य करने की प्रेरणा होती है तो फिर वहीं से चलना होता है जहां से पूर्व के समर्थ किंतु विस्मृत कार्यकर्ता गुजर चुके होते हैं इससे नये कार्यकर्ताओं के समय और श्रम का अपव्यय होता है

मैंने सन विनोबा से 1963 में उनके दर्शन "जीवन और शिक्षण" में दीक्षा ग्रहण करने के बाद 1964 में साधारण शैक्षणिक अध्यापकी तैयारी से सेवा प्रारंभ की और 1965 में कार्य प्रारंभ कर दिया। जैसे–जैसे समय बढ़ा वैसे अनुभव भी बढ़ते गए। ऐसे हुआ किए गए प्रयोगों में 1980–81 के प्रारंभ शिल्प–कला से पढ़ाई और कमाई की पद्धति सामाजिक संगठन और बिहार के बड़े भूकंप की पहिलाओं के समाधान और उनके राजनीतिकरण के मामले में एक विदेश तक प्रशिक्षित हुई

मेरे शैक्षणिक प्रेरकत्व से जोड़कर जिस कार्य शैली को प्रस्तुत किया वह वस्तुतः पीढ़ियों अनुभवों की विरासत होती है इस पद्धति के बीज सूत्र गांधी दर्शन की बुनियादी तालीम विनोबा शिक्षण के स्वाध्याय सिद्धांत के साथ जयप्रकाश नारायण के सर्वोदय के आदर्श में खोजे जा सकते हैं। जून 1980 में जयपुरी विद्यापीठ संघ की स्थापना हुई तो उसने संगठन शैक्षणिक संस्थाओं और सरकारी योजनाओं के पोषण–संरक्षण को अपने कार्यक्रम में प्रमुखता दी। पर जयपुरी विद्यापीठ के संगठन और संस्थाओं के साथ जुड़ने के बाद ही मुझे यह अनुभव हुआ कि ये संस्थाएं और योजनाएं अपने उद्देश्यों में कितनी सफल हो रही हैं। इसके लिए मैंने अपने स्तर पर कुछ प्रयोग किए। इन प्रयोगों के परिणाम मिलने लगे तो मुझे लगा कि इन्हें अन्य कार्यकर्ताओं के साथ बांटना चाहिए। इसी उद्देश्य से मैंने अपने अनुभवों को पुस्तक रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

किसी शिक्षण पद्धति के लिए विशेष स्तर की सफल प्रस्तुतकर्ता की उपलब्धता अनिवार्य होती है लोक कलाओं विशेष रूप से लोकगीतों के संदर्भ में यह तथ्य अधिक महत्वपूर्ण होता है। क्योंकि लोक गीत और उनकी संहिताओं के विस्मृत और अपरिचित उपयोगों से परिचित होने की आवश्यक पुस्तक रूप में इनका संकलन संपादन और विश्लेषण करना अपने आप में बहुत कठिन काम होता है। विनोबा के शैक्षणिक और गांधीजन शैक्षणिकों से हमने सीखा कि प्रार्थनाएं और भजन आदि का संग्रह तो हम बहुत कर लिया था लेकिन उनकी बहुत थोड़ी मात्रा तक हमारे द्वारा कराई गई पुस्तक रूप में पहली बार इन विषयों में पुस्तकों की उपलब्धता विद्यार्थी की दृष्टि से हमारे लिए अच्छी उपलब्धि है यह काम यद्यपि तो पुस्तक रूप में शैक्षणिकी लोक संगीत कार्यक्रमों को प्रशिक्षण देने वालों के लिए भी और क्रमशः

ज्ञान की विविध शाखाओं से जुड़ते हुए आगे बढ़ती हैं। ऐसी पुस्तकों की रचना में सबसे बड़ी शर्त यह होती है कि विद्यार्थी विधिक चित्रों के मूल स्वरूप को सीखते हुए औद्योगिक प्रारूपण के काम में दक्ष हो पायें। यह एक लंबी प्रक्रिया होती है जैसे चिकित्सा-विज्ञान में औषधि-निर्माण की प्रक्रिया होती है खोज, प्रयोग प्रतिक्रिया परिणाम और अंत में निर्माण-विधि।

हर एक विभाग के लिए प्रतिभा लक्षण के आधार पर छात्राओं के बीच से सहायक चुनते थे पुस्तक-निर्माण विभाग के लिए मैंने शशिबाला का चुनाव किया। पाठ क्रमिक रूप से तैयार होते थे किंतु प्रयोगों के आधार पर उसका परिवर्तन-परिवर्द्धन भी जारी रहता था सभी काम हस्तलेखित ही होता था स्क्रीन जाने वाली धोबाए पाठ की तीन प्रतिलिपियें तैयार करती थीं जो लिपिकार या असमर्थ छात्राओं को दी जाती थी। बहुत दिनों तक हस्तलेखित पुस्तकें ही चलती रहीं असल में पुस्तकें छपाने के लिए हमारे पास रुपये नहीं बचते थे। सन 1999 से पुस्तक प्रेस में छपाने का काम शुरू हुआ कई पुस्तकें ऑफसेट से भी हस्तलेखित स्वरूप में ही छापी गयीं। पुस्तक निर्माण का काम अभी भी चल ही रहा है मैं चाहता हूँ जब तक दम्भ और औरों के काम कर सकती हैं यह काम ले कर हूँ अभी तक जितनी शैक्षणिक पुस्तकों प्रकाशन में आयी हैं उन सभी में चित्रांकन का दायित्व शशिबाला ने पूरा किया है. यह इन पुस्तकों की सूची है —

भाग-भात शिक्षा विभाग बिहार सरकार द्वारा 1995 में प्रकाशित लोककला से शिक्षा की सामग्री

2 मिथिला चित्र-शिक्षा भाग 1, 2 मिथिला चित्रकला में प्रशिक्षण की प्राथमिक पुस्तक

3 मिथिला चित्र कोर, भाग – 3 प्रतीकों से पारिभाषित औद्योगिक प्रारूपण की पुस्तक

4 मिथिला अरिपन, भाग – 4 अरिपनों का तात्त्विक विश्लेषण,

5 गोदना-चित्रशैली, भाग – 5 गोदना चित्रांकन की पुस्तक

6 मेघदूत कालिदास के मेघदूत का पेंसिल से रेखांकन सहित पुनर्पाठ (2008.

7 मैथिली गीतगोविंद जयदेव की रचना गीतगोविंद का मैथिली भावानुवाद (2010.

8 मिथिला चित्रकला बिहार सरकार द्वारा 2013 में प्रकाशित

9 मिथिला लोकचित्र सेतुबन्ध बुक ट्रस्ट भारत सरकार द्वारा 2015 में प्रकाशित.

10 मिथिला चित्रकला में पौराणिक भाग 6 शीघ्र ही प्रकाशित

11 मिथिला लोकचित्र का समाजशास्त्र, भाग 7 रचनाधीन

12 बासमती एक समाजकर्मी की आत्मकथा (जून, 2016)

रचनात्मक क्षेत्र में विशिष्ट काम करने वालों को प्रोत्साहित करने या उनके अनुभवों से व्यापक क्षेत्र में लोगों को लाभान्वित करने के मकसद से बिहार सरकार सन् 1954 से किसी न किसी रूप में पुरस्कार

की यही रही है. इसका सबसे बड़ा कारण भ्रष्टाचार और सामाजिक जवाबदेही के प्रति सरकारों की तदर्थवादी सोच है. मेरी जानकारी में बिहार सरकार ने पहली बार 2006 में दृष्टिबाधित बच्चों के बीच शैक्षणिक कार्य का सर्वेक्षण (इन्वेस्टिगेशन) करने के लिए प्रथम दृष्टिबाधित शिक्षक पुरस्कार की घोषणा की. इस पुरस्कार के लिए पहले साल से पांच साल तक की सीमा निर्धारित की गयी. मैं तो निमंत्रण में पुरस्कार की राशि देखकर ही समझ गया था कि इसमें जमकर भ्रष्टाचार होगा. लेकिन मेरे कई शुभचिंतकों के दबाव पर मैंने भी आवेदन के साथ ही संयुक्त आवेदन दिया. इस पुरस्कार की घोषणा के उपरांत बिहार सरकार के तीन मंत्रालयों के अधीन स्वायत्त संस्था बिहार ब्लाइंडनेस प्रमोशन सोसाइटी (बीबीपीएस) का गठन हुआ था. कुछ महीने के बाद मेरे पास से एक दिन अचानक बड़ी अधिकारी की ओर से बुलावा गया कि हमारे द्वारा विलंबित पुरस्कार आवेदन को पैकट ऑफिस से मांगवा तो गया है. इसलिए संशोधन के साथ फिर से आवेदन करें. मैं दुबारा आवेदन नहीं देना चाहता था. फिर से चक्कर लगाने की मेरी हिम्मत नहीं थी. क्योंकि उनकी दूसरी शर्तें पहले पुरस्कार फार्मेलिटीज से ज्यादा कठिन थीं. लेकिन संस्था में पेशेवर ढंग से काम करने वाले कुछ मित्रों के आग्रह पर मैंने अपना आवेदन संशोधन के साथ फिर से भेज दिया. लेकिन मन में यह संशय बना रहा कि इसे भेजने का कोई फायदा होगा भी या नहीं. मैं बहुतों की दास्तान जानता था. फिर भी दूसरों से कुछ विलक्षण करने की चाहत ने मुझे दुबारा आवेदन भेजने दिया. इंटरव्यू फॉर्म की तुरंत आपूर्ति से एक अच्छी बात हुई. मंत्रालयों की तीन-चार दिनों की एक मूल्यांकन समिति के विभिन्न सदस्यों ने मेरे प्रमाणपत्रों के प्रमाणन पर तीव्र सक्रियता दिखायी. इंटरव्यू की तीव्र गति से विभिन्न विभाग के अधिकारियों ने 2007 में मेरे मूल्यांकन के प्रतिवेदन को अंतिम रूप देकर सरकार को दिया. 2008 के जनवरी माह में मुझे बताया गया कि मेरा चयन पुरस्कार के लिए हो गया है. लेकिन अभी पुरस्कार की घोषणा नहीं की जायेगी. मैं इसलिए अपनी रिपोर्ट लेने पहुंचा. इस बार भी मैं यह सोचकर गया था कि हमारा काम अंतिम विभाग की फाइलों में दबकर रह जायेगा. लेकिन मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब मुझे बताया गया कि मेरा चयन पुरस्कार के लिए हो गया है. मैंने उनसे पूछा कि मेरे काम के बारे में उन्होंने कैसे जाना? तो उन्होंने बताया कि मेरे काम के बारे में विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों ने जानकारी दी. रिपोर्ट को पढ़ा और रिपोर्ट को प्रति प्राप्त किया.

मेरे पुरस्कार पाने की खबर के बाद मेरे काम पर मीडिया की नजर पड़ी. कई अखबारों ने मेरे काम के बारे में खबरें छापीं. Telling the World नामक एक अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका ने भी मेरे काम पर एक आलेख प्रकाशित किया. मेरी पत्नी ने मेरे काम को दृष्टिबाधित बच्चों के लिए Earning While Learning Mithila Art for Education & Empowerment नाम से प्रस्तुत किया था. मुझे याद है कि मेरे पहले पुरस्कार के बाद मेरे कई मित्रों ने मुझे सलाह दी थी कि अब मुझे अपने काम को बढ़ाने के लिए एक संस्था बनानी चाहिए. मैंने भी इसके बारे में सोचा था. लेकिन मेरे कुछ शुभचिंतकों ने मुझे यह समझाया कि संस्था बनाने के बाद मैं अपने काम को कम समय दे पाऊंगा. संस्था के कामकाज में ही मेरा अधिकांश समय चला जायेगा. इसलिए मैंने संस्था बनाने का विचार त्याग दिया. लेकिन मेरे कई मित्रों ने संस्था बनाने के लिए मुझे लगातार प्रेरित किया. मेरे कई मित्रों ने तो संस्था के नाम भी सुझाये थे. मैंने भी कई नाम सोचे थे. लेकिन संस्था बनाने के बाद उसे चलाने के लिए जिस तरह की व्यावसायिक कुशलता की जरूरत होती है, वह मुझमें नहीं है. इसलिए मैंने संस्था बनाने का विचार त्याग दिया. लेकिन मेरे कई मित्रों ने

वर्ष 20 3 में बिहार ने अपनी स्थापना के सौ वर्ष पूरे किया। इस अवसर पर बिहार सरकार की कला संस्कृति विभाग ने ऐतिहासिक महत्व की एक ग्रंथ प्रकाशित किया **बिहार के 00 एवं** इस पुस्तक के संपादन में लगभग बीस विद्वान पत्रकार लेखक और विभिन्न संस्थाओं के विद्वान लगे थे यह पुस्तक में पिछले एक सौ वर्षों में समाज साहित्य कला संस्कृति खेल आदि क्षेत्रों में विशिष्ट करने वाले व्यक्तियों का परिचय देने का एक विनम्र प्रयास किया गया है इसमें कुछ ऐसे लोगों को शामिल किया गया जिन्हें मैं व्यक्तिगत रूप से जानता हूँ कुछ ऐसे लोग जिनके बारे में मुझे जानकारी थी और कुछ ऐसे लोग जिनके बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं थी। ऐसे लोगों को शामिल करने के लिए मुझे बहुत मेहनत करनी पड़ी। [पेज 34 35] ऐसे लोग जो अपनी उपलब्धियों के बारे में एक पेज में फोटो और एक पृष्ठ में उनकी जीवनी दी गयी है मुझे लगता है ऐसी जीवनियों के बीच में सरकार ने बिहार के 00 राज्य पुरस्कार से पुरस्कृत कर उनका परिचय दिया है। इस संदर्भ में इस बात का उल्लेख करना जरूरी नहीं लगता है मेरे मन में एक अगाध लगाव है बेतिया स्टेट लाइब्रेरी बेतिया और कुसुम कला के पुत्र कला कुमार कलाम पोर्ट्रेट पेंटिंग की पढ़ाई की एक-एक दर्जा में पढ़ते हैं तथा इनके लिए अलग चित्रकला की व्यवस्था करना चाहते हैं बिहार सरकार ने इनकी कुछ इच्छाओं का आंशिक समाधान करते हुए बेतिया में ही चित्रकला विद्यालय की स्थापना की घोषणा की है यह हम सभी के लिए खुशी का विषय है। इस संदर्भ में और कहना है लेकिन एक सरकारी कर्मचारी से ज्यादा कुछ भी नहीं मैं अपने को इस संदर्भ में बोलने की बेवकूफी में डालना भी था किन्तु यह भी कुछ कहना चाहता था। कहना यही था कि सरकार की सकारात्मक सोच चाहे

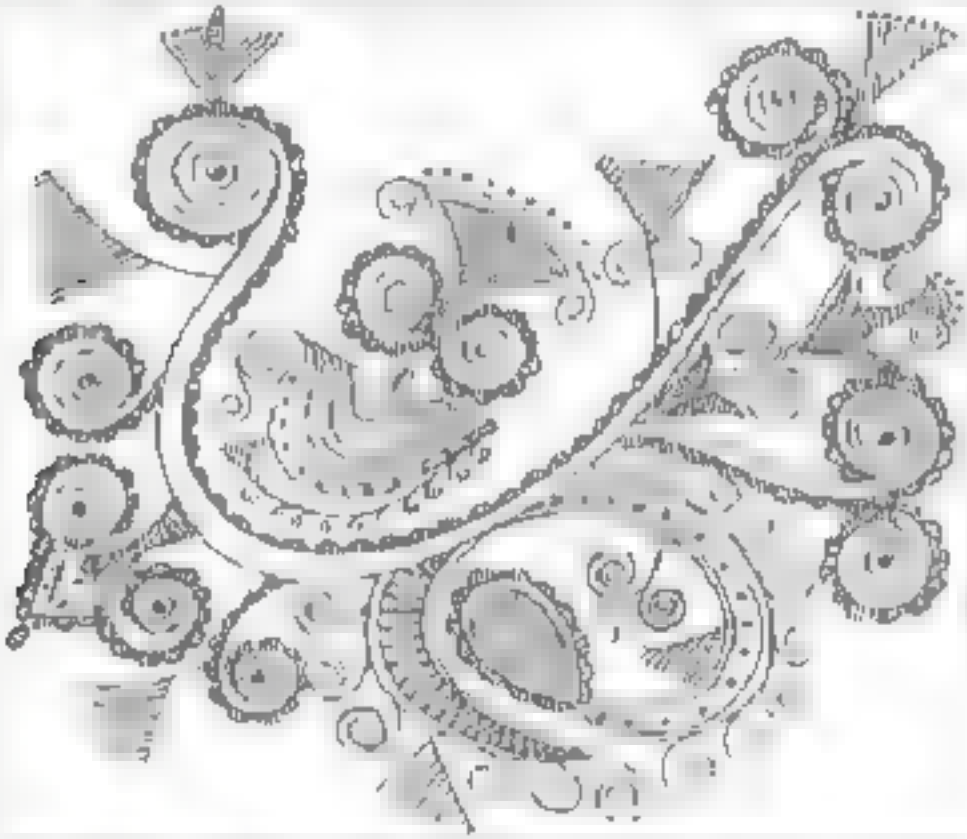

थे या फिर कुछ नहीं चाहते थे। हमने जिस मॉडल का सफलता पूर्वक संचालन किया है उनकी जानकारी उन्हें नहीं थी, या एक मामूली आदमी के काम को वह महत्व नहीं देना चाहते थे। नतीजा सामने है। सरकार कहती है कि संस्थान बन गया, पता नहीं, ऐसा कुछ बना या नहीं। लेकिन मैंने अपने प्रण के अनुसार, 15 अगस्त, 2017 को प्रधानमंत्री के नाम पत्र द्वारा **"भारतीय शिल्पकला विश्वविद्यालय"** स्थापित करने का प्रस्ताव भारत सरकार के समक्ष रख दिया है । हस्तशिल्प बोर्ड ने उस प्रस्ताव की सराहना की है ।

ईश्वर जिस पर महान कृपा करते हैं उसीके मन में संसार के कल्याण के लिए कुछ करने की भावना जगती है। संतों ने कहा है कि 'जा पर कृपा राम की होई, ता पर कृपा करै सब कोई।' बहुत लोगों के सहयोग से ही मेरे जैसा कोई साधारण व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है और जीवन-काल में ही उस यश का भागी बनता है। दिनांक 22 दिसंबर, 2014 के दिन, अंतर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन के तत्वावधान में, जनकपुर (नेपाल) में एक भव्य आयोजन हुआ। उस अवसर पर नेपाल के प्रथम राष्ट्रपति महामहिम श्री राम वरण यादवजी ने मुझे **"मिथिला-रत्न"** की उपाधि देकर सम्मानित किया। मैं तैंतालिस वर्षों के बाद उस भूमि पर सम्मानित हुआ जहाँ बावरी ने मुझे इसके लायक बनाया था। मेरी आँखें क्षितिज पर बावरी को खोज रही थीं। वह पितरलोक में कहीं अपनी नानी के साथ गा रही होगी। यहाँ का काम पूरा करने के बाद जब हम फिर से मिलेंगे तो उसके साथ अगले जनम की योजना बनायेंगे। तब मेरे भाल पर भी गोदना बना देगी बावरी।

लेखक–परिचय

कश्यपजी का परिचय अपरिचाहेर है। 15 सितंबर, 1949 को जन्मे साहित्यकार इन्द्र नारायण लाल और माता कुसुमकला देवी के इस सपूत ने दरभंगा के बहादुरपुर प्रखण्ड स्थित गाव बसहोरा को ही नहीं, अपने कर्मक्षेत्र से पूरे बिहार की स्थियों को जीने की एक प्रगतिशलतक पद्धति प्रदान की और सम्पूर्ण भारतीय शिक्षणजगत को शिक्षण प्रयोगों का एक उदाहरण प्रदान किया। सन् 1965 में, सोलह वर्ष की आयु में समाजसेवा कार्य से अपनी कर्मयात्रा शुरू करनेवाले कश्यपजी ने वह सभी लोकोपकारी कार्य किया जो कोई महान व्यक्ति देश–दुनिया के लिए करता है, मगर आज भी वह अपने आप को एक आदना व्यक्ति से अधिक कुछ नहीं मानते। वह जानते हैं कि कोई व्यक्ति परोपकार करके किसी पर अहसान नहीं करता है बल्कि यह उसका संस्कार है और खुद उसे खुशी देनेवाली कुछ आदतें होती हैं जो उसे ऐसा करने हेतु प्रेरित करती हैं। वह कहते हैं कि उनकी शिक्षा अनौपचारिक है। पता नहीं, इन्होंने कैसे इतनी पढ़ाई की कि देश–विदेश के विश्वविद्यालयों को अपने ज्ञान से उपकृत किया और एक नयी शिक्षा–पद्धति को जन्म दिया। बालसखी पुस्तक इनकी आत्मकथा का एक अंश भर है। मैंने कश्यपजी के साथ कार्य किया और लगभग 10 वर्षों के उस कार्यकाल में जितना जो कुछ देखा, वह अनन्त है। इनका जीवन–चरित उन लोगों को एक गहरे प्रज्ञान करता है जो अपने आप को साधनहीन मानते हुए भी समाज के लिए कुछ कर गुजरना चाहते हैं। महाजन येन गतः स पन्थाः।

प्रो. उमेश कुमार उत्पल

प्रकाशक:
भारती विकास मंच, बरहेता
लहेरिया सराय, दरभंगा-846 001

₹ 100.00